श्री विजय पूर्णानन्दसूरि ग्रन्थमाला पुष्प न २

श्रीमन्मानदेव विजयानन्द-वल्लभ ललितपूर्णानन्दसूरीश्वर
पादपद्मेभ्यो नम

श्री ललित-स्तोत्रादि संदोह

सपादक
परमपूज्यपाद आचार्य प्रभु
श्री १००८ श्रीमद् विजय पूर्णानन्द सूरीश्वरजी महाराज
के शिष्यरत्न
पन्यास श्री ह्रींकारविजयजी गणी

प्रकाशक :
जैनतत्त्वज्ञ पडित कुवरजी मूलचद्र दोशी,
(जेसर सौराष्ट्र) मद्रास

प्राप्तिस्थान :

अलंकार सायकल स्टोर्स,

१३, केशव अय्यर स्ट्रीट, मद्रास-३.

13, Kesava Iyer Street, Madras-3

और

दी जैन मीशन सोसायटी (रजि०)

४०८, मिन्ट स्ट्रीट, मद्रास-१.

श्री वीर संवत् २४८९ विक्रम संवत् २०१९

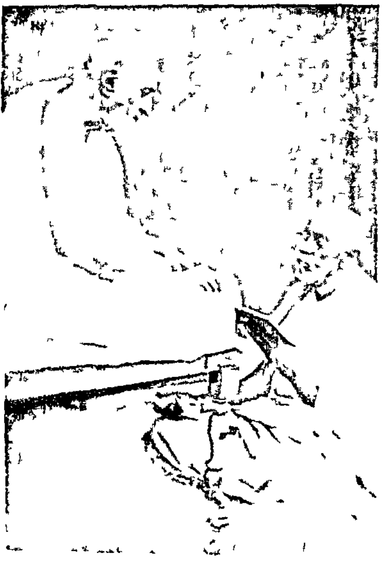
ललित संवत् १४

वैशाख शुक्ला तृतीया शुक्रवार ता० २६-४-६३.

नकल १०००.

भारती विजयम प्रेस,

तिरुवल्लिकेणि, मद्रास-५ ।



प. पू. आचार्य सम्राट श्री विजयवल्लभसूरीश्वरजी म. सा. तथा उनके
मुख्य पट्टप्रभाकर प. पू. श्री विजय ललितसूरीश्वरजी म. सा.

आचार्य भगवंत श्री १००८ श्रीमद् विजयललित-
सूरीश्वरजी म. सा. के पट्टप्रभावक.



ज्योतिषादि-श्रुतपारंगत महा तपस्वी परम पूज्यपाद
आचार्यदेव श्री १००८श्रीमद् विजयपूर्णानन्दसूरीश्वरजी महाराज

समर्पण

भारत दिवाकर पजाबकेसरी शासन सम्राट श्री १००८ श्रीमद् विजयवल्लभ सूरीश्वरजी महाराज के प्रधानपट्टप्रभाकर मरुधरदेशोद्धारक आचार्य भगवत श्री १००८ श्रीमद् विजयललितसूरीश्वरजी महाराज श्री के प्रधान पट्टधर, ज्योतिषमार्तण्ड, दशम वार्षिक तप के महान तपस्वी, आचार्य भगवत श्री १००८ श्रीमद् विजय पूर्णानन्दसूरीश्वरजी महाराज सा श्री, आपके करकमल में श्री ललित स्तोत्रादि सदोह नामक ग्रथ समर्पण करते हुए मुझे बडा ही आनद होता है आप ही के चरण कमल में विश्राम करके जो कुछ प्राप्त हुआ है वे सब आप ही का आशीर्वाद का फल है। मुझे आप की कृपासे आत्म कल्याण की तीन वस्तुएँ प्राप्त हुइ हैं. (१) आशय की शुद्धि (२) प्रभु की प्रभुता की प्हेचान (३) समर्पण मात्र. अतः मेरा सयम, तप, जप के साथ तीनों वस्तुए प्राप्त करानेवाला यह ग्रथ आपके चरण कमल में अर्पण करता हू।

आपका पादपद्ममधुलिट्

प. ह्रींकार विजय.

श्री केवलचंदजी खटोड के धर्मपत्नी अ. सौ. टमकुबाई



वरसीतप पारणु सं. २०१९ वैशाख सुदी ३
शुक्रवार पालीताणा (सिध्धक्षेत्र)

प्राक् कथन्

परमकृपालु शास्त्रकार महर्षि भगवतोए चार प्रकारना अनुष्ठानो आत्मकल्याण माटे उपदेशेला छे प्रीति, भक्ति, वचन अने असंग अनुष्ठान पोतेमानेल देव-गुरु उपर पत्नी समान आदर्श प्रेम राखवो ते प्रीति अनुष्ठान आ अनुष्ठान मार्गानुसारीपणामा अने अपुनर्बंधक अवस्थामा मिथ्यात्व गुणस्थानके होय छे भक्ति अनुष्ठान पण मार्गानुसारीपणाथी माडीने चतुर्थगुणस्थानक सुधी मुख्यताए होय छे तेमा पोते मानेल देव गुरु अने धर्म उपर मात-पिता समान भक्ति होय छे प्रीति अनुष्ठानमा सुखना स्वार्थनी मुख्यता होय छे, ज्यारे भक्तिमा उपकारनास्वीकार साथे अनृणि-थवानी भावना मुख्य होय छे सम्यग् द्रष्टिने आ अनुष्ठान चोथे गुणस्थानके होय छे वचन अनुष्ठान पाच थी सात गुणस्थानक सुधी होयछे, अने आठमाथी बारमा सुधी असग अनुष्ठानहोय छे अधिगम सम्यक्त्वनी प्राप्तिनु कारणतिर्थंकरनी भक्ति छे एटले भक्ति अनुष्ठान सम्यग् दर्शननी प्राप्तिनु मुख्य कारण छे आथी तीर्थंकर देवनी भक्ति महालाभदायी छे बीजु आत्मकल्याण ना विकास माटे तिर्थंकर देवोए चार भावनाओ मुख्य बतावेल छे मैत्री, प्रमोद कारुण्य अने माध्यस्थ प्रीति अनुष्ठानमा मैत्री-भावनो विकास छे भक्ति अनुष्ठानमा प्रमोद भावनी साधना छे वचन अनुष्ठानमा कारुण्य भावनी प्रधानता छे अने असंग अनुष्ठानमा माध्यस्थभावनो विकास छे

अहिंसा-संयम अने तप ए उत्कृष्ट धर्ममगल छे भक्ति अनुष्ठान वाळो आत्माज्या सुधी देव गुरु नी भक्ति मा लीन छे

त्यां सुधी ते अहिंसा-संयम अने तपनी आराधना वालो होय छे. ज्यां सुधी भक्ति मां लीन छे त्यां सुधी चार-प्रकारना आहार नो त्यागी होवाथी तपस्वी छे. विषय अने विकारोथी पराङ्मुख होवाथी संयमी छे. आरम्भ अने समारंभ नो त्यागी होवाथी अहिंसक पण छे. आ प्रमाणे भकृति योग मां लीनथयेलो आत्मा अहिंसादि धर्मोनो पण आराधक छे. अने एटलामाटे महा महोपाध्याय श्री यशोविजयजी-गणीए कह्युं छे के १२ अंगोनो सार जिनेश्वर देवनी भकृति छे.

आ अखिल विश्वना एक नाथ तिर्थंकर परमात्मा छे. षड् द्रव्यो पर तेनी सत्ता छे एवुं अनुभवीओए कह्यूं छे अने अनुभवथी जणाय छे. तिर्थंकर देवनी पूजा द्रव्योथी अनेभावथी एम बे प्रकारे छे. अष्ट-प्रकारी पूजाए द्रव्योथी करेली पूजा छे. तेमा द्रव्योनी मुख्यता छे एटले द्रव्य पूजा कहेवाय छे. तेनां पण द्रव्य अने भाव एम बे प्रकारो छे. केवल आशंसा पूर्वक कराती पूजाद्रव्य पूजा छे. ज्यारे आर्त्त-रौद्र-ध्यानना त्याग माटे अनेधर्मध्याननी पुष्टीनां हेतुथी आशंसा पूर्वक या केवल भक्ति माटे समर्पण भावथी कराती द्रव्यो द्वारा द्रव्यपूजा ए भाव द्रव्यपूजा छे. तिर्थंकरो नो प्रभाव अचिंत्य छे. तेनाथी यावत मोक्ष सुधीनां सर्व-सुखोनी प्राप्ति थाय छे. तेवीज रीते भाव पूजा पण बे प्रकारे छे. द्रव्य भावपूजा अने भाव भाव-पूजा. स्थापना निक्षेपानी अने द्रव्यपूजानी अवहेलना पूर्वक कराती भाव-पूजा द्रव्य भाव पूजा छे. ज्यारे जिन-प्रतिमाने जिनेश्वर सदृश मानी प्रत्यक्ष के परोक्ष कराती तेमनी स्तुति-गुणानुवाद प्रमोद-

भावनानो, भक्ति अने वचन अनुष्ठानोनो विकास करनार होवाथी भाव भावपूजा छे द्रव्य अने भावनी वास्तवीक व्याख्या आवी छे आवा भाव अनुष्ठानो माटे जेमा तिर्थंकरोना नामोना वर्णनो होय, अनेकरीते स्तुति करेली होय तेवा स्तोत्रो खास उपयोगी छे अने आ युगमा ज्यारे खुदनी हिम्मत के ताकात् नथी त्यारे तीर्थंकर ने समर्पण यवु एजआत्म कल्याणकर सरल मार्ग छे गुमडानी गाठ थयी होय तो खुदनी चप्पुथी चीरवानी ताकात जोइए एवी ताकात होय तो पण सेप्टीकनो भय १०० टका छे अने आजे एक-द्रव्य बीजा द्रव्यने कइ करतु नथी एम पोतानी ताकात ऊपर रहेला सेप्टीकना रोगथी पीडाइ रहेल छे माटे सारा वैद्य डोक्टर नु शरणु गोतवु ए उत्तम मार्ग छे माटे ज्या गुमडानी गाठ मटे छे अने सेप्टीकनो भय नथी आथी आ कालमा तिर्थंकर देवनी भक्ति जेटली वधे एटला आपणे वधारे निर्भय छीए तेथी तिर्थंकर देवोनी भक्ति खुबज वधे अने जगतना जन्तु मात्र सुख पूर्वक नीराबाध सुखने प्राप्तकरे एवा शुभ आशयथी आ जिन स्तोत्रादि संदोह बहार पाडवा प्रयास कर्यो छे अने जेथी आशयनी शुद्धिप्रभुनी प्रभुताइ अने समर्पण भावना विकास साधी प्राणीमात्र सुखीथाय।

आ प्रथना प्रकाशनमा परम पूज्य आचार्य भगवत श्रीमद् विजय पूर्णानन्द सूरीश्वरजी तथा तेमना वीनीत शीष्य पन्यास श्री ह्रींकारविजयजी गणी ना सदुपदेशथी जे जे भाइओ ए आर्थीक सहाय आपी अनुमोदनानोलाभ लीधो छे तेनी अमो वार,

वार अनुमोदना करीअे छीए. पेपर आदिनी खरीदी मां श्रीभंवरलाल जी शेठीआए सारो सहकार आप्यो हतो. आ ग्रंथना प्रकाशन मा परोक्ष के प्रत्यक्ष जे जे व्यक्तिओए सहाय करीछे तेमनां कार्यनी पण हृदयपूर्वक अनुमोदना करुछुं श्री हजारीमलजी चोपडाजीए ग्राहको बनावी अमने सारो सहकार आप्यो छे. तेमना ते कार्यनी अनुमोदना पण अत्रे प्रस्तुत छे।

स्तोत्रणि-गोत्राणि पठन्ति मंत्रान् कल्याण भाजो हि जिने-भिषेके ॥ वृहच्छान्ति ॥ जिनेश्वर देवोना नामो, स्तोत्रो अने गोत्रोनो पाठ कल्याण करनार छे. नामाकृतिद्रव्यभावः पुनतः त्रिजगज्जनम् ॥ हेमचन्द्राचार्य ॥ नाम, स्थापना, द्रव्य अने भावथी तिर्थंकर परमात्मा त्रण लोकना प्राणीओने पवित्र करेछे चारमाथी एक पण निक्षेप त्याज्य नथी. चारमांथी एक पण निक्षेप ने न माननार चारेनी अमानता-वाला छे. अने जो तिर्थंकर परमात्मानुं सान्निध्य छुटी गयुं तो धर्म छुटी जवो ए जरापण मुश्केल नथो माटे जिनदेवना विरहमा जिनप्रतिमाने जिन-सरखी मानी सर्वे आतम कल्याणमां लाग्यां रहे अने जिनदेवोनां नाम बोलवा पूर्वक आत्माने तन्मय बनावी आवा सुन्दर स्तोत्रोना पाठथी वातावरण पवित्र बनावी सर्वे सुखीनः सन्तु.

४. रावण अय्यर स्ट्रीट
मद्रास-३.
वीर. सं. २४८९. वि. सं. २०१९
ता. १३-५-६३. चंद्रवार.

जैन तत्वज्ञानदर्शक
पंडीत कुंवरजी मुलचंद्र दोशी
अध्यापक-जैन मीशन
धार्मिक पाठशाला, मद्रास.

स्तोत्र परिचय

(१) श्री जिन सहस्र नाम स्तोत्र श्री पुण्यहर्षमुनीनाशीष्य वाचक ज्ञानहर्ष गणी ना शीष्य मुनिजीवहर्षे आ स्तोत्रनी रचना करी छे सुन्दर रागथी गाय शकाय तेवु छे उच्चारमासरल छे कुले ९२ श्लोक छे १००८ नामो सलग आपल छे स्तोत्रकार कहेछेके "बहु वर्षना कोटि जो कष्ट कीजे, फल नामजापथी सद्य सीजै"

(२) सिद्ध-सहस्रनाम वर्णन छद न्यायविशारद न्यायचार्य महामहोपाध्याय श्रीमद् यशोविजयजी गणी ए आ छद रचेल छे कुले ११ श्लोक छे भाषामा आ छद आपेल छे ११ मा छद मा उपाध्यायजी कहेछे के "तारा नामनी साथे कोइ यत्र तत्र के मत्र सरखामणीमा नथी" आवो एकलो तारा नामनो प्रभाव छे

(३) जिन सहस्रनामस्तवनम् —दिगबर पडीत आशाधर कृत आ स्तवन छे अेक अेक शतक मा १०८ नामो आपेल छे कुले १० शतकमा १००८ नामो आपेल छे दशे शतकमा जुदा जुदा शब्दोथी शरुयता नामो आपेल छे जिन सहस्रनामपूजनमा आ स्तोत्रमा आपेल नामोनो उपयोगथाय छे भापारम्य छे स्तोत्र कार अतमा कहेछेके —आ नामोनो जाप लोकोत्तम छे उत्कृष्ट शरण छे आ मुख्य मगल छे आ परम पवित्र करनार छे एक नाम ज्या ससार समुद्रथी तारनार छे त्या १००८ नामना स्मरण माटे कहेवु शु ? अनुष्टुप श्लोकमा छे एक एक शतकमा १२-१२ श्लोक छे

(४) श्रीअर्हन्नाम सहस्रसमुचय:—कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्यें अर्हन् परमात्मानां १००८ नामनी रचना करी छे. प्रथम श्लोकमां तेवो श्री जणावे छे के अर्हन् परमात्माना नामोने कानोथी सांभलनार अने शब्दोथी बोलनार प्रवर पुण्यलक्ष्मीने प्राप्त करेछे अने आथी सवारमा ऊठीने अर्हन् परमात्मानां नामोनो उच्चारकरवो जोइए. १० प्रकाशमां १००८ नामो आपेल छे. भाषासरल अने आनन्द दायक छे. नामोनो प्रभाव वतावता आचार्य श्री उपसंहार मां कहेछे के—आ सर्व अपराधो नो नाश करनार छे. समस्त दु:खोनोनाश करनार छे. महा पापोनो नाश करनार छे. सर्वे प्राणीओने जल्दीथी इष्ट आपनार छे.

(५) श्री जिनसहस्रनामस्तोत्रम् :—महोपाध्याय श्री विनय विजयजीगणी ए आनी रचना करी छे. सुन्दररागथी गाय शकाय तेवुं आह्लादजनक छे. कुले १४४ श्लोक मां सम्पूर्ण १००८ नामो आपेले छे. रचयीताकहेछेके—आ १००८ नामो पापरुपी अन्धकार नो नाश करवा माटे हजार किरणो वाला सूर्य समान छे.

(६) श्री परमात्मा द्वात्रिंशिका:—दिगंबर आचार्य श्री अमित गतिजीए बनावेल आ स्तोत्र छे. वास्तवीक परमात्मा केवा होय? तेनुं सुन्दरवर्णन आपेल छे.

(७) शक्रस्तव:—मन्त्रगर्भित श्री सिद्धसेन दिवाकर सूरीश्वरे आ बनावले छे. महाप्रभावीक छे. स्तोत्र ने अन्ते कहयुं छे के प्रतिष्ठामां अने शान्तिक विधिमां भणवाथी महा-मंगल माटेथाय

छे आ स्तोत्र नो उपयोग करी जीन सहस्र नाम पूजापणभणावी-शकाय तेवु छे आनो पाठ महामगलकारी छे महाचमत्कारीक छे

त्यार पछी ॥ श्री जिनप्रभसूरि प्रणीत महामगल कारी ॥ श्री गौतमस्वामिस्तोत्र ॥ मत्र साथे आपेल छे तेनी पछी श्री जिनचन्द्र विरचीत श्री वीरजिनस्तवन आवे छे

(८) जिनसहस्रनाम लघुस्तोत्र —चौदपूर्वधर श्रुतकेवलि आचार्यभगवतभद्रबाहुस्वामी विरचीत आ स्तोत्र छे ४० श्लोक मा १००८ नाम आपेल छे आचार्य देव कहेछे के जिनेश्वरना नामोनु सरण करवाथी अवश्य निर्वाण पदनी प्राप्तिथाय छे

त्यार पछी चन्द्रप्रम सूरि प्रणीत साधारण जिन स्तवनम् ॥ आपेल छे

अष्टाष्टक —आमा जिनेन्द्र दर्शननु फल १५ श्लोक मा आपेल छे प्रभु प्रतिमापासे बोलवाथी सुन्दर भावो उत्पन्न करनार छे दशभक्ति माथी उद्धृत करेल छे

जिनसहस्रनाम —आदि पुराणमा दिगम्बार आचार्य श्री जिनसेने आनी रचना करेला छे १० शतकमा १००८ नामो आपेल छे बहुन प्रसिद्ध छे

त्यार पछी ॥ दृष्टाष्टक ॥ आपेल छे जेमा जिनेन्द्रभवननु-रोचक शैलीमा वर्णन छे दश मक्ति माथी उद्धृत करेल छे

सुप्रभातम्—सवारमा भणवाथी महामगल कारी छे जिन-वाणी माथी उद्धृत

अनुक्रम मणिका

दाताओनी शुभ नामावलि

रु. ५००-०० श्री केवलचदजी खटोडना धर्मपत्नी अ सो डुमकुबाइ ना वरसीतप निमित्त मद्रास
रु. ३००-०० नया मन्दिरजी श्राविका व्हेनो तरफथी ,,
रु. २५२ ५० श्री सकुचदजी समदडीजा ,,
रु. २५०-०० शा मोतीजी शीवराजजी सघवी कालुरामजी ना धर्मपत्नी अ सौ सोनीबाइ ना उपधान प्रसगे. मद्रास
रु २५०-०० जीराउला परमार परतापमलजी ना धर्मपत्नी अ सौ फुलीबाइ ना उपधान निमिते मद्रास
रु. १२७ ५० श्री ऋषभदासजी जैन ,,
रु १२७-५० श्रीमती मजुलाव्हेन अभयचद वृन्द्रावनदास कोइम्बतुर.
रु १२७ ५० लोढाघीसुलाल-सपत्तराजजी मूलबागल.
रु ११८-०० एक सदग्रहस्थ-ज्ञानखाताना
रु १०१-०० श्रीमति मणीव्हेन चीमनलाल कोठारी. मद्रास
रु. ५२ ५० श्री अचलमलजी ,,
रु ५१-०० श्री श्रेणीकभाइ-जयानद कोठारी ,,
रु. ३७ ५० श्री रसिकलाल भाइ रोबर्टसनपेठ.
रु २५ ०० श्री वाडीलाल भाइ. वेन्कर्स

रु.	२५-००	श्री आर. चंपालाल.	मद्रास
रु.	२५-००	श्री सुरतानमल सुमेरमल.	,,
रु.	२५-००	श्री निरभयलाल बहादरमल.	,,
रु.	२५-००	श्री शान्तिलाल पी-म्हेता.	,,
रु.	२५-००	श्री आणंदजी भाइ.	,,
रु.	२५-००	शा. सरेमल जेठमल.	,,
रु.	२५-००	शा. चंपालालजी मुथा.	,,
रु.	२५-००	शा. मुनिलाल मुलतानमलजी.	,,
रु.	२५-००	शा. शंकरजी मूलचंदजी.	,,
रु.	२५-००	शा. मोतिचंद गुणेशमलजी.	,,
रु.	२५-००	श्री छगनमलजी तिरुनेलवेली.	,,
रु.	२५-००	श्री मोहनलाल टोलिआ.	,,
रु.	२५-००	शा. देवीचंद-गुलाबचंद.	,,
रु.	२५-००	श्री. जे. एम-शेठ.	,,
रु.	२५-००	शा. भगवानजी. भूताजी.	,,

॥ श्री जीवद्दर्पगणी विरचित ॥

॥ श्री जिनसहस्र नाम स्तोत्र ॥

॥ भुजग प्रयात् वृतम् ॥

ॐ श्रीमन् मानदेव हेमचद्र विजयहीर विनयानद वल्भ ललित
पूणानदसूरीश्वरपाद् पद्मेभ्यो नम ।

चिदानद चिद्रूप ए मोहनारी
सदा निश्चरुपी अरुपी अभारी ।
अनाथ सुनाथ उदार गभीर
अलक्ष्य विलक्ष्य अनन्त्य अभीर ॥ १ ॥

निरची स्वयभू विभू वीतराग
जिन देवदेव विशाल अताग ।
सदा अक्षर शकर योगरुप
समस्तास्त दोष अरोप निलोप ॥ २ ॥

अमुद्र अतीद्र अनिद्र अबाध
अभेदी अमेदी अछेदी अगाध ।
पर मोक्षद सौख्यद सिद्धिदाता ।
जगन्नाथ पूज्यो अगुह्यो सुनेता ॥ ३ ॥

अज आदिकर्ता कलो दुःखहर्ता
महाज्योतिपुज सित शास्त्रभर्ता ।
पुराण प्रवीण प्रशस्त प्रसिद्ध
प्रमोदानबोधी अरोधी सुसिद्ध ॥ ४ ॥

वरीष्ठं पटिष्ठं लघिष्ठं गरीष्ठं
ध्रुवं नूतनो जीर्णरुपो अचेष्टं ।
अनाशी अनाशी विकाशी विभासी
अपारं अदारं अमारं विलासी ॥ ५ ॥

सहायी अमायी सदामुक्तिशर्मा
समीचीन शांतीन अक्षीणधर्मा ।
अयोगी अभोगी अशोकी अनिंद्यो
जिनेशो धनेशो मुनीशो सुवन्द्यो ॥ ६ ॥

प्रभुतातिशायी चतुर्गात्र धारी
चतुर्वक्त्र धर्मोपदेष्टा विचारी ।
स्वयंबुद्ध बुद्धो प्रवन्धो अगम्यो
अतुल्यो अशल्यो सदारुपरम्यो ॥ ७ ॥

अगंधो अवर्णो असंस्पर्शनीयो
अभितो विनीतो जगद्दर्शनीयो ।
अजल्पो अतल्पो अकल्पो अरुची
अमर्मा अकर्मा अधर्मा असंची ॥ ८ ॥

त्रिकालप्रवृत्तिज्ञ हीनाष्टकर्मो
पवित्रो विचित्रो अमित्रो अमर्मो ।
शरेण्यो वरेण्यो महान् भ्रांतहारी
क्षमासिंधु बन्धु जगज्जंतुतारी ॥ ९ ॥

शमीध्यानशुक्लो दमी स्याद्वादी
यतिः शुद्धमार्गी ऋषी जैनवादी ।
अमोहो अलिंगी गतोच्छाह अच्छो
जितेन्द्री गताशो अलिंगी अतुच्छो ॥ १० ॥

जिनेन्द्रो स्वयतेज सूक्ष्मो अशको
समत्रो स्वतत्रो अयत्रो अपको ।
सदा नीरसो निर्गुणो कालचारी
निराहार निर्लोभ ए ब्रह्मचारी ॥ ११ ॥

धरामूर्ति यज्ञाग वीरो विधाता
अधीन्द्रो महीन्द्रो गुणज्ञो सुपाता ।
वृषांको वृषाधीश ससारतातो
महेशो महात्मा वचस्वी अजातो ॥ १२ ॥

शमात्मा शुभात्मा जितानग वशी
धृतिः कीर्ति कांति कलादो असशी ।
महाधर्मधीरो अनतर्धिवेदो ।
अमोघो प्रदिप्तो स्फुटो त्व अखेदो ॥ १३ ॥

समभ्यर्चनीयो सदाभास इष्टो
स्थवीयान् दवीयान् परानद पुष्टो ।
जरामृत्युहीनो अरिघ्नो सुघोषो
जितक्लेश सौम्यो कृतज्ञो सुतोषो ॥ १४ ॥

असंस्कृत्य सारो हरीराम ध्येयो
दयायागतुंगो सदष्टी असेयो ।
सहस्राक्ष विश्वाक्ष वीरावंतसो
सुसोक्ता रसेशो अलेशो अंदशो ॥ १५ ॥

सदा आदिमूर्तिः प्रभापूर्तिगुप्तो
गणस्वामि शक्तो अगण्यो असुप्तो ।
कजाक्षो सुदक्षो अपक्षो अतर्को
अहास्यो अलास्यो श्रुतांभोजअर्को ॥ १६ ॥

महातंकनिघ्नो अविघ्नो अशेषो
त्रिसंध्यानतो स्फार सिद्धांत वेषो ।
जगत् पालको सुश्रिको अंशुमाली ।
सदैको लयी शुद्धसम्यक्त्वशाली ॥ १७ ॥

सुधानिर्झरो वर्य धुर्यो प्रतिष्ठो
स्थविष्ठो सुनिष्ठो वहिष्ठो वलिष्ठो ।
महामूर्ति तेजो महानंदकंदो
महाबोधिशास्ता निरक्षो मुनीन्द्रो ॥ १८ ॥

सुसाक्षी भवांतो वृषीयान विभावो
सुधा संभवो धैर्ययुक्तो अरावो ।
श्रियोराशी उद्दामगीर्मागधीयो
मुमुक्षुस्तितीर्षुश्चिरायुरजेयो ॥ १९ ॥

भवद्योतको भूष्णु भव्यात्मभासी
दिशावस्त्रधारी सुखाराध्य आसी ।
जगत्पापघाती अलोकान्तदृष्टी
सदार्हन् जय श्रीमुरारी अकष्टी ॥ २० ॥

अशोकार्क ओंकार आरोग्यकार
अक्षर विष्टर प्रकार प्रतार ।
समग्रागमेगो हितार्थी अनर्थी
नयी नीतिदो निभ्रमो सुप्रमार्थी ॥ २१ ॥

सदाऽव्यक्तरुपो समानो सहिष्णू
प्रजापाल पृथ्वीपती प्राग्यजिष्णू ।
भवाम्भोजदन्ती भगो भानुमन्तो
अजिम्हो अनष्टो अदृष्टो अचेतो ॥ २२ ॥

अकम्पस्थिती अग्रणी ऊर्ध्वयायी
स्तुति स्वामी सद्वृत्त माध्यो सुछायी ।
महात्मा नमेशो महाजैन मुक्तो
अहिंसोपदेशी अनगो अनुक्तो ॥ २३ ॥

अवाग्गोचरो आर्तहा अष्टसिद्धी
अनेकान्तवादी अतप्तो विवृद्धी ।
सलब्धी सशक्ति सदुद्धारसेतो
अपीनो अधीनो अनार्तो अरेतो ॥ २४ ॥

नभोरत्न निर्मानसो निर्विकारं
सुराध्यक्ष संकल्प सर्वर्तुसारं ।
स्वहाशब्दवाची स्वधाभुक् सुचर्यो
सदास्थावरो साकरो त्वं अचर्च्यो ॥ २५ ॥

धराधारसाधार धन्यो धतारी
त्रिकालो त्रिवर्गो त्रिधर्मो त्रितारी ।
महावैद्य मौनी महावीर्यमेधा
कलाकल्पकल्पं न कल्याणश्रद्धा ॥ २६ ॥

सदा धर्यदिप्तो सुमुद्रो समस्तो
जगज्जीवनं जीवनं जैनव्यक्तो ।
नतार्तिघ्न निर्वाहको धर्मधामा
अगर्वो अखर्वो अकालो सुनामा ॥ २७ ॥

प्रमातो प्रमाणो परोक्षो प्रतीक्षो
विहारी विधेयो वरीयान् अनीक्ष्यो ।
बृहत्कीर्ति वाग्मी विवस्वान् विजेता
विराट् वेगवान् वृत्तिसारी सुवेत्ता ॥ २८ ॥

अकर्तापि कर्ता अहर्तापि हर्ता
अपायोऽपनेता प्रव्रज्याप्रधर्ता ।
महादेव मृत्युंजयो केशवेशो
महोच्छाह देवो महात्मा कुलेशो ॥ २९ ॥

सदाविश्वविद्यो शिवो विश्वपादो
महाविश्व चिन्तामणीश्चिन्तितार्थो ।
महामारिवारो अजग्यो श्रुताग्र्यो
॥ ३० ॥

तथा दिव्यभाषापति दिव्यदेवो
निरुग् निश्चलो निर्ममो भावदेवो ।
कलिव्यालमन्त्रोसुलोकाग्रवासी
तिरीति नृसिंहो नृदेवो सुखासी ॥ ३१ ॥

तथा मृत्युवारी मुनिमार्गवक्ता
महासद्गुरो मुक्तरो विश्वत्राता ।
महादित्य मूर्तो मनोऽभीष्टचन्द्रो
सदा अग्रजो स्वर्वरो शान्तिमुद्रो ॥ ३२ ॥

सुसौम्यात्मको सौम्यमूर्ति सुयज्वा
असगात्मको अग्निमूर्ति जयुग्वा ।
विधिर्निर्धमानो विचेतोज नूत्यो
तथा स्थाणु तद्रूपगो तत्त्वकृत्यो ॥ ३३ ॥

सुसद्वृत्ति सद्बुद्धिगो शैलसगी
मुनिपुगवो सत्यसधो दयागी ।
तथा निश्चतीचक्र विद्याविलासी
पुरुः पुण्यगी धन्यगी निश्चवासी ॥ ३४ ॥

गुणी गुप्तिभृत् गुप्तवृत्तांतविज्ञो
जयो विश्वसृट् विश्वशीर्षो श्रुतज्ञो ।
सदाभक्ति वात्सल्य कल्याणगेहं
अघोघाती अनघो स्फुरद्योगदेहं ॥ २५ ॥

मनीषी सुलब्धाक्षरो देववाणी
गिरांनाथ तृप्तो समस्तप्रमाणी ।
तथा रत्नगर्भो महाज्ञानगर्भो
दयागर्भयुक्तो तथा पद्मगर्भो ॥ २६ ॥

हिरण्यांगभू विश्वगर्भो विनोदी
मनोज्ञार्ह वाचस्पती सुप्रमोदी ।
दृढीयान् इतो ईशिता ईश्वरांगो
अबाधापदस्थायुक्तो धर्मरागो ॥ २७ ॥

सदासत्यविज्ञानसेनो शमीशो
महाकामधेनू यतिराट् दमीशो ।
सदा श्लक्ष्णो गुप्तनेत्रो गिरीशो
सदुद्योतको दीर्घवाणी हरीशो ॥ २८ ॥

महाध्यात्मगो केवली योगमायो
वनेवेश्मपूज्यर्धि ऋत्विग् विहायो ।
गुणोच्छेदको याज्यसूक्ति स्वरीशो
स्वभू विस्मयो प्रोत्तमो शासनेशो ॥ २९ ॥

भन, कलेशहारी कलिम्लानमुक्तो
तथा धर्मनेमी समस्तेट् निरक्तो ।
हरत दुरत व्रतायान वेद्यो
स्फुरत चरत अमोघादिविद्यो ॥ ४० ॥

अरगो निरगो रहस्य सुहार्दं
चरातीत चित्कद चिंत्य सुगीर्दं ।
अनर्हांतको कर्मठो रुद्रभद्रो
महाप्रातिहार्योज्वलो एरमेद्रो ॥ ४१ ॥

चतुर्धर्मभाषी सुकर्मण्य सच्छ्री
प्रधीयान् प्रपंची जगन्मित्रमुच्छ्री ।
अचाल्यो अपाल्यो न वृद्धिन हानी
नमालो नशालो नरीति मेंखावी ॥ ४२ ॥

विलोलो अलोलो सदा धर्मजन्यो
सदा ज्ञानकल्योलकेशो अपुण्यो ।
अधर्मा अनीहो असधी अदडो
तथा नेदीयान् स्वस्तियुक् ज्ञानपिंडो ॥ ४३ ॥

तथा तीर्थनद्यो स्वयतीर्थराध्यो
स्वयतीर्थकारी स्वयतीर्थसाध्यो ।
स्वयतीर्थभोगी स्वयतीर्थयोगी
महात्तीर्थतीर्थो जगत्सप्रयोगी ॥ ४४ ॥

महावैभवो निर्भवो देवसेवी
तथा सप्तभंगी भजद्वाणीदेवी ।
समाधानसर्वांग लक्ष्मीविवक्तो
तथा पञ्चसंविष्टरो पञ्चयुक्तो ॥ ४५ ॥

श्रिया संश्रितो सुंदरो वप्रशाली
पदन्यास पंकेरुहो संघमाली ।
शिरोछत्रराजा चलद्धर्मकेतू
समस्तांगिवाणी वदन् शुद्धहेतू ॥ ४६ ॥

तथा द्रव्य षट्कस्वरूपज्ञ शंदो
सदा ज्ञानलोकोत्तरज्ञो अफंदो ।
महामोक्षसद्मा महामंत्रतत्त्वो
अहेयो उपादेय विश्वाधिसत्त्वो ॥ ४७ ॥

असंसारभू ब्रह्मदेवो प्रदेशी
चिदानंद मग्नो अनंतोपदेशी ।
तथा कोटिसूर्या सुधी मुख्यवीक्ष्यो
महाबोधि सत्वो जगद्दत्तशिक्षो ॥ ४८ ॥

महानुत्तरज्ञान चारित्रधारी
मदोन्मत्तमोहद्विपानां मृगारी ।
तथा सौगतो ग्रामणी स्वेशसूरी
मनोभ्रांतिभित् विश्वशौण्डीर भूरि ॥ ४९ ॥

तथा सद्यो धर्मचक्री प्रभावी
अनिर्द्वेपको सनिदु भूतभावी ।
सुचैतन्यवागूबीजमन्त्रो कृपालो
महाधर्मशक्रेश भापो दयालो ॥ ५० ॥

तथानन्त सद्बुद्धिज लोकमान
सदानन्तवीर्यं प्रद्धकिर्तियान ।
सुखापूर्ण मित्रारितुल्यो व्रतार्गी
महाध्यान योगाधिको तत्त्वमगी ॥ ५१ ॥

सदासयमो विश्रमो धर्मलाभो
महानायु मूर्तिः महानुत्तराभो ।
सुखानद गोविन्द विश्वात्मदीपो
महाघातिकर्माशभित् धर्मदीवो ॥ ५२ ॥

सदात्यो सनात्यो अनतेन्द्रशक्ती
प्रभालोकसभासनो सत्त्वयुक्ती ।
असद्दुर्धरो धर्मरो सन्मनोज
तथा भव्य पूत श्रुताम्भः सरोज ॥ ५३ ॥

सदानित्य द्रव्यो पतङ्गतुधारी
तथैक स्वभावी बहुभावधारी ।
सदा पुण्कलो चिन्मयो धर्मवृद्धि
स्वयमगलो श्रेयसा धामवृद्धि ॥ ५४ ॥

समुत्पत्ति-विध्वंसनित्यस्वभावी
　　जगत् ज्ञापको जापको ज्ञानभावी ।
जगद्भूतनाथो दुराचारवामी
　　पराकार संसारवारी सुकामी ॥ ६५ ॥

तथोत्कृष्टदृष्टी विपर्यायबुद्धि
　　असद्भावनष्टी शुभाचारशुद्धि ।
तपस्वी यशस्वी सुवैराग्यसंगो
　　अनारंभ भाषी स्फूरद्धकत्ररंगो ॥ ६६ ॥

स्वयं धूर्जटी पद्मनाभो नयात्मो
　　सदापुण्य कुंभो पुरस्कृत्यभात्मो ।
धृतश्री व्रतश्री कृतश्री भृतश्री
　　बलश्री कलश्री गुणश्री वरश्री ॥ ६७ ॥

चतुर्वर्ण भिन्नो अलौकिकसांख्यो
　　सदा न क्षतो न क्षयोनाभिकांक्षो ।
महाज्ञानरत्न प्रदो ब्रह्मलोको
　　तथा दुर्गतिघ्नो भगो देवलोको ॥ ६८ ॥

महामर्मवारी असंसार चारी
　　निराधार साधार संन्यासकारी ।
जगद् भाल विंदु स्फूरद्धर्मरत्नो
　　गुणानां निधानं जगत्सुप्रयत्नो ॥ ६९ ॥

महामेरुतुगो सदाचार्यसूर्यो
जयश्री निचादी जगचित धार्यो।
चलद्धर्म मूर्ती क्रियाहेतुकामो
तथा सार्व सुश्रुकृती विश्वकामो ॥ ७० ॥

महाकीर्ति वृद्धो सदाकल्मषघ्नो
तथा कर्म साक्षी विमर्शीचलघ्नो ।
अलाभो सुलाभो प्रकृष्ट प्रभावो
महाध्यापको वाचको विश्वभावो ॥ ७१ ॥

सदाक्षेमशर्मा महाक्षेमकर्ता ।
महाविज्ञगम्यो अतिथि प्रधर्ता ।
प्रतर्क्यात्मको हेमगर्भो सुपन्या
क्षमेशो सुरावो भवाब्धि प्रमन्या ॥ ७२ ॥

तथा मेरुशाली कमाली अतागो
असगो सुसगो महागो अभागो ।
चलच्चामरौघो जगत्सपदीशो
सुशोभाकरो भाकरो चेतनेशो ॥ ७३ ॥

सुनिग्रथकी सज्जनो शास्त्रगधो
यथाख्यातनान् ज्ञाति वृद्धो सुगन्धो ।
शुभाज्ञा प्रधानो स्फुरद् योगराणी
महामगलिको मथत्पचराणी ।

अपर्याप्त पर्याप्त सज्जीववेत्ता ।
महाज्ञान शुद्धेन मिथ्यात्वभेत्ता ॥ ७४ ॥

जगन्मौलि चुडामणी विश्वहारो
रमाकेलिगेहं भवापारपारो ।
महोदार कर्मा सुवेश्मा सुदारो
अनाचार आचार सर्वर्द्धिकारो ॥ ७५ ॥

अलंकार संचार संपन्नसंतो
वदान्यो सदाप्राणवो वृद्धिकंतो ।
अनीदृग् दिनिर्ध्वंधको चक्रपाणी
गदाशंख छत्र प्रशस्तांकपाणी ॥ ७६ ॥

तमोघ्नो द्वितीयो अलीनो नवार्धि
मितज्ञोऽमितज्ञो निवृत्तीगुणर्धी ।
तथा पुर्वलक्ष्मी सदापावनात्मा
सदौचित्यकर्ता विवेकभृतात्मा ॥ ७७ ॥

महाऽक्षोभ्य रोगार्तिहा वीतदुष्टो
सदावितमात्सर्यको ज्ञानपृष्टो ।
शुभास्वान् गुणज्येष्ठको गाह्यगोप्ता
महानंद संवर्धनो पापलोप्ता ॥ ७८ ॥

महाकारुणीको जगत्साधनिको
त्रिलोकेश देशाधिपो माननीको ।

क्षरद्वाणीगगासरित्पूतविश्वो
समुत्पत्तिनिस्पत्तिविज्ञातविश्वो ॥ ७९ ॥
चलस्वर्णदुर्गत्रयो धर्गीमागो
मृगेन्द्रामनस्थायुको देवरागो ।
जगज्ञागरुको दयादारधारी
सदा निर्मलागो तथा व्यगधारी ॥ ८० ॥

महादुदुमीनिस्वनो योगनिद्रो
महानार्धिनाक् वारिदो तापसेंद्रो ।
महापुण्यलिप्तो सुधारूपगात्र
दुराशानिवारी जरावेलिदात्र ॥ ८१ ॥
सदाभोगभामडलस्फारशोभी
अमह्याशुशीताशु भक्तैकलोभी ।
परावातकर्मा तपोलब्धिलब्धो
तथा क्षायिमानाकितो मोक्षलुब्धो ॥ ८२ ॥

लसत् ज्ञानवल्लीजल प्रार्थितार्थो
श्रमाभावहेतु' प्रथाप्तो गुणार्थो ।
जगच्छेखरो पादचारी जयाको
जगत्सत्प्रशस्ति प्रतिज्ञा शुभांको ॥ ८३ ॥

महानामअष्टोत्तर ए हजार
भजो चित्तमा नित्य थइने करार ।

वहु वर्षना कोटि जो कष्ट कीजे
फलं नामना जापथी सद्य लीजे ॥ ८४ ॥

मुधा कां गमाडो भलो जन्म आले
भजो नाममाला भली त्रण काले ।
नथी ए विना ईश को विश्वमांहे
नमें रातिदीशं सुरा चित्त चाहे ॥ ८५ ॥

जिणे राग ने द्वेषनां मान मोड्या
जिणे दुष्ट दुःकर्मनां वंध तोड्या ।
जरा जन्म ने मृत्युनी भीति वारी
रहे ज्ञाननी लीलमां निर्विकारी ॥ ८६ ॥

मते मूढे जे मानुषा एम आखे ।
फरी विश्वना ईशने जन्म भाखे ।
विना पास दीधा यथा रंग नावे
विना कर्म प्राणी भणी जन्म नावे ॥ ८७ ॥

जिणे गर्भना कंदमां दंद कीधा
करी क्रोध झाझा घणां पाप लीधां ।
जिणे दुर्गनें वंध वांध्या अनाणे
कहो छोडवे भक्तने सें प्रमाणे ॥ ८८ ॥

महामंदबुद्धि नही ज्ञानलेशं
कृपानाथने भाखता जन्मवेशं ।

रखे ते कदा कर्णमां वात आवे
सदा माहरा चित्तमां जैनभावे ॥ ८९ ॥

नथी ए विना मंत्र को यंत्र रूडा
विना एहथी मात्र ते सर्व कूडा ।
नथी ए विना बुद्धि ने सिद्धि साची
जिको ए विना वात ते सर्व काची ॥ ९० ॥

ततो एहना नाममां ध्यान राखी
करी नाममाळा जिसी देवशाखी ।
सदा जे भणे जे गणे नित्यकाल
वसे तेहने मंदिरे लच्छिमाल ॥ ९१ ॥

सुधी पुण्यहर्षाभिधानो मुनीशो
गुणी वाचको ग्यानहर्षो गणीशो ।
तयोश्चारुपादाब्जसेवासुसक्तो
मुनिर्जीनहर्षो वदे भावयुक्तो ॥ ९२ ॥

जिनसहस्त्रनामस्तोत्र संपूर्णम् ॥

न्यायविशारद-न्यायाचार्य श्रीमद् यशोविजयजीविरचित-

सिद्ध-सहस्रनाम वर्णन छंद

[भुजंगप्रयात वृत्त]

जगन्नाथ जगदीश जगबंधु नेता
चिदानंद चित्कंद चिन्मूर्ति चेता ।
महामोहभेदी अमाइ अवेदी
तथागत तथारूप भवतरु-उच्छेदी* ॥ १ ॥

निरातंक निकलंक निरमळ अबंधो
प्रभो दीनबंधो कृपानीरसिंधो ।
सदातन सदाशिव सदाशुद्ध स्वामी
पुरातनपुरुष पुरुषवर वृषभगामी ॥ २ ॥

प्रकृतिरहित हितवचन नामातीत
महाप्राज्ञ मुनियज्ञपुरुष प्रतीत ।
दलितकर्मभर कर्मफळ सिद्धिदाता
हृदयपूत अवधूत नूतन विधाता ॥ ३ ॥

महाज्ञान योगी महात्मा अयोगी
महाधर्मसंन्यास परलच्छीभोगी ।
महाध्यानलीनो समुद्रो अमुद्रो
महाशांत अतिदांतमानस अरुद्रो ॥ ४ ॥

---

* भपर्मय उच्चेदो ।

महेंद्रादिकृतसेव देवाधिदेव !
नमो ते अनाहतचरण नित्यमेव।
नमो दर्शनातीत दर्शनसमूह
त्रयी–गीत–वेदांतकृत् अखिल उह ॥ ५ ॥

वचनमनअगोचर महावाक्य वृत्त
कृतावेद्यसवेद्यपद सुप्रवृत्त।
समापत्ति आपत्ति सपत्ति भेदे
सकळ पाप सुगरिह तु दिह छेदे ॥ ६ ॥

न तु दृश्य दृग्मा॰ इति वेदवादो
समापत्ति तुज दृष्टि सिद्धांतवादो ।
विगूता विनाअनुभवे सकळवादी
लखे एक सिद्धातधर अप्रमादी ॥ ७ ॥

कुमारी दयितभोगसुख जिम न जाणे
तथा ध्यान विण तुज मुधा लोक ताणे।
करे कष्ट तुज कारणे बहुत खोजे
स्वय तु प्रकाशे चिदानंद मोजे ॥ ८ ॥

रटे अटपटे झटपटे वाद ल्यावे
न त्या तु रमे अनुभवी पास आवे।
महा नट न हठयोगमाहि तुज जागे
विचारे होये साइ आगे जु आगे ॥ ९ ॥

तथाबुद्धि नहीं शुद्ध तुज जेणे वहिये
कलौ नाममां एक थिरथोभ रहिये ।
सहस्रनाममां दृप्प पणे अप्प जाणुं
अनंते गुणे नाम अणंता वखाणु ॥ १० ॥

अनेकांत संक्रांत बहु अर्थ शुद्ध
जिके शब्द ते ताहरां नाम बुद्ध ।
निराशी जपे जेह ते सर्व साचुं
जपे जेह आशाए ते सर्व काचुं ॥ ११ ॥

न को मंत्र नवि तंत्र नवि यंत्र मोटो
जिस्यो नाम ताहरो शमामृत लोटो ।
प्रभो ! नाम मुज तुज अक्षय निधान
धरुं चित्त संसारतारक प्रधान ॥ १२ ॥

अनामीतणा नामनो श्यो विशेष ?
ए तो मध्यमा वैखरीनो उल्लेख ।
मुनिरूप पश्यंति कांइ प्रमाणे
अकळ अलख तुं इम होय ध्यानटाणे ॥ १३ ॥

अनवतारनो केइ अवतार भाखे
घटे ते नहीं देवने कर्मपाखे ।
तनुग्रहण नहीं भूत आवेश न्याये
प्रथम योग छे कर्म तन्मिश्र प्राये ॥ १४ ॥

अछे शक्ति तो जननी उदरे न पेसे
तनुग्रहण वळी पर अदृष्टे न वेसे ।
तुरगश्रृंग सम अर्थ जे एह युक्ति
कहे सद्दहे तेह अप्रमाण उक्ति ॥ १५ ॥

यदा जिनवरे दोष मिथ्यात्व टाळ्यो
ग्रह्यो सार सम्यक्त्व निज भाव वाळ्यो ।
तिहांथी हुआ तेह अवतार लेखे
जगत लोक उपगार जगगुरु गवेखे ॥ १६ ॥

अहो ! योगमहिमा जगन्नाथकेरो
टळे पंच कल्याणके जग अधेरो ।
तदा नारकी जीव पण सुख पावे
चरण सेववा धसमसा देव आवे ॥ १७ ॥

तजी भोग ले योग चारित्र पाळे
धरी ध्यान अध्यात्म घनघाति टाळे ।
लहे केवळज्ञान सुरकोडि आवे
समवसरण मंडाय सवि दोष जावे ॥ १८ ॥

घटे द्रव्य जगदीश अवतार एसो
कहो भाव जगदीश अवतार केसो ।
रमे अंश आरोप धरी ओघदृष्टि
लहे पूर्ण ते तत्त्व जे पूर्णदृष्टि ॥ १९ ॥

त्रिकालज्ञ अरिहंत जिन पारगामी
विगतकर्म परमेष्ठी भगवंत स्वामी ।
प्रभु बोधिदाभयद् आप्त स्वयंभू
जयो देव तीर्थंकरो तुं ज शंभु ॥ २० ॥

इस्यां सिद्ध जिननां कह्यां सहस्र नाम
रहो शब्द–झगडो लहो शुद्ध धाम ।
गुरु श्री नयविजय बुध चरणसेवी
कहे शुद्ध पदमांहि निज दृष्टि देवी ॥ २१ ॥

[श्रीमद् यशोविजयजीविरचित "गूर्जर साहित्यसंग्रह" मांथी उध्धृत]

॥ ॐ नम सिद्धेभ्य ॥

पण्डित आशाधरकृत

जिनसहस्रनामस्तवनम् ।

॥ अनुष्टुप् ॥

प्रभो ! भवाङ्गभोगेषु, निर्विण्णो दु खभीरुकः ।
एष विज्ञापयामि त्वा, शरण्य करुणार्णवम् ॥ १ ॥

सुखलालसया मोहाद् , भ्राम्यन् बहिरितस्ततः ।
सुखैकहेतोर्नामापि, तव न ज्ञातवान् पुरा ॥ २ ॥

अद्य मोहग्रहावेश–शैथिल्यात् किञ्चिदुन्मुखः ।
अनन्तगुणमाप्तेभ्य–स्त्वा श्रुत्वा श्रो(स्तो)तुमुद्यतः ॥ ३ ॥

भक्त्या प्रोत्साद्यमानोऽपि, दूर शक्त्या तिरस्कृतः ।
त्वा नामाष्टसहस्रेण स्तुत्वाऽऽत्मान पुनाम्यहम् ॥ ४ ॥

जिनसर्वज्ञयज्ञार्ह–तीर्थकृन्नाथयोगिनाम् ।
निर्वाणब्रह्मबुद्धान्त–कृता चाष्टोत्तर' शतैः ॥ ५ ॥

तद्यथा—जिनो जिनेन्द्रो जिनराड्, जिनप्रेष्ठो जिनोत्तमः ।
जिनाधिपो जिनाधीशो जिनस्वामी जिनेश्वरः ॥ ६ ॥

जिननाथो जिनपति–र्जिनराजो जिनाधिराट ।
जिनप्रभुर्जिनविभु–र्जिनभर्ता जिनाधिभूः ॥ ७ ॥

जिननेता जिनेशानो, जिनेनो जिननायकः ।
जिनेट्ट् जिनपरिवृढो, जिनदेवो जिनेशिता ॥ ८ ॥

जिनाधिराजो जिनपो, जिनेशी जिनशासिता ।
जिनाधिनाथोऽपि जिना–धिपतिर्जिनपालकः ॥ ९ ॥
जिनचन्द्रो जिनादित्यो, जिनार्को जिनकुञ्जरः ।
जिनेन्दुर्जिनधौरेयो, जिनधुर्यो जिनोत्तरः ॥ १० ॥
जिनवर्यो जिनवरो, जिनसिंहो जिनोद्वहः ।
जिनर्षभो जिनवृषो, जिनरत्नं जिनोरसम् ॥ ११ ॥
जिनेशो जिनशार्दूलो, जिनाग्र्यो जिनपुङ्गवः ।
जिनहंसो जिनोत्तंसो, जिननागो जिनाग्रणीः ॥ १२ ॥
जिनप्रवेकश्च जिन—ग्रामणीर्जिनसत्तमः ।
जिनप्रवर्हः परम–जिनो जिनपुरोगमः ॥ १३ ॥
जिनश्रेष्ठो जिनज्येष्ठो, जिनमुख्यो जिनाग्रिमः ।
श्रीजिनश्चोत्तमजिनो, जिनवृन्दारकोऽरिजित् ॥ १४ ॥
निर्विघ्नो विरजाः शुद्धो, निस्तमस्को निरञ्जनः ।
धातिकर्मान्तकः कर्म–मर्मावित्कर्महाऽनघः ॥ १५ ॥
वीतरागोऽक्षुद(व)द्वेषो, निर्मोहो निर्मदोऽगदः ।
वैतृष्णो निर्ममोऽसङ्गो, निर्भयो वीतविस्मयः ॥ १६ ॥
अस्वप्नो निःश्रमोऽजन्मा, निस्वेदो निर्जरोऽमरः ।
अरत्यतीतो निश्चिन्तो, निर्विषादस्त्रिषष्टिजित् ॥ १७ ॥

॥ इति जिनशतम् ॥ १

सर्वज्ञः सर्ववित्सर्व—दर्शी सर्वावलोकनः ।
अनन्तविक्रमोऽनन्त–वीर्योऽनन्तसुखात्मकः ॥ १८ ॥

अनन्तसौख्यो विश्वज्ञो, विश्वदृश्वाऽखिलार्थदृक् ।
न्यक्षदृग् विश्वतश्चक्षु–र्विश्वचक्षुरशेषवित् ॥ १९ ॥

आनन्दः परमानन्दः, सदानन्दः सदोदयः ।
नित्यानन्दो महानन्दः, परानन्दः परोदयः ॥ २० ॥

परमोजः पर तेजः, पर धाम पर महः ।
प्रत्यग्ज्योतिः पर ज्योति., पर ब्रह्म पर रहः ॥ २१ ॥

प्रत्यगात्मा प्रबुद्धात्मा, महात्माऽऽत्ममहोदयः ।
परमात्मा प्रशान्तात्मा, परात्माऽऽत्मनिकेतनः ॥ २२ ॥

परमेष्ठी महेष्ठात्मा, श्रेष्ठात्मा स्वात्मनिष्ठितः ।
ब्रह्मनिष्ठो महानिष्ठो, निरूढात्मा दृढात्मदृक् ॥ २३ ॥

एकविद्यो महाविद्यो, महाब्रह्मपदेश्वर' ।
पञ्चब्रह्ममयः सार्वः, सर्वविद्येश्वरः स्वभू' ॥ २४ ॥

अनन्तधीरनन्तात्मा––ऽनन्तशक्तिरनन्तदृक् ।
अनन्तानन्तधीशक्ति–रनन्तचिदनन्तमुत् ॥ २५ ॥

सदाप्रकाशः सर्वार्थ––साक्षात्कारी समग्रधीः ।
कर्मसाक्षी जगच्चक्षु–रलक्ष्यात्माऽचलस्थितिः ॥ २६ ॥

निराबाधोऽप्रतर्क्यात्मा, धर्मचक्री विदांवरः ।
भूतात्म सहजज्योति––र्विश्वज्योतिरतीन्द्रियः ॥ २७ ॥

केवली केवलालोको, लोकालोकविलोकनः ।
विविक्तकेवलो व्यक्तः, शरण्योऽचिन्त्यवैभवः ॥ २८ ॥

विश्वभृद्विश्वरूपात्मा, विश्वात्मा विश्वतोमुखः ।
विश्वव्यापी स्वयंज्योति–रचिन्त्यात्माऽमलप्रभः ॥ २९ ॥

महौदार्यो महाबोधि–र्महालाभो महोदयः ।
महोपभोगः सुगति––र्महाभोगो महाबलः ॥ ३० ॥

॥ इति सर्वज्ञशतम् ॥ २

यज्ञार्हो भगवानर्ह–न्महार्हो मघवार्चितः ।
भूतार्थयज्ञपुरुषो, भूतार्थक्रतुपूरुषः ॥ ३१ ॥

पूज्यो भट्टारकस्तत्र––भवानत्रभवान्महान् ।
महामहोऽर्हस्तत्रायु––स्ततो दीर्घायुरर्घ्यवाक् ॥ ३२ ॥

आराध्यः परमाराध्यः, पञ्चकल्याणपूजितः ।
दृग्विशुद्धिगणोदग्रो, वसुधारार्चितास्पदः ॥ ३३ ॥

सुस्वप्नदर्शी दिव्यौजाः, शचीसेवितमातृकः ।
स्याद्रत्नगर्भश्रीपूतः, गर्भगर्भोत्सवोत्थितः ॥ ३४ ॥

दिव्योपचारोपचितः, पद्मभूः निष्कलः स्वजः ।
सर्वीयजन्मा पुण्याङ्गो, भास्वानुद्भूतदैवतः ॥ ३५ ॥

विश्वविज्ञातसंभूति–र्विश्वदेवागमाद्भुतः ।
शचीसृष्टप्रतिच्छन्दः, सहस्राक्षो दृगुत्सवः ॥ ३६ ॥

नृत्यदैरावतासीनः, सर्वशक्रनमस्कृतः ।
हर्षाकुलामरखग–श्चारणर्षिमनोत्सवः ॥ ३७ ॥

व्योमविष्णुपदारक्षा–स्नानपीठायिताद्रिराट् ।
तीर्थेशंमन्यदुग्धाब्धि–स्नानाम्बुस्नातवासवः ॥ ३८ ॥

गन्धाम्बुपूतत्रैलोक्यो, वज्रसूचिशुचिश्रवा ।
कृतार्थितशचीहस्ता-शक्रो धृष्टैनामकः ॥ ३९ ॥
शक्रारब्धानन्दनृत्यः, शचीविस्मापिताम्बिक ।
इन्द्रनृत्यन्तपितृको, रैदपूर्णमनोरथ ॥ ४० ॥
आज्ञार्थीन्द्रकृतासेवो, देवर्षीष्टशिवोद्यम. ।
दीक्षाक्षणक्षुब्धजग-द्भूर्भुव.स्वःपतीडितः ॥ ४१ ॥
कुवेरनिर्मितास्थानः, श्रीयुग्योगीश्वरार्चितः ।
ब्रह्मेड्यो ब्रह्मविद्वेद्यो, याज्यो यज्ञपतिक्रतुः ॥ ४२ ॥
यज्ञाङ्गममृत यज्ञो, हवि.स्तुत्यः स्तुतीश्वरः ।
भावो महामहपति—र्महायज्ञोऽग्रयाजक ॥ ४३ ॥
दयायागो जगत्पूज्यः पूजार्हो जगदर्चितः ।
देवाधिदेवः शक्रार्च्यो, देवदेवो जगद्गुरुः ॥ ४४ ॥
संहूतदेवसंघार्च्यः, पद्मयानो जयध्वजी ।
भामण्डली चतुः षष्टी-चामरो देवदुन्दुभिः ॥ ४५ ॥
वागस्पृष्टासनश्छत्र-त्रयराट् पुष्पवृष्टिभाक् ।
दिव्याशोको मानमर्दी, सगीतार्होऽष्टमङ्गलः ॥ ४६ ॥

इति यज्ञार्हशतम् ॥ ३

तीर्थकृत्तीर्थसृट् तीर्थ-करस्तीर्थकरः सुदृक् ।
तीर्थकर्ता तीर्थभर्ता, तीर्थेशस्तीर्थनायकः ॥ ४७ ॥
धर्मतीर्थकरस्तीर्थ-प्रणेता तीर्थकारकः ।
तीर्थप्रवर्तकस्तीर्थ-विधास्तीर्थविधायकः ॥ ४८ ॥

सत्यतीर्थकरस्तीर्थ–सेव्यस्तैर्थिकतारकः ।
सत्यवाक्याधिपः सत्यः, शासनोऽप्रतिशासनः ॥ ४९ ॥

स्याद्वादी दिव्यगीर्दिव्य–ध्वनिरव्याहतार्थवाक् ।
पुण्यवागर्थ्यवागर्ध–मागधीयोक्तिरिद्धवाक् ॥ ५० ॥

अनेकान्तदिगेकान्त–ध्वान्तभिद्दुर्नयान्तकृत् ।
सार्थवागप्रयत्नोक्तिः, प्रतितीर्थमदघ्नवाक् ॥ ५१ ॥

स्यात्कारध्वजवागीहा–पेतवागचलौष्ठवाग् ।
अपौरुषेयवाक् शास्ता–रुद्धवाक् सप्तभङ्गिवाक् ॥ ५२ ॥

अवर्णगीः सर्वभाषा–मयगीर्व्यक्तवर्णगीः ।
अमोघवागक्रमवा–गवाच्यानन्तवागवाक् ॥ ५३ ॥

अद्वैतगीः सूनृतगीः, सत्यानुभयगीः सुगीः ।
योजनव्यापिगीः क्षीर–गौरगीस्तीर्थकृत्त्वगीः ॥ ५४ ॥

भव्यैकः श्रव्यगुः सद्गु–श्चित्रगुः परमार्थगुः ।
प्रशान्तगुः प्राश्निकगुः, सुगुर्नियतकालगुः ॥ ५५ ॥

सुश्रुतिः सुश्रुतो याज्य–श्रुतिः सुश्रुन्महाश्रुतिः ।
धर्मश्रुतिः श्रुतिपतिः, श्रुत्युद्धर्ता ध्रुवश्रुतिः ॥ ५६ ॥

निर्वाणमार्गदिग्मार्ग–देशकः सर्वमार्गदिक् ।
सारस्वतपथस्तीर्थ–परमोत्तमतीर्थकृत् ॥ ५७ ॥

देष्टा वाग्मीश्वरो धर्म–शासको धर्मदेशकः ।
वागीश्वरस्त्रयीनाथ–स्त्रिभङ्गीशो गिरां पतिः ॥ ५८ ॥

सिद्धाज्ञः सिद्धवागाज्ञा—सिद्धः सिद्धैकशासनः ।
जगत्प्रसिद्धसिद्धान्त—सिद्धमन्त्रः सुसिद्धवाक् ॥ ५९ ॥
शुचिश्रवा निरुक्तोक्ति—स्तन्त्रकृन्न्यायकृत् (शुचिः) ।
महिष्ठवाग्महोनादः, कवीन्द्रो दुन्दुभिस्वनः ॥ ६० ॥
॥ इति तीर्थकृच्छतम् ॥ ४
नाथः पतिः परिवृढ', स्वामी भर्ता विभुः प्रभु' ।
ईश्वरोऽधीश्वरोऽधीशो—ऽधीशानोऽधीशितेशिता ॥ ६१ ॥
ईशोऽधिपतिरीशान, इन इन्द्रोऽधिपोऽधिभूः ।
महेश्वरो महेशानो, महेश, परमेशिता ॥ ६२ ॥
अधिदेवो महादेवो, देवस्त्रिभुवनेश्वर' ।
विश्वेशो विश्वभूतेशो, विश्वेड् विश्वेश्वरोऽधिराट् ॥ ६३ ॥
लोकेश्वरो लोकपति—र्लोकनाथो जगत्पति' ।
त्रैलोक्यनाथो लोकेशो, जगन्नाथो जगत्प्रभुः ॥ ६४ ॥
पिता परः परतरो, जेता जिष्णुरनीश्वरः ।
कर्ता प्रभूष्णुर्भ्राजिष्णु', प्रभविष्णुः स्वयप्रभः ॥ ६५ ॥
लोकजिद्विश्वजिद्विश्व—विजेता विश्वजित्वरः ।
जगज्जेता जगज्जैत्रो, जगज्जिष्णुर्जगज्जयी ॥ ६६ ॥
अग्रणीर्ग्रामणीर्नेता, भूर्भुवःस्वरधीश्वरः ।
धर्मनायक ऋद्धीशो, भूतनाथश्च भूतभृत् ॥ ६७ ॥
गतिः पाता वृषो वर्यो, मन्त्रकृच्छुभलक्षणः ।
लोकाध्यक्षो दुराधर्षो, भव्यबन्धुर्निरुत्सुक ॥ ६८ ॥

धीरो जगद्धितो जय्य—स्त्रिजगत्परमेश्वरः ।
विश्वासी सर्वलोकेशो, विभवो भुवनेश्वरः ॥ ६९ ॥
त्रिजगद्वल्लभस्तुङ्ग—स्त्रिजगन्मङ्गलोदयः ।
धर्मचक्रायुधः सद्यो—जातस्त्रैलोक्यमङ्गलम् ॥ ७० ॥
वरदोऽप्रतिघोऽच्छेद्यो, द्रढीयानभयङ्करः ।
महाभागो निरौपम्यो*. धर्मसाम्राज्यनायकः ॥ ७१ ॥

॥ इति नाथशतम् ॥ ५

योगी प्रव्यक्तनिर्वेदः, साम्यारोहणतत्परः ।
सामायिकी सामयिको, निःप्रमादोऽप्रतिक्रमः ॥ ७२ ॥
यमः प्रधाननियमः, स्वभ्यस्तपरमासनः ।
प्राणायामचणः सिद्ध—प्रत्याहारो जितेन्द्रियः ॥ ७३ ॥
धारणाधीश्वरो धर्म—ध्याननिष्ठः समाधिराट् ।
स्फुरत्समरसीभाव, एकीकरणनायकः ॥ ७४ ॥
निर्ग्रन्थनाथो योगीन्द्र+, ऋषिः साधुर्यतिर्मुनिः ।
महर्षिः साधुधौरेयो, यतिनाथो मुनीश्वरः ॥ ७५ ॥
महामुनिर्महामौनी, महाध्यानी महाव्रती ।
महाक्षमो महाशीलो, महाशान्तो महादमः ॥ ७६ ॥
निर्लेपो निर्भ्रमस्वान्तो, धर्माध्यक्षो दयाध्वजः ।
ब्रह्मयोनिः स्वयंबुद्धो, ब्रह्मज्ञो ब्रह्मतत्त्ववित् ॥ ७७ ॥

---

* 'निरौपम्यौ' प्रतौ ।

पूतात्मा स्नातको दान्तो, भदन्तो नीतमत्सरः ।
धर्मवृक्षायुधोऽक्षोभ्य प्रभूतात्माऽमृतोद्भवः ॥ ७८ ॥
मन्त्रमूर्त्तिः स्व(सु)सौम्यात्मा स्वतन्त्रो ब्रह्मसम्भवः ।
सुप्रसन्नो गुणाम्भोधि, पुण्यापुण्यनिरोधकृत् ॥ ७९ ॥
सुसंवृत्तः सुगुप्तात्मा, सिद्धात्मा निरुपप्लवः ।
महोदर्को महोपायो, जगदेकपितामहः ॥ ८० ॥
महाकारुणिको गुण्यो, महाक्लेशाङ्कुश. शुचि ।
अरिंजय सदायोग., सदाभोग' सदाधृति ॥ ८१ ॥
परमौदासिन् व्यतास्थीत', सत्याशीः शान्तनायकः ।
अपूर्ववेद्यो योगज्ञो, धर्ममूर्त्तिरधर्मधु(धु)क् ॥ ८२ ॥
ब्रह्मेद् महाब्रह्मपति', कृतकृत्यः कृतक्रतु' ।
गुणाकरो गुणोच्छेदी, निर्निमेषो निराश्रयः ॥ ८३ ॥
सूरि सुनयतत्त्वज्ञो, महामैत्रीमयः शमी ।
प्रक्षीणबन्धो निर्द्वन्द्वः, परमर्षिरनन्तग. ॥ ८४ ॥

॥ इति योगिशतम् ॥ ६

निर्वाण' सागर प्राज्ञै-र्महासाधुरुदाहृत ।
विमलाभोऽथ शुद्धाभ , श्रीधरो दत्त इत्यपि ॥ ८५ ॥
अमलाभोऽप्युद्धरोऽग्नि , संयमश्च शिवस्तथा ।
पुष्पाञ्जलि' शिवगुण , उत्साहो ज्ञानसंज्ञकः ॥ ८६ ॥
परमेश्वर इत्युक्तो विमलेशो यशोधर ।
कृष्णो ज्ञानमति शुद्ध—मति श्रीभद्रशान्तयुक् ॥ ८७ ॥

वृषभस्तद्वदजितः, संभवश्चाभिनन्दनः ।
मुनिभिः सुमतिः पद्म–प्रभः प्रोक्तः सुपार्श्वकः ॥ ८८ ॥

चन्द्रप्रभः पुष्पदन्तः, शीतलः श्रेयसाह्वयः ।
वासुपूज्यश्च विमलो—ऽनन्तजिद्धर्म इत्यपि ॥ ८९ ॥

शान्तिः कुन्थुररो मल्लिः, सुव्रतो नमिरप्यतः ।
नेमिः पार्श्वो वर्धमानो, महावीरः स वीरकः ॥ ९० ॥

सन्मतिश्चाकथि मह–ति महावीर इत्यथ ।
महापद्मः सूरदेवः, सुप्रभश्च स्वयप्रभः ॥ ९१ ॥

सर्वायुधो जयदेवो, भवेदुदयदेवकः ।
प्रभादेव उदंकश्च, प्रश्नकीर्त्तिर्जयाभिधः ॥ ९२ ॥

पूर्णबुद्धि*र्निःकषायो, विज्ञेयो विमलप्रभः ।
बहलो निर्मलश्चित्र–गुप्तः समाधिगुप्तकः ॥ ९३ ॥

स्वयंभूश्चापि कन्दर्पो, जय नाथ इतीरितः ।
श्रीविमलो दिव्यवादो—ऽनन्तवीरोऽप्युदीरितः ॥ ९४ ॥

सूरदेवोऽथ सुविधिः, प्रज्ञापारमितोऽव्ययः ।
*पुराणपुरुषो धर्म—सारथिः शिवकीर्तनः ॥ ९५ ॥

विश्वकर्माऽक्षरोऽच्छद्म, विश्वभूर्विश्वनायकः ।
दिगम्बरो निरातङ्को, निरारेको भवान्तकः ॥ ९६ ॥

---

*'धर्म·' प्रतौ । + 'ज्येष्ठ' प्रतौ ।

दृढव्रतो नयोत्तुङ्गो, नि:कलङ्को (ङ्क) कलाधरः ।
सर्वक्लेशापहोऽक्षय्यः, क्षान्तः श्रीवृक्षलक्षण. ॥ ९७ ॥

॥ इति निर्वाणशतम् ॥ ७

ब्रह्मा चतुर्मुखो धाता, विधाता कमलासन. ।
अब्जभूरात्मभू : स्रष्टा, सुरज्येष्ठ' प्रजापतिः ॥ ९८ ॥
हिरण्यगर्भो वेदज्ञो, वेदाङ्गो वेदपारग' ।
अजो मनुः शतानन्दो, हसयानस्त्रयीमय' ॥ ९९ ॥
विष्णुस्त्रिविक्रम शौरिः, श्रीपति' पुरुषोत्तमः ।
वैकुण्ठ' पुण्डरीकाक्षो, हृषीकेशो हरि स्वभूः ॥ १०० ॥
विश्वभरोऽसुरध्वंसी माधवो बलिबन्धनः ।
अधोक्षजो मधुद्वेषी, केशवो विष्टरश्रवा' ॥ १०१ ॥
श्रीवत्सलाञ्छनः श्रीमा–नच्युतो नरकान्तक' ।
विष्वक्सेनश्चक्रपाणिः, पद्मनाभो जनार्दन ॥ १०२ ॥
श्रीकण्ठः शङ्करः शम्भुः, कपाली वृषकेतनः ।
मृत्युञ्जयो विरूपाक्षो, वामदेवस्त्रिलोचन' ॥ १०३ ॥
उमापतिः पशुपति , स्मरारिस्त्रिपुरान्तक. ।
अर्धनारीश्वरो रुद्रो, भवो भर्ग' सदाशिव' ॥ १०४ ॥
जगत्कर्ताऽन्धकाराति—रनादिनिधनो हर ।
महासेनस्तारकजि–द्गणनाथोविनायकः ॥ १०५ ॥

विरोचनः वियद्रत्नं, द्वादशात्मा विभावसुः ।
द्विजाराध्यो बृहद्भानु-श्चित्रभानुस्तनूनपात् ॥ १०६ ॥

द्विजराजः सुधारोचि—रौषधीशः कलानिधिः ।
नक्षत्रनाथः शुभ्रांशुः, सोमः कुमुदबान्धवः ॥ १०७ ॥

लेखर्षभोऽनिलः पुण्य-जनः पुण्यजनेश्वरः ।
धर्मराजो भोगिराजः, प्रचेता भूमिनन्दनः ॥ १०८ ॥

सिंहिकातनयश्छाया-नन्दनो बृहतां पतिः ।
पूर्वदेवोपदिष्टा च, द्विजराजसमुद्भवः ॥ १०९ ॥

॥ इति ब्रह्मशतम् ॥ ८

बुद्धो दशबलः शाक्यः, षडभिज्ञस्तथागतः ।
समन्तभद्रः सुगतः, श्रीघनो भूतकोटिदिक् ॥ ११० ॥

सिद्धार्थो मारजिच्छास्ता, क्षणिकैकसुलक्षणः ।
बोधिसत्त्वो निर्विकल्प-दर्शनो द्वयवाद्यपि ॥ १११ ॥

महाकृपालुर्नैरात्म्य-वादी सन्तानशासकः ।
सामान्यलक्षणचणः, पञ्चस्कन्धमयात्मदृक् ॥ ११२ ॥

भूतार्थभावनासिद्ध-श्चतुर्भूमिकशासनः ।
चतुरार्यसत्यवक्ता, निराश्रयचिदन्वयः ॥ ११३ ॥

योगो वैशेषिकस्तुच्छा-भावभित् षट्पदार्थदृक् ।
नैयायिकः षोडशार्थ-वादी पञ्चार्थवर्णकः ॥ ११४ ॥

ज्ञानान्तराध्यक्षबोधः, समवायवशार्थभित् ।
भुक्तैकसाध्यकर्मान्तो, निर्विशेषगुणामृतः ॥ ११५ ॥
सादृश्यः समीक्ष्यः कपिलः, पञ्चविंशतितत्त्ववित् ।
व्यक्ताव्यक्तज्ञविज्ञानी, ज्ञानचैतन्यभेददृक् ॥ ११६ ॥
अम्वसनिदितनान-वादी सत्कार्यवादसात् ।
त्रिप्रमाणोऽक्षप्रमाणः, स्याद्वाहकारिकाक्षदृक् ॥ ११७ ॥
क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुषो, नरो ना चेतनः पुमान् ।
अकर्त्ता निर्गुणोऽमूर्त्तो, भोक्ता सर्वगतोऽक्रियः ॥ ११८ ॥
द्रष्टा तटस्थ कूटस्थो, ज्ञाता निर्बन्धनोऽभवः ।
बहिर्विकारो निर्मोक्ष., प्रधान बहुधानकम् ॥ ११९ ॥
प्रकृति ख्यातिरारूढ-प्रकृति प्रकृतिः प्रिय. ।
प्रधानभोज्योऽप्रकृति-र्विरम्यो विकृति कृतिः ॥ १२० ॥
मीमांसकोऽस्तसर्वज्ञः, श्रुतिपूत. सदोत्सव ।
परोक्षज्ञानवादी-पावक सिद्धकर्मक ॥ १२१ ॥
चार्वाको भौतिकज्ञानो, भूताभिव्यक्तचेतनः ।
प्रत्यक्षैकप्रमाणोऽस्त-परलोको गुरुश्रुति ॥ १२२ ॥
पुरन्दरविद्धकर्णो, वेदान्ती सन्निदद्वयी ।
शब्दाद्वैती स्फोटवादी, पाखण्डघ्नो नयौघयुक् ॥ १२३ ॥

॥ इति बुद्धशतम् ॥ ९

अन्तकृत् पारकृत् तीर-प्राप्तः पारेतमः स्थितः ।
त्रिदण्डी दण्डितारातिर्ज्ञानकर्मसमुच्चयी ॥ १२४ ॥

संहृतध्वनिरुच्छन्न-योगः सप्तार्णवोपमः ।
योगस्नेहापहो योग-किट्टिनिर्लेपनोद्यतः ॥ १२५ ॥

स्थितस्थूलवपुर्योगो, गीर्म्मणो योगकार्श्यकः ।
सूक्ष्मवाक्चित्तयोगस्थः, सूक्ष्मीकृतवपुःक्रियः ॥ १२६ ॥

सूक्ष्मकायक्रियास्थायी, सूक्ष्मवाक्चित्तयोगहा ।
एकदण्डी च परम-हंसः परमसंवरः ॥ १२७ ॥

नैःकर्म्यसिद्धपरम-निर्जरः प्रज्वलत्प्रभः ।
मोघकर्मा त्रुटत्कर्म-पाशः शैलेश्यलंकृतः ॥ १२८ ॥

एकाकररसास्वादो, विश्वाकाररसाकुलः ।
अजीवन्नमृतोऽजाग्र-दसुप्तः शून्यतामयः ॥ १२९ ॥

प्रेयानयोगी चतुर-शीतिलक्षगुणो गुणः ।
निःपीतानन्तपर्यायो, विद्यासंस्कारनायकः ॥ १३० ॥

वृद्धोऽनिर्वचनीयोऽणु-रणीयाननणुप्रियः ।
प्रेष्ठा स्थेयान् स्थिरोनिष्ठः, श्रेष्ठो ज्येष्ठस्तु निष्ठितः ॥ १३१ ॥

भूतार्थःशूरो भूतार्थ-दूरः परमनिर्गुणः ।
व्यवहारसुषुप्तोऽति-जागरूकोऽतिसुस्थितः ॥ १३२ ॥

उदितोदितमाहात्म्यो, निरुपाधिरकृत्रिमः ।
अमेयमहिमाऽत्यन्त-शुद्धः सिद्धः स्वयंवरः ॥ १३३ ॥

सिद्धानुजः सिद्धपुरी–पान्थः सिद्धगणातिथिः ।
सिद्धसङ्गोन्मुखः सिद्धा–लिङ्ग्यः सिद्धोपगूहकः ॥ १३४ ॥
पुष्टोऽष्टादशसहस्र–शीलाश्वः पुण्यशम्बलः ।
वृत्ताग्रयुग्मः परम–शुक्ललेश्योपचारकृत् ॥ १३५ ॥
क्षेपिष्ठोऽन्त्यक्षणखा पञ्चलघ्वक्षरस्थिति. (?) ।
द्वासप्तविप्रकृत्यासी त्रयोदशकलिप्रणुत् (?) ॥ १३६ ॥
अवेदोऽयाजकोऽयज्यो–ऽयाज्योऽनग्निपरिग्रहः ।
अनग्निहोत्री परम–निःस्पृहोऽत्यन्तनिर्दयः ॥ १३७ ॥
अशिष्टोऽशासकोऽदीक्षो–ऽदीक्षकोऽदीक्षितोऽक्षयः ।
अगम्यगमको रम्यो, रमको ज्ञाननिर्भरः ॥ १३८ ॥
॥ इत्यन्तकृच्छतम् ॥ १०
महायोगीश्वरो द्रव्य सिद्धोऽदेहोऽपुनर्भवः ।
ज्ञानैकचिज्जीवघनः, सिद्धो लोकाग्रगामुकः ॥ १३९ ॥
॥ इत्यन्ताष्टकम् ॥
इदमष्टोत्तरं नाम्ना, सहस्रं भक्तितोऽर्हताम् ।
योऽनन्तानामधीतेऽसौ, मुक्त्यन्तां भक्तिमश्नुते ॥ १४० ॥
इदं लोकोत्तमं पुंसा–मिदं शरणमुल्वणम् ।
इदं मङ्गलमग्रीय–मिदं परमपावनम् ॥ १४१ ॥
इदमेव परं तीर्थ–मिदमेवेष्टसाधनम् ।
इदमेवाखिलक्लेश–संक्लेशक्षयकारणम् ॥ १४२ ॥
एतेषामेकमप्यर्ह–न्नाम्नामुच्चारयन्नघैः ।
मुच्यते किं पुनः सर्वा–ण्यर्थज्ञस्तु जिनायते ? ॥ १४३ ॥
॥ इत्याशाधरपण्डितकृत
जिनसहस्रनामस्तवन समाप्तम् ॥

कलिकालसर्वज्ञ

॥ श्रीहेमचन्द्राचार्यविरचितः ॥

श्रीअर्हन्नामसहस्रसमुच्चयः

अर्हन्नामापि कर्णाभ्यां, शृण्वन् वाचा समुच्चरन् ।
जीवः पीवरपुण्यश्री–र्लभते फलमुत्तमम् ॥ १ ॥

अत एव प्रतिप्रातः, समुत्थाय मनीषिभिः ।
भक्त्याऽष्टाग्रसहस्रार्ह–न्नामोच्चारो विधीयते ॥ २ ॥

श्रीमानर्हन् जिनः स्वामी, स्वयंभूः शंभुरात्मभूः ।
स्वयंप्रभुः प्रभुर्भोक्ता, विश्वभूरपुनर्भवः ॥ ३ ॥

विश्वात्मा विश्वलोकेशो, विश्वतश्चक्षुरक्षरः ।
विश्वविद् विश्वविद्ये(श्वे)शो, विश्वयोनिरनीश्वरः ॥ ४ ॥

विश्वदृश्वा विभुर्धाता, विश्वेशो विश्वलोचनः ।
विश्वव्यापी विधुर्वेधा(धाः), शाश्वतो विश्वतोमुखः ॥ ५ ॥

विश्वपो विश्वतः पादो, विश्वशीर्षः शुचिश्रवाः ।
विश्वदृग्विश्वभूतेशो, विश्वज्योतिरनश्वरः ॥ ६ ॥

विश्वसृड् विश्वसृर्विश्वेट्, विश्वभुग् विश्वनायकः ।
विश्वाशी विश्वभूतात्मा, विश्वजिद् विश्वपालकः ॥ ७ ॥

---

१. 'रनश्वरः' इति पुराणलिखितप्रतिपाठः, एवं सर्वत्र ज्ञेयम् ।

२. 'रनीश्वरः' प्रति० ।

३ 'विश्वभूर्विश्वसृड् विश्वेट् ।'

विश्वकर्मा जगद्विश्वो, विश्वमूर्त्तिर्जिनेश्वरः ।
भतमानिमनद्धर्त्ता, विश्वँवेद्यो यतीश्वरः ॥ ८ ॥

जगदर्च्यो जगद्बन्धु–र्जगच्छास्ता जगत्पिता ।
जगन्नेत्रो जगन्मैत्रो[1], जगद्दीपो जगद्गुरुः ॥ ३ ॥
स्वयंज्योतिरजोऽजन्मा, परं तेजः परं महः ।
परमात्मा शमी शान्तः, परं ज्योतिस्तमोऽपहः ॥ ४ ॥
प्रशान्तारिरनन्तात्मा, योगी योगीश्वरो गुरुः ।
अनन्तजिदनन्तात्मा[2], भव्यबन्धुरबन्धनः ॥ ५ ॥
शुद्धबुद्धिः प्रबुद्धात्मा, सिद्धार्थः सिद्धशासनः ।
सिद्धः सिद्धान्तविद् ध्येयः, सिद्धः[3] साध्यः सुधीः सुगीः ॥६॥
सहिष्णुरच्युतोऽनन्तः, प्रभविष्णुर्भवोद्भवः ।
स्वयंभूष्णुरसंभूष्णुः, प्रभूष्णुरभयोऽव्ययः ॥ ७ ॥
दिव्यभाषापतिर्दिव्यः, पूतवाक् पूतशासनः ।
पूतात्मा परमज्योति–र्धर्माध्यक्षो दमीश्वरः ॥ ८ ॥
निर्मोहो निर्मदो निःस्वो, निर्दम्भो निरुपद्रवः ।
निराधारो निराहारो, निर्लोभो निश्चलोऽचलः ॥ ९ ॥
निष्कामी निर्ममो निर्वक्[4], निष्कलङ्को निरञ्जनः ।
निर्गुणो नीरसो निर्भी–र्निर्व्यापारो निरामयः ॥ १० ॥
निर्निमेषो निराबाधो, निर्द्वन्द्वो निष्क्रियोऽनघः ।
निःशङ्कश्च निरातङ्को, निष्फलो[5] निर्मलोऽमलः ॥ ११ ॥

इति श्रीअर्हन्नामसहस्रसमुच्चये द्वितीयशतप्रकाशः ॥ २ ॥

---

१ 'जगन्मित्रं' इति पाठ. साधुः । २ 'दचिन्त्यात्मा' साधुः ।
३ 'शुद्धः' साधुः । ४ 'नीरुक्' । ५. निष्कलः ।

तीर्थकृत्तीर्थसृट् तीर्थ-ङ्करस्तीर्थकरः सुदृग् ।
तीर्थकर्ता तीर्थभर्ता, तीर्थशस्तीर्थनायकः ॥ १ ॥
सुतीर्थोऽधिपतिस्तीर्थ-सेव्यस्तीर्थिकनायकः ।
धर्मतीर्थकरस्तीर्थ-प्रणेता तीर्थकारकः ॥ २ ॥
तीर्थाधीशो महातीर्थ-स्तीर्थस्तीर्थविधायकः ।
सत्यतीर्थकरस्तीर्थ-सेव्यस्तीर्थिकतायकः ॥ ३ ॥
तीर्थनाथस्तीर्थराज-स्तीर्थेट् तीर्थप्रकाशकः ।
तीर्थवन्द्यस्तीर्थमुख्य-स्तीर्थाराध्यः सुतीर्थिकः ॥ ४ ॥
स्थविष्ठः स्थविरो ज्येष्ठः, श्रेष्ठः प्रष्ठो वरिष्ठधीः ।
स्थेष्ठो गरिष्ठो बंहिष्ठः, श्रेष्ठोऽणिष्ठो गरिष्ठधीः ॥ ५ ॥
विभवो विभयो वीरो, विशोको विजरो जरन् ।
विरागो विमदोऽव्यक्तो, विविक्तो वीतमत्सरः ॥ ६ ॥
वीतरागो गतद्वेषो, वीतमोहो विमन्मथः ।
वियोगो योगविद् विद्वान्, विधाता विनयी नयी ॥ ७ ॥
क्षान्तिमान् पृथिवीमूर्तिः, शान्तिभाक् सलिलात्मकः ।
वायुमूर्तिरसङ्गात्मा, वह्निमूर्तिरधर्मधुक् ॥ ८ ॥
सुयज्वा यजमानात्मा, सुत्रामस्तोमपूजितः ।
ऋत्विग् यज्ञपतिर्याज्यो यज्ञाङ्गममृतं हविः ॥ ९ ॥

---

१ 'सुतीर्थाधिपतिस्तीर्थ पतिस्तीर्थप्रवर्तक'। २ 'स्तीर्थमुख्य'। ३ 'नायक'। ४ 'गी'। ५ 'विविद्विषो'। ६ 'धक्'। ७ 'सुत्रासुत्रामपूजित'।

अग्रणीर्ग्रामणीर्गण्यो, गं[1]ण्यगण्यो गणाग्रणीः ।
गणाधिपो गणाधीशो, गणज्येष्ठो गणार्चितः ॥ ४ ॥

गुणाकरो गुणाम्भोधि-र्गुणज्ञो गुणवान् गुणी ।
गुणाँ[2]दरो गुणोच्छेदी, सुं[3]गुणोऽगुणवर्जितः ॥ ५ ॥

शरण्यः पुण्यवाक् पूतो, वरेण्यः पुण्यगीर्गुणः ।
अगण्यपुण्यधीः पुण्यः, पुण्यकृत् पुण्यशासनः ॥ ६ ॥

अतीन्द्रोऽतीन्द्रियोऽधीन्द्रो, महेन्द्रोऽतीन्द्रियार्थदृक् ।
अं[4]तीन्द्रियो महेन्द्रार्च्यो, महेन्द्रमहितो महान् ॥ ७ ॥

उद्भवः कारणं कर्ता, पारगो भवतारकः ।
अग्राह्यो गहनं गुं[5]ह्यः, परर्द्धिः परमेश्वरः ॥ ८ ॥

अनन्तर्द्धिरमेयर्द्धि-रचिन्त्यर्द्धिः समग्रधीः ।
प्रा[6]ग्र्यः प्राग्र्यहरोऽत्यग्रः, प्रत्यं[7]ग्रोऽग्रोऽग्रिमोऽग्रजः ॥ ९ ॥

प्रा[8]णकः प्रणवः प्राणः, प्राणदः प्राणितेश्वरः ।
प्रधानमात्मा प्रकृतिः, परमः परमोदयः ॥ १० ॥

इति श्रीअर्हन्नामसहस्रसमुच्चये पञ्चमशतप्रकाशः ॥ ५ ॥

---

१ 'गणी गुण्यो'। २ 'गुणादरी'। ३ 'सगुणो गुणव'। ४ अनिन्द्रोऽहमिन्द्राच्र्यो । ५ 'गुह्य'। ६ 'प्राग्र्यः प्राग्र्याहरो'। ७ 'ऽग्र्यो'। ८ 'प्रामवः'।

महाजिनो महाबुद्धो, महानन्दा महाशिव ।
महाविष्णुर्महाजिष्णु–महानाथो महेश्वर ॥ १ ॥
महादेवो महास्वामी, महाराजो महाप्रभु ।
महाचन्द्रो महादित्यो, महाशूरो महागुरुः ॥ २ ॥
महातपा महातेजा, महोदर्को महोमयः ।
महायशो महाधाम, महासत्त्वो महाबलः ॥ ३ ॥
महाधैर्यो महावीर्यो, महाकान्तिर्महाद्युति ।
महाशक्तिर्महाज्योति–र्महाभूतिर्महाद्युति ॥ ४ ॥
महामतिर्महानीति–र्महाक्षान्तिर्महाकृतिः ।
महाकीर्तिर्महास्फूर्ति–र्महाप्राणो महोदय ॥ ५ ॥
महाभागो महाभोगो, महारूपो महावपु ।
महादानो महाज्ञानो, महाशास्ता महामहा ॥ ६ ॥
महामुनिर्महामौनी, महाध्यानो महादम ।
महाक्षमो महाशीलो, महायोगी महालय ॥ ७ ॥
महाव्रतो महायज्ञो, महाश्रेष्ठो महाकवि ।
महामन्त्रो महातन्त्रो, महोपायो महानयः ॥ ८ ॥
महाकारुणिको मन्ता, महानादो महायतिः ।
महामोदो महाघोषो, महेज्यो महसां पति ॥ ९ ॥

१ 'महाबुद्धौ' । 'महादित्या' । २ 'महायशा' ।
३ 'महाधामा' । ४ 'महाद्युय' । ५ 'महाप्राणो' ।
६ 'महाद्युता' । ७ 'महानागा' ।

सुघोषः सुमुखः सौम्यः, सुखदः सुहितः सुहृद् ।
सुगुप्तो गुप्तिभृद् गोप्ता, गुप्ताक्षो गुप्तमानसः ॥ ११ ॥

इति श्री अर्हन्नामसहस्रसमुच्चये सप्तमशतप्रकाशः ॥ ७ ॥

बृहद् बृहस्पतिर्वाग्मी, वाचस्पतिरुदारधीः ।
मनीषी धिषणो धीमान्, शेमुषीशो गिरांपतिः ॥ १ ॥

नैकरूपो नयोत्तुंगो, नैकात्मा नैकधर्मकृत् ।
अविज्ञेयः प्रतर्क्यात्मा, कृतज्ञः कृतलक्षणः ॥ २ ॥

ज्ञानगर्भो दयागर्भो, रत्नगर्भः प्रभास्वरः ।
पद्मगर्भो जगद्गर्भो, हेमगर्भः सुदर्शनः ॥ ३ ॥

लक्ष्मीशः सदयोऽध्यक्षो, दृढयोनिर्नयीशिता ।
मनोहरो मनोज्ञोऽर्हो, धीरो गम्भीरशासनः ॥ ४ ॥

धर्मयूपो दयायोगो, धर्मनेमिर्मुनीश्वरः ।
धर्मचक्रायुधो देवः, कर्महा धर्मघोषणः ॥ ५ ॥

स्थेयान् स्थवीयान् नेदीयान्, दवीयान् दूरदर्शनः ।
सुस्थितः स्वास्थ्यभाक् सुस्थो, नीरजस्को गतस्पृहः ॥ ६ ॥

वश्येन्द्रियो विमुक्तात्मा, निःसपत्नो जितेन्द्रियः ।
श्रीनिवासश्चतुर्वक्त्र–श्चतुरास्यश्चतुर्मुखः ॥ ७ ॥

---

१ 'त्रिदशो'। २ 'नई'। ३ 'ज्ञा'। ४ 'यागो'। ५ 'मु'। ६ 'स्वस्थित'। ७ 'स्वस्थो'।

अध्यात्मगम्योऽगम्यात्मा, योगात्मा योगिवन्दितः ।
सर्वत्रगः सदाभावी, त्रिकालविषयार्थदृक् ॥ ८ ॥
शङ्करः सुखदो दान्तो, दमी क्षान्तिपरायणः ।
स्वानन्दः परमानन्दः, सूक्ष्मवर्चाः परापरः ॥ ९ ॥
अमोघोऽमोघवाक् स्वाज्ञो, दिव्यदृष्टिरगोचरः ।
सुरूपः सुभगस्त्यागी, मूर्तोऽमूर्तः समाहितः ॥ १० ॥
एकोऽनेको निरालम्बो-ऽनीदृग्नाथो निरन्तरः ।
प्रार्थ्योऽस्पर्ध्यः समभ्यर्च्य-स्त्रिजगन्मङ्गलोदयः ॥ ११ ॥

इति श्रीमदर्हन्नामसहस्रसमुच्चयेऽष्टमशतप्रकाशः ॥ ८ ॥

ईशोऽधीशोऽधिपोऽधीन्द्रो, ध्येयोऽमेयो दयामयः ।
शिवः शूरः शुभः सारः, शिष्टः स्पष्टः स्फुटोऽस्फुटः ॥ १ ॥
इष्टः पुष्टः क्षमोऽक्षामो-ऽकायोऽमायोऽभयोऽमयः ।
स्थाणुः स्थेयोऽणुः स्थूलो, जीर्णो नव्यो गुरुर्लघुः ॥ २ ॥
स्वभूः स्वात्मा स्वयंबुद्धः, स्वेशः स्वैरीश्वरः स्वरः ।
आद्योऽलक्ष्योऽपरोऽस्पर्शो-ऽस्पर्शोऽग्राह्योऽस्त्रिदशोऽस्पृहः ॥ ३ ॥
दीप्तोऽलेप्योऽगम्योऽगन्धो-ऽच्छेद्योऽभेद्योऽजरोऽमरः ।
प्राणी धन्यो यतिः पूज्यो मखोऽर्च्यः प्रणामी यमी ॥ ४ ॥

---

१ 'भागदृक्' । २ 'याग' । ३ 'स्वज्ञ' । ४ 'सूक्ष्मवर्णो दातार' । ५ 'दृष्टिर्दिव्यगोचर' । ६ 'अनघोऽमय' । ७ 'ऽस्पर्शोऽदृश्यश्च स्पृहो' । ८ 'क्षा' । ९ 'ऽच्छेद्य' । १० 'दीनो' ।

श्रीशः श्रीन्द्रः शुभः सुश्री रुत्तमश्रीः श्रियः पतिः ।
श्रीपतिः श्रीपरः श्रीपः, मच्छ्रीः श्रीयुक् श्रिया श्रितः ॥ ५ ॥

ज्ञानी तपस्वी तेजस्वी, यशस्वी बलवान् बली ।
दानी ध्यानी मुनिर्मौनी, लयी लक्ष्यः क्षयी क्षमी ॥ ६ ॥

लक्ष्मीवान् भगवान् श्रेयान् , सुगतः सुतनुर्बुधः ।
बुद्धो वृद्धः स्वयंसिद्धः, प्रोच्चः प्रांशुः प्रभामयः ॥ ७ ॥

इति श्रीअर्हन्नामसहस्रसमुच्चये नवमशतप्रकाशः ॥ ९ ॥

आदिदेवो देवदेवः, पुरदेवोऽधिदेवता ।
युगादीशो युगाधीशो, युगमुख्यो युगोत्तमः ॥ १ ॥

दीप्तः प्रदीप्तः सूर्याभो–ऽरिघ्नोऽविघ्नोऽघनो घनः ।
शत्रुघ्नः प्रतिवस्तुज्ञो–ऽसंगः स्वज्ञोऽग्रगः सुगः ॥ २ ॥

स्याद्वादी दिव्यगीर्दिव्य–ध्वनिरुद्दामगीः प्रगीः ।
पुण्यवागर्ह्यवागर्धऽमागधीयोक्तिरिद्धगीः ॥ ३ ॥

पुराणपुरुषोऽपूर्वो–पूर्वश्रीः पूर्वदेशकः ।
जिनदेवो जिनाधीशो. जिननाथो जिनाग्रणीः ॥ ४ ॥

शान्तिनिष्ठो मुनिज्येष्ठः, शिवतातिः शिवप्रदः ।
शान्तिकृत् शान्तिदः शान्तिः, कान्तिमान् कामितप्रदः ॥ ५ ॥

---

१ 'श्रीपरः श्रीवर'। २ 'क्ष्म'। ३ 'वो पुरु'।
४ 'गर्थ्यवा'। ५ 'पुरुष पूर्वो'।

श्रियां निधिरधिष्ठान-मप्रतिष्ठ प्रतिष्ठित: ।
सुस्थिर: स्थावर: स्थाणु:, पृथीयान् प्रथित: पृथु: ॥ ६ ॥

पुण्यराशि: श्रियोराशि-स्तेजोराशिरसंशयी ।
ज्ञानोदधिरनन्तौजा, ज्योतिर्मूर्तिरनन्तधी: ॥ ७ ॥

त्रिगानोऽप्रतिमो भिक्षु-र्मुमुक्षुर्मुनिपुङ्गव ।
अनिद्रालुरतन्द्रालु-र्जागरूक प्रमामय: ॥ ८ ॥

कर्मण्य कर्मठोऽकुण्ठो, भद्रो भद्रोऽभयङ्कर: ।
लोकोत्तरो लोकपति-र्लोकेशो लोकवत्सल: ॥ ९ ॥

त्रिलोकीनगरीशास्ता-स्त्रिनत्रिपुरान्तक ।
त्र्यम्बक केवलालोक, केवली केवलेक्षण ॥ १० ॥

समन्तभद्र शान्तादि-र्धर्माचार्यो दयानिधि ।
सूक्ष्मदर्शी सुमार्गज्ञ, कृपालु र्मार्गदेशक ॥ ११ ॥

प्रतिहार्योज्ज्वलत्कीर्ता-निरपा निरालापय ।
सिद्धानन्तचतुष्कश्री-र्जीयाच्छ्रीजिनपुङ्गव ॥ १२ ॥

इति श्री[illegible]
[illegible] ॥ १० ॥

---

१ 'स्थाणु'। २ 'प्रथीय'। ३ 'हिमा प्र'। ४ 'ज्ञाम'। ५ 'मार्गदर्शि'। ६ '[illegible]'। ७ '[illegible]'। ८ 'आवर'।

उपसंहार :—

एतदष्टोत्तरं नाम-सहस्रं श्रीमदर्हतः ।
भव्याः पठन्तु सानन्दं, महानन्दैककारणम् ॥ १३ ॥

इत्येतज्जिनदेवस्य, जिननाममहस्रकम् ।
सर्वापराधशमनं, परं भक्तिविवर्धनम् ॥ १४ ॥

अक्षयं त्रिषु लोकेषु, सर्वस्वर्गैकसाधनम् ।
स्वर्गलोकैकसोपानं, सर्वदुःखैकसाधनम् ॥ १५ ॥

समस्तदुःखहं सद्यः, परं निर्वाणदायकम् ।
कामक्रोधादिनिःशेष-मनोमलविशोधनम् ॥ १६ ॥

शान्तिदं पावनं नृणां, महापातकनाशनम् ।
सर्वेषां प्राणिनामाशु सर्वाभीष्टफलप्रदम् ॥ १७ ॥

जगज्जाड्यप्रशमनं सर्वविद्याप्रवर्त्तकम् ।
राज्यदं राज्यभ्रष्टानां, रोगिनां(णां) सर्वरोगहृत् ॥ १८ ॥

वन्ध्यानां सुतदं चाशु, क्षीणानां जीवितप्रदम् ।
भूतग्रहविषध्वंसि, श्रवणात् पठनाज्जपात् ॥ १९ ॥

॥ इति श्रीहेमचन्द्राचार्यविरचितः
श्री अर्हन्नामसहस्रसमुच्चयः ॥

कलि काल सवज्ञ श्रीमान् हेमचन्द्राचाय विरचित

॥ श्री जिन सहस्त्र नाम स्त्रोत्त का भाषातर ॥

जिनेश्वर का नाम कानद्वारा श्रवण करने से या उचार करने से पुष्टपुण्यरूपी लक्ष्मीवाले आत्मा उत्तम फलको प्राप्त होता है। इसलिए बुद्धिमान आत्मा को हर रोज प्रात काल उठकर भक्ति पूर्वक जिनेश्वर का १००८ नामों का उच्चार करना।

"प्रथम १०० नामोच्चार"

१ श्रीमान्	१५ विश्वतश्चक्षु	२९ शाश्वत
२ अर्हन्	१६ अक्षर	३० विश्वतोमुख
३ जिन	१७ विश्वविद्	३१ विश्वप
४ स्वामी	१८ विश्वविद्येश	३२ विश्वत:पाद
५ स्वयभू	१९ विश्वयोनी	३३ विश्वशीर्ष
६ शभू	२० अनीश्वर	३४ शुचिश्रवा
७ आत्मभू	२१ विश्वदृश्वा	३५ विश्वदृशू
८ स्वयप्रभू	२२ विभु	३६ विश्वभूतेश
९ प्रभू	२३ धाता	३७ विश्वज्योति
१० भोक्ता	२४ विश्वेश	३८ अनश्वर
११ विश्वभू	२५ विश्वलोचन	३९ विश्वसृट्
१२ अपुनर्भव	२६ विश्वव्यापी	४० विश्वट्ट
१३ विश्वात्मा	२७ विधु	४१ विश्वेट्
१४ विश्वलोकेश	२८ वेधा	४२ विश्वसृक्

४३ विश्वनायक
४४ विश्वाशी
४५ विश्वभूतात्मा
४६ विश्वजित्
४७ विश्वपालक
४८ विश्वकर्मा
४९ जगद्विश्व
५० विश्वमूर्ति
५१ जिनेश्वर
५२ भूतभाविभवद्
५३ विश्ववैद्य [भर्ता
५४ यतीश्वर
५५ सर्वादि
५६ सर्वदृक्
५७ सार्व
५८ सर्वज्ञ
५९ सर्वदर्शन
६० सर्वात्मा
६१ सर्वलोकेश
६२ सर्ववित्
६३ सर्वलोकजित्
६४ सर्वग
६५ सुश्रुत
६६ सुश्रु
६७ सुवाक्
६८ सूरि
६९ बहुश्रुत
७० सहस्रशीर्ष
७१ क्षेत्रज्ञ
७२ सहस्राक्ष
७३ सहस्रपात्
७४ युगादिपुरुष
७५ ब्रह्मा
७६ पचब्रह्ममय
७७ शिव
७८ ब्रह्मविद्
७९ ब्रह्मतत्त्वज्ञ
८० ब्रह्मयोनि
८१ अयोनिज
८२ ब्रह्मनिष्ठ
८३ परब्रह्म
८४ ब्रह्मात्मा
८५ ब्रह्मसंभव
८६ ब्रह्मेंद्र
८७ ब्रह्मपति
८८ ब्रह्मचारी
८९ ब्रह्मपदेश्वर
९० विष्णु
९१ जिष्णु
९२ जयी
९३ जेता
९४ जिनेंद्र
९५ जिनपुंगव
९६ पर
९७ परतर
९८ सूक्ष्म
९९ परमेष्ठी
१०० सनातन

॥ इति श्री अर्हन्नाम सहस्र समुच्चये प्रथम शत प्रकाश ॥

द्वितिय १०० नाम

१ जिननाथ
जगन्नाथ
जगदस्वामी
जगत् प्रभु
५ जगत पूज्य
जगद्वद्य
जगदीश
जगत्पति
जगनेता
१० जगज्जेता
जगन्मान्य
जगद्विभु
जगज्ज्येष्ठ
जगत्श्रष्ठे
१५ जगत्ध्यये
जगत् हित
जगदर्च्य
जगद्बन्धु
जगत्शास्ता
२० जगत्पिता

जगन्नेत्र
जगन्मित्र
जगतदीप
जगद्गुरू
२५ स्वयज्योति
अज
अजन्मा
परतज
परमह
३० परमातमा
शमी
शात
परज्योति
तमोपह
३५ प्रशातारि
अनतात्मा
योगी
योगीश्वर
गुरु
४० अनतजित्

अनतात्मा
भव्यबन्धु
अबधन
शुद्धबुद्धि
४५ प्रबुद्धात्मा
सिद्धार्थ
सिद्धशामन
सिद्ध
सिद्धातविद्
५० ध्येय
सिद्धसाध्य
सुधी
सुगी
सहिष्णु
५५ अच्युत
अनत
प्रभविष्णु
भवोद् भव
स्वय भूष्णु
६० असभूष्णु

प्रभूष्णु
अभय
अव्यय
दिव्यभाषापति
६५ दिव्यपूतवाक्
पूतशासन
पूतात्मा
परमज्योति
धर्माध्यक्ष
७० दमीश्वर
निर्मोह
निर्मद
निःस्व
निर्दंभ
७५ निरुपद्रव
निराधार
निराहार
निर्लोभ
निश्चल
८० अचल
निष्कामी
निर्मल
नीरुक्
निस्कलंक
८५ निरंजन
निर्गुण
नीरस
निर्भी
निव्यापार
९० निरामय
निर्निमेष
निराबाध
निर्द्वंद्व
निष्क्रिय
९५ अनघ
निःशंक
निरातंक
निष्कल
निर्मल
१०० अमल

॥ इति श्री अर्हन्नाम सहस्त्र समुच्चये द्वितीय शत प्रकाशः ॥

तृतीय १०० नाम

१ तीर्थकृत्
तीर्थसृट्
तीर्थंकर
तीर्थकर
सुदृक्
तीर्थकर्त्ता
तीर्थभर्त्ता
तीर्थेश
तीर्थनायक
१० सुतीर्थ
अधिपति
तीर्थसेव्य
तीर्थिकनायक
धर्मतीर्थकर
१५ तीर्थप्रणेता

तीर्थकारक
तीर्थाधीश
महातीर्थ
तीर्थप्रर्नतक
२० तीर्थविधायक
सत्यतीर्थकर
तीर्थस्रष्टा
तीर्थिकत्रायक
तीर्थनाथ
२५ तीर्थराज
तीर्थेट्
तीर्थप्रकाशक
तीर्थवंद्य
तीर्थमुख्य
३० तीर्थाराध्य
सुतीर्थिक
स्थविष्ठ
स्थविर
ज्येष्ठ
३५ प्रेष्ठ
प्रष्ठ

वरिष्ठधी
स्थेष्ठ
गरिष्ठ
४० बंहिष्ठ
श्रेष्ठ
अणिष्ठ
गरिष्ठधीः
निभव
४५ विभय
निशोक
विजर
जरन्
निराग
५० निमद
अव्यक्त
विविक्त
वीतमत्सर
वीतराग
५५ गतद्वेष
वीतमोह
निमन्मथ

वियोग
योगविद्
६० विद्वान
विधाता
विनयी
नयी
क्षांतिमान्
६५ पृथिवीमूर्ति
शांतिभाक्
सलिलात्मक
वायुमूर्ति
असंगात्मा
७० वह्निमूर्ति
अधर्मधुक्
सुयज्वा
यजमानात्मा
सुत्रामस्तोम-
पूजित
७५ ऋत्विक्
यज्ञपति
याज्य

वेदविद्
वेद्य
९५ जातरूप
विदांवर
वेदवेद्य
स्वसंवेद्य
विवेद
१०० वदतांवर

॥ इति श्री अर्हन्नाम सहस्त्र समुच्चये चतुर्थ शत प्रकाश: ॥

पंचम १०० नाम

१ सुधर्मा
धर्मधी
धर्म
धर्मात्मा
५ धर्मदेशक
धर्मचक्री
दयाधर्म
शुद्धधर्म
वृषध्वज
१० वृषकेतु
वृषाधीश
वृषांक
वृषोद्भव
हिरण्यनाभि
१५ भूतात्मा
भूतभृद्
भूतभावन
प्रभव
विभव
२० भास्वान्
मुक्त
शक्त
अक्षय
अक्षत
२५ कूटस्थ
स्थाणु
अक्षोभ्य
शास्ता
नेता
३० अचलस्थिति
अग्रणी
ग्रामणी
गण्य
गणी
३५ गुण्य
गणाग्रणी
गणाधिप
गणाधिश
गणज्येष्ठ
४० गणार्चित
गुणाकर
गुणांभोधि
गुणज्ञ
गुणवान्
४५ गुणी
गुणादर
गुणोच्छेदी
सुगुण

अगुणवर्जित
५० शरण्य
पुण्यवाक
पूत
वरेण्य
पुण्यगी
५५ गुण
अगण्य
पुण्यधी
पुण्य
पुण्यकृत
६० पुण्यशासन
अतींद्र
अतींद्रिय
अधींद्र
महेन्द्र
६५ अतींद्रियार्थ-
दृक्
अनिंद्र
अहमिंद्राचार्य
महेन्द्रमहित
महान
७० उद्भव
कारण
कर्त्ता
पारग
भवतारक
७५ अग्राह्य
गहन
गुह्य
परर्द्धि
परमेश्वर
८० अनन्तर्द्धि
अमेयर्द्धि
अचिंत्यर्द्धि
समग्रधी
प्राग्य
८५ प्राग्यहर
अत्यग्र
प्रत्यग्र
अग्रिम
९० अग्रज
प्राणक
प्रणव
प्राण
प्राणद
९५ प्राणितेश्वर
प्रधान
आत्मा
प्रकृति
परम
परमोदय

॥ इति श्री अर्हन्नाम सहस्रसमुच्चये पञ्चम शत प्रकाश ॥

षष्टम् १०० नाम

१ महाजिन
महाबुद्ध
महाब्रह्मा
महाशिव
५ महाविष्णु
महाजिष्णु
महानाथ
महेश्वर
महादेव
१० महास्वामी
महाराज
महाप्रभु
महाचन्द्र
महादित्य
१५ महाशूर
महागुरु
महातपा
महातेजा
महोदक
२० महोनय

महायश
महाधाम
महातत्त्व
महाबल
२५ महाधैर्य
महावीर्य
महाकांति
महाद्युति
महाशक्ति
३० महाज्योति
महाभूति
महाधृति
महामति
महानीति
३५ महाक्षांति
महाकृति
महाकीर्ति
महास्फूर्ति
महाप्रज्ञ
४० महोदय

महाभाग
महाभोग
महारूप
महावपु
४५ महादान
महाज्ञान
महाशास्ता
महाप्रज्ञा
महामुनि
५० महामौनि
महाध्यान
महादम
महाक्षम
महाशील
५५ महायोग
महालय
महाव्रत
महायज्ञ
महाश्रेष्ठ
६० महाकवि

महामत्र
महातत्र
महोपाय
महानय
६५ महाकारुणिक
मता
महानाद
महायति
महामोद
७० महाघोष
महेज्य
महसापति
महावीर
महाधीर
७५ महासूर्य
महेष्टवाक्
महात्मा
महसाधाम
महर्षि
८० महितोदय
महामुक्ति
महागुप्ति
महासत्य
महार्जव
८५ महाशुद्धि
महासिद्धि
महाशौच
महावजी
महाधर्म
९० महाशर्मा
महात्मज्ञ
महाशय
महामोक्ष
महासौख्य
९५ महानद
महोदय
महाभवाब्धि
सतारी
महामोहारिसूदन
महायोगीश्वरा-
राध्य
१०० महामुक्तिपदे-
श्वर

॥ इति श्री अर्हन्नाम सहस्त्र समुच्चये षष्ठम शत प्रकाश ॥

सप्तम् १०० नाम

१ आनद
नदन
नद
वद्य
५ नद्य
अभिनदन
कामहा
कामद
काम्य
१० कामधेनु
अरिंजय
मनु
कलेशापह
साधु
१५ उत्तम

मनोज्ञ
३५ अर्ह
धीर
गम्भीरशासन
धर्मयुग
दयायोग
४० धर्मनेमी
मुनीश्वर
धर्मचक्रायुध
देव
कर्महा
४५ धर्मघोषण
रम्यान्
स्थवीयान्
नेदीयान्
दवियान्
५० दूरदर्शन
सुस्थित
स्वास्थ्यभाक्
सुस्थ
निरजस्क

५५ गतस्पृह
वश्येन्द्रिय
विमुक्तात्मा
निःसपत्न
जितेन्द्रिय
६० श्रीनिवास
चतुर्वक्त्र
चतुरास्य
चतुर्मुख
अध्यात्मगम्य
६५ अगम्यात्मा
योगात्मा
योगदृक्
योगिवंदित
सर्वत्रग
७० सदाभावि
त्रिकालविषया
र्थदृक्
शंकर
सुखद
दान्त

७५ दमि
क्षान्तिपरायण
स्वानंद
परमानन्द
सूक्ष्मवर्चा
८० परापर
अमोघ
अमोघवाक्
स्वाज्ञ
दिव्यदृष्टि
८५ अगोचर
सुरुप
सुभग
त्यागी
मूर्त
९० अमूर्त
समाहित
एक
अनेक
निरालम्ब
९५ अनीदृक्नाथ

निरतर
प्रार्थ्य
अभ्यर्च्य
समभ्यर्च्य
१०० त्रिजगन्मंगलोदय

॥ इति श्री अर्हन्नाम सहस्त्र समुच्चये अष्टम शत प्रकाश ॥

नवमम् १०० नाम

१ ईश
अधीश
अधिप
अधीन्द्र
५ ध्येय
अमेय
दयामय
शिव
शूर
१० शुभ
सार
शिष्ट
स्पष्ट
स्फूट
१५ अस्फूट
इष्ट
पुष्ट
क्षम
अक्षाम
२० अकाय
अमाय
अस्मय
अमय
दृश्य
२५ अदृश्य
अणु
अस्थूल
जीर्ण
नव्य
३० गुरु
लघु
स्वभू
स्वात्मा
स्वयबुद्ध
३५ स्वेश
स्वैरीश्वर
स्वर
आद्य
अलक्ष्य
४० अपर
अरुप
अस्पर्श
अशब्द
अरिहा
४५ अरुह
दिप्त
अलेश्य
अरस
अगन्ध
५० अच्छेद्य
अभेद्य

मुनिपुङ्गव
अनिद्रालु
७५ अतंद्रालु
जागरूक
प्रमामय
कर्मण्य
कर्मठ
८० अकुंठ
रुद्र
भद्र
अभयङ्कर
लोकोत्तर
८५ लोकपति

लोकेश
लोकवत्सल
त्रिलोकीश
त्रिकालज्ञ
९० त्रिनेत्र
त्रिपुरान्तक
त्र्यंबक
केवलालोक
केवली
९५ केवलेक्षण
समंतभद्र
शान्तारि
धर्माचार्य

दयानिधि
१०० सुक्ष्मदर्शी
सुमार्गज्ञ
कृपालु
मार्गदर्शक
प्रातिहार्योज्ज्वल
१०५ स्फीतातिशय
विमलाशय
सिद्धानंत
चतुष्कश्री
१०९ जिनपुङ्गव

॥ इति श्री अर्हन्नाम सहस्त्र समुच्चये दशमम शत प्रकाशः ॥

॥ महोपाध्यायश्रीविनयविजयगणिविरचितम् ॥

॥ श्रीजिनसहस्रनामस्तोत्रम् ॥

नमस्ते समस्तेप्सितार्थप्रदाय,
नमस्ते महार्हत्यलक्ष्मीप्रदाय ।
नमस्ते चिदानन्दतेजोमयाय,
नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते० ४ ॥ १ ॥

नमस्ते जगन्नाथ ! निश्वैकनेतः !,
नमस्ते महामोहमल्लैकजेतः ! ।
नमस्ते मता मोक्षशिक्षाविनेतः !१, नमस्ते० ४ ॥ २ ॥

नमस्ते जिनेन्द्र ! प्रभो ! वीतराग !,
नमस्ते स्वयम्भो ! जगद्गन्धनाग ! ।
नमस्ते स्फुरज्ज्ञानजाग्रद्विराग !, नमस्ते० ४ ॥ ३ ॥

नमस्ते जगज्जन्तुजीवातुजन्म !,
नमस्ते प्रभो ! भाग्यलभ्याद्ध्रिपद्म ! ।
नमस्ते लसत्सत्यमन्तोपसद्म !, नमस्ते० ४ ॥ ४ ॥

नमस्तेऽत्र धर्मार्थिना धर्मबन्धो !,
नमस्ते सता पुण्यकारुण्यसिन्धो ! ।
नमस्ते निरुद्धातिदग्धाश्रगान्धो !, नमस्ते० ४ ॥ ५ ॥

१ आ नमस्ते पद चार वार बोलवु ए चोथु पद छे

नमस्ते महस्विन्! नमस्ते यशस्विन्!,
नमस्ते वचस्विन्! नमस्ते तपस्विन्! ।
नमस्ते गुणैरद्भुतैरद्भुताय, नमस्ते० ४ ॥ ६ ॥

नमस्ते महात्मन्! नमस्ते चिदात्मन्!,
नमस्ते शिवात्मन्! नमस्ते परात्मन्! ।
नमस्ते स्थिरात्मन्! नमस्तेऽन्तरात्मन्!, नमस्ते० ४ ॥७॥

नमस्ते गुणानन्त्यमाहात्म्यधाम्ने,
नमस्ते मुनिग्रामणे ध्येयनाम्ने ।
नमस्ते विशुद्धावबोधात्मकाय, नमस्ते० ४ ॥ ८ ॥

नमस्ते भवप्रान्तरस्वर्द्रुमाय,
नमस्ते कृतास्मन्मनोविश्रमाय ।
नमस्ते गलज्जन्ममृत्युश्रमाय, नमस्ते० ४ ॥ ९ ॥

नमस्ते सुधाधोरणीवल्लभाय,
नमस्ते भवेऽस्मिन् भृशं दुर्लभाय ।
नमस्तेऽत्र लब्धाय पुण्यैः (ण्य)प्रकर्षैः, नमस्ते० ४॥१०॥

नमस्ते सुधासारनेत्राञ्जनाय,
नमस्ते सदाऽस्मन्मनोरञ्जनाय ।
नमस्ते भवभ्रान्तिभीभञ्जनाय, नमस्ते० ४ ॥ ११ ॥

नमस्ते शुचिज्ञानरत्नाकराय,
नमस्ते सतां कल्पकारस्कराय ।
नमस्ते जगज्जीवभद्रङ्कराय, नमस्ते० ४ ॥ १२ ॥

नमो मण्डिताखण्डभूमण्डलाय,
नमो भक्तिनम्राखिलाखण्डलाय ।
नमो युक्तयोगाय योगीश्वराय, नमस्ते० ४ ॥ १३ ॥
नमस्ते सदा सुप्रसन्नाननाय,
नमः सिद्धिसम्पत्कृताकाननाय ।
नमो दत्तविद्वन्मनस्सम्मदाय, नमस्ते० ४ ॥ १४ ॥
नमस्तेऽवतीर्णाय विश्वोपकृत्यै,
नमस्ते कृतार्थाय सद्धर्मकृत्यैः ।
नमस्ते प्रकृत्या जगद्वत्सलाय, नमस्ते० ४ ॥ १५ ॥
नमस्तीर्थकृन्नामकर्मार्जिताय,
नमोऽचिन्त्यसामर्थ्यविस्फूर्जिताय ।
नमो योगिने योगमुद्रान्विताय, नमस्ते० ४ ॥ १६ ॥
नमोऽनुत्तरस्वर्गिभिः पूजिताय,
नमस्तन्मनःसंशयच्छेदकाय ।
नमोऽनुत्तरज्ञानलक्ष्मीश्वराय, नमस्ते० ४ ॥ १७ ॥
नमस्ते धरित्रीव (व्येव) सर्वंसहाय,
नमस्तेऽन्तरङ्गारिभिर्दुस्सहाय ।
नमस्ते तपस्सत्यधूर्धूर्वहाय, नमस्ते० ४ ॥ १८ ॥
नमस्ते शुभोपार्जितार्हत्पदाय,
नमस्ते तृतीये भवे निश्चिताय ।
नमो धर्मगम्यस्फलाविश्चिताय, नमस्ते० ४ ॥ १९ ॥

नमो नव्यदिव्योपभोगाभिधाय,
नमस्तेषु तत्रापि वैरङ्गिकाय ।
नमो योगसात्म्यैकतासङ्गताय, नमस्ते० ४ ॥ २० ॥

नमस्ते भुवि स्वर्गलोकच्युताय,
नमस्ते सतीकुक्षिकोशङ्गताय ।
नमस्ते त्रिलोकोपकारोद्गताय, नमस्ते० ४ ॥ २१ ॥

नमस्ते शुभस्वप्नसंसूचिताय,
नमस्ते जनन्याप्तसद्दोहदाय ।
नमस्ते भवत्तद्वपुःसौष्ठवाय, नमस्ते० ४ ॥ २२ ॥

नमस्ते जनुर्भूषिताढ्यान्वयाय,
नमो रत्नवैवृष्टिपूर्णालयाय ।
नमो वर्द्धमानर्द्धिधावैभवाय, नमस्ते० ४ ॥ २३ ॥

नमो दिक्कुमारीकृतस्वोचिताय,
नमस्ताभिरर्चाविधिस्वञ्चिताय ।
नमो ज्ञानरत्नत्रयोदञ्चिताय, नमस्ते० ४ ॥ २४ ॥

नमो द्योतिताशेषविश्वत्रयाय,
नमः सर्वलोकैकसौख्याग्रहाय ।
नमः प्रोल्लसज्जङ्गमस्थावराय, नमस्ते० ४ ॥ २५ ॥

नमः सुप्रसन्नीकृताशामुखाय,
नमस्ते समुज्जृम्भितोर्वीसुखाय,
नमो नारकेभ्योऽपि दत्तोत्सवाय, नमस्ते० ४ ॥ २६ ॥

नमस्तेऽद्भुतकम्पितेन्द्रासनाय,
नमस्ते मुदा तैः कृतोपासनाय ।
नमः कल्पितध्वान्तनिर्वासनाय, नमस्ते० ४ ॥ २७ ॥
नमस्ते सुराद्रौ सुरैः प्रापिताय,
नमस्ते कृतस्नात्रपूजोत्सवाय ।
नमस्ते विनीताप्सरः पूजिताय, नमस्ते० ४ ॥ २८ ॥
नमोऽङ्गुष्ठपीयूषपानोच्छ्रिताय,
नमस्ते वपुःसर्वनष्टामयाय ।
नमस्ते यथायुक्तमर्वाङ्ककाय, नमस्ते० ४ ॥ २९ ॥
नमस्ते मलस्वेदखेदोज्झिताय,
नमस्ते शुचिक्षीररुक्शोणिताय ।
नमस्ते मुखश्वासह्रीणाम्बुजाय, नमस्ते० ४ ॥ ३० ॥
नमस्ते मणिस्वर्णजिद्गौरभाय,
नमस्ते प्रसर्पद्वपुःसौरभाय ।
नमोऽनीक्षिताहारनीहारकाय, नमस्ते० ४ ॥ ३१ ॥
नमस्ते सुरौघैरनुक्रीडिताय,
नमस्ते शिशुक्रीडया क्रीडिताय ।
नमस्ते सुराधीश्वरैरीडिताय, नमस्ते० ४ ॥ ३२ ॥
नमो राजहंसेभगोवद्गताय,
नमश्चातुरीमाधुरीसङ्गताय ।
नमः सर्वशास्त्राब्धिपारङ्गताय, नमस्ते० ४ ॥ ३३ ॥

नमः कोमलालापपीयूषवर्ष !,
नमो बाललीलाकृतज्ञातिहर्ष ! ।
नमस्ते प्रभो ! प्राज्यपुण्यप्रकर्ष !, नमस्ते० ४ ॥ ३४ ॥

नमः स्फारकौमारलीलालसाय,
नमस्ते स्वतस्त्यक्तदुर्लालसाय ।
नमस्ते शुचित्वेऽपि निःसाध्वसाय, नमस्ते० ४ ॥ ३५ ॥

नमस्ते कृतान्वर्थयुक्ताभिधाय,
नमस्ते स्वतः सिद्धविद्याविधाय ।
नमस्ते स्वतो लब्धशिक्षोपधाय, नमस्ते० ४ ॥ ३६ ॥

नमोऽष्टाढ्यसहस्रसल्लक्षणाय,
नमस्ते कृतप्राणिसंरक्षणाय ।
नमोऽक्षीणदाक्षिण्यधीदक्षिणाय, नमस्ते० ४ ॥ ३७ ॥

नमोऽनङ्कराकेन्दुजैत्राननाय,
नमो दक्षहृल्लक्षसन्दानकाय ।
नमस्ते कपोलान्तशान्तस्मिताय, नमस्ते० ४ ॥ ३८ ॥

नमोऽनन्तगाम्भीर्यवर्याशयाय,
नमः संवृतानन्तशक्त्याश्रयाय ।
नमो धैर्यनिस्तर्जितेन्द्राचलाय, नमस्ते० ४ ॥ ३९ ॥

नमो यौवनेऽप्युद्गतस्थावराय,
नमः प्रातिभोत्थव्यवस्थावराय ।
नमो विष्वगुद्यत्प्रभापीवराय, नमस्ते० ४ ॥ ४० ॥

नमो जन्मतोऽप्यार्यमार्गाध्वगाय,
नमो रुद्धदुर्नीतिचर्याऽपगाय ।
नमस्ते निनाऽध्यापकशिक्षिताय, नमस्ते० ४ ॥ ४१ ॥

नमो यौवने प्राप्तपाणिग्रहाय,
नमो भुक्तभोगोपभोगाग्रहाय ।
नमस्ते कृतप्राज्यकर्मौपघाय, नमस्ते० ४ ॥ ४२ ॥

नमस्ते त्रिवर्गक्रियासाधकाय,
नमस्ते यथार्हं तदाराधकाय ।
नमस्तुर्यवर्गेऽप्यनिर्बाधकाय, नमस्ते० ४ ॥ ४३ ॥

नमो दान्तपञ्चेन्द्रियान्तःस्थलाय,
नमः कीलिताजस्रकम्प्रोच्चलाय ।
नमो ज्ञानधाराधुतान्तर्मलाय नमस्ते० ४ ॥ ४४ ॥

नमो बिभ्रते सात्त्विकाश्चि(त्त)वृत्तिं,
नमो बिभ्रते मानसैनोनिवृत्तिं ।
नम पश्यते सर्वतस्तत्त्वदृष्टया, नमस्ते० ४ ॥ ४५ ॥

नमो मोहमल्लीप्रमल्लानुगाय,
नमो नोपलिप्ताय तत्तद्रजोभिः ।
नमः प्रोल्लसत्पुण्डरीकोपमाय, नमस्ते० ४ ॥ ४६ ॥

नमः सम्पतद्देवलोकान्तिकाय,
नमस्तैः स्तुताद्भिद्वयोपान्तिकाय ।
नमो ज्ञाततीर्थप्रवृत्त्यर्थनाय, नमस्ते० ॥ ४ ॥ ४७ ॥

नमो निश्चितात्मीयदीक्षाक्षणाय,
नमो ज्ञानशुद्धोपयोगेक्षणाय,
नमस्ते निरीहाय वीतस्पृहाय, नमस्ते० ४ ॥ ४८ ॥

नमस्ते कृतज्ञातिवर्गार्हणाय,
नमः प्रीणितैतत्कृतोद्बृंहणाय ।
नमस्तेऽर्पितस्वापतेयाय तेभ्यो नमस्ते० ४ ॥ ४९ ॥

नमो दत्तसांवत्सरोत्तरार्जनाय,
नमो विश्वदारिद्र्यनिस्तर्जनाय ।
नमस्ते कृतार्थीकृतार्थिव्रजाय, नमस्ते० ४ ॥ ५० ॥

नमः प्रत्यहं कारितोद्घोषणाय,
नमो भो वृणीतेति लोकंपृणाय ।
नमो दानवीराधिवीरोद्धुराय, नमस्ते० ४ ॥ ५१ ॥

नमस्तेऽर्पितानेकगर्जद्गजाय,
नमस्तेऽर्पितानेकवाहव्रजाय ।
नमस्ते समुत्तानदानध्वजाय, नमस्ते० ४ ॥ ५२ ॥

नमस्ते प्रभो! दत्तदिव्याम्बराय,
नमस्तेऽर्पितस्वर्णरत्नोत्कराय ।
नमो दीनदीनारधाराधराय, नमस्ते० ४ ॥ ५३ ॥

नमः प्रत्यहं यच्छते हेमकोटिं,
नमो यच्छतेऽष्टौ च लक्षाणि तेषाम् ।
नमो यच्छतेऽन्यद्यथेच्छं जनानाम्, नमस्ते० ४ ॥ ५४ ॥

नमस्ते वदान्यीभवन्मार्गणाय,
नमस्ते धनापूर्णगेहाङ्गणाय ।
नमस्ते कृतानेककोटिध्वजाय, नमस्ते० ४ ॥ ५५ ॥
नमस्ते मनःकामकल्पद्रुमाय,
नमस्ते प्रभो ! कामधेनूपमाय ।
नमस्ते निरस्तार्थिनामाश्रमाय, नमस्ते० ४ ॥ ५६ ॥
नमस्त्यक्तसप्ताङ्गराज्येन्दिराय,
नमस्त्यक्तसत्सुन्दरीमन्दिराय ।
नमस्त्यक्तमाणिक्यमुक्ताफलाय, नमस्ते० ४ ॥ ५७ ॥
नमस्तत्क्षणोपागतस्वर्धनाय,
नमस्तत्कृतप्रौढदीक्षोत्सवाय ।
नमस्तत्र तत्तत्स्फुरद्वैभवाय, नमस्ते० ४ ॥ ५८ ॥
नमस्ते प्रभो ! याप्ययानस्थिताय,
नमस्तेऽवनाय प्रभो ! प्रस्थिताय ।
नमस्ते शमस्पृग्मन सुस्थिताय, नमस्ते० ४ ॥ ५९ ॥
नमो यानधुर्यीभवद्वासवाय,
नमो दूरविक्षिप्तगर्वासवाय ।
नमः शुद्धभावावरुद्धाश्रवाय, नमस्ते० ४ ॥ ६० ॥
नमस्तेऽग्रगच्छन्महेन्द्रध्वजाय,
नमस्तेऽग्रगच्छद्गजाश्वव्रजाय ।
नमस्तेऽभितः सञ्चरद्राजकाय नमस्ते० ४ ॥ ६१ ॥

नमोऽसत्त्र्यसङ्कीर्णितोर्वीतलाय,
नमो देवदीप्यन्नभोमण्डलाय ।
नमस्ते नदद्दिव्यतूर्यत्रिकाय, नमस्ते० ४ ॥ ६२ ॥
नमो दीपरत्नप्रभाडम्बराय,
नमो वन्दिशब्दोर्जिताशाम्बराय ।
नमो नागरीनागरैर्वीक्षिताय, नमस्ते० ४ ॥ ६३ ॥
नमस्त्यक्तसर्वाङ्गिकाभूषणाय,
नमो निर्गतत्रित्रिधादूषणाय ।
नमः पञ्चमुष्टयाऽलकोल्लुञ्चकाय, नमस्ते० ४ ॥ ६४ ॥
नमस्ते समुद्गीर्णसामायिकाय,
नमः सर्वदेव त्रिधाऽमायिकाय ।
नमस्सर्वसावद्ययोगोज्झिताय, नमस्ते० ४ ॥ ६५ ॥
नमस्ते मनःपर्यवज्ञानशालिन्!,
नमश्चारुचारित्रपावित्र्यमालिन्! ।
नमो नाथ! षड्जीवकायावकाय, नमस्ते० ४ ॥६६॥
नमस्ते समुद्यद्विहारक्रमाय,
नमः कर्मवैरिस्फुरद्विक्रमाय ।
नमः स्वीयदेहेऽपि ते निर्ममाय, नमस्ते० ४ ॥ ६७ ॥
नमो ग्राम एकैकरात्रोषिताय,
नमः पत्तने पञ्चरात्रोषिताय ।
नमो भावशुद्धैषणापोषिताय, नमस्ते० ४ ॥ ६८ ॥

नमस्तुभ्यमरूपाय रात्रौ दिवा वा,
नमस्तुभ्यमरूपाय तेऽन्तर्बहिश्च ।
(नमस्तुभ्यमविकाराय दुःखे सुखे वा), नमस्ते० ४ ॥ ६९ ॥

नमस्तुभ्यमविकाराय प्रिये ऽप्रिये वा,
नमस्तुभ्यमविकाराय लोष्ठे स्वर्णे वा ।
नमस्तुभ्यमविकाराय गालौ स्तुतौ वा, नमस्ते० ४ ॥ ७० ॥

नमस्तुभ्यमविकाराय भोगे भवे वा,
नमस्तुभ्यमविकाराय जीर्णे नवे वा ।
नमस्तुभ्यमविकाराय मेरौ चूर्णे वा, नमस्ते० ४ ॥ ७१ ॥

नमस्ते प्रभो! तृष्णा निर्गताय,
नमस्ते प्रभो! क्षीणा निःस्पृहाय ।
नमस्ते प्रभो! न कस्मै चिराय, नमस्ते० ४ ॥ ७२ ॥

नमस्ते प्रभोऽनुकम्पाभिरस्तै,
नमस्ते प्रभो! मुक्तिसन्मुक्तिरस्मै ।
नमस्ते प्रभो! मातृवात्सल्यसार, नमस्ते० ४ ॥ ७३ ॥

नमस्ते प्रभो! गगनसमताय,
नमस्ते स्फुरद्ब्रह्मवै-विस्तनाय ।
(नमस्ते प्रभो! गतस्वादिनिरोधाय), नमस्ते० ४ ॥ ७४ ॥

नमस्ते प्रभो! मुक्तिसिद्धिप्रदाय,
नमो गुणवादपेशलपाय ।
नमो धर्मद्रव्याकारमैक्याय, नमस्ते० ४ ॥ ७५ ॥

नमः श्रेणिमारोहते निष्प्रपातम्,
नमस्तन्वते सप्तदृग्मोहघातम्।
नमस्ते प्रभो! निर्गतायुस्त्रयाय, नमस्ते० ४ ॥ ७६ ॥
नमस्ते क्रमोद्यद्गुणस्थानकाय,
नमस्ते परिक्षीणनिद्राभयाय।
नमस्तेऽजुगुप्साय वेदोज्झिताय, नमस्ते० ४ ॥ ७७ ॥
नमो विप्रमुक्ताय हास्येन रत्या,
नमो विप्रमुक्ताय शोकारतिभ्याम्।
नमस्ते क्षरन्नोकषायाय मूलात्, नमस्ते० ४ ॥ ७८ ॥
नमश्छिन्दते क्रोधमानौ दुरन्तौ,
नमो निघ्नते दम्भलोभौ समूलम्।
नमस्ते यथाख्यातचारित्रराज्ञे, नमस्ते० ४ ॥ ७९ ॥
नमः क्षीणमोहाय सुस्नानकाय,
नमो घातिकर्मद्विषद्घातकाय।
नमो जातकर्मत्रिषष्टिक्षयाय, नमस्ते० ४ ॥ ८० ॥
नमः प्रज्वलद्ध्यानदावानलाय,
नमो दग्धनिश्शेषकर्मोपलाय।
नमस्ते चतुःकर्मशेषोदयाय, नमस्ते० ४ ॥ ८१ ॥
नमस्तेऽत्र कर्मद्वयोदीरकाय,
नमस्सत्तयाऽशीतियुक्पञ्चकाय।
नमो बध्नते त्रिक्षणस्थायिसातम्, नमस्ते० ४ ॥ ८२ ॥

नमो ध्यातशुक्लाद्यभेदद्वयाय,
नमस्ते तृतीयान्तरालस्थिताय ।
नमः शुक्ललेश्यास्थितौ निश्चलाय, नमस्ते० ४ ॥८३॥
नम केवलज्ञानसद्दर्शनाय,
नमस्ते कृतार्हत्पदस्पर्शनाय ।
नमस्ते हताष्टादशाऽऽदीनवाय, नमस्ते० ४ ॥ ८४ ॥
नमो जानते पश्यते सर्वलोक-
मलोकं तथैवाशु निर्द्वन्द्वमस्ते ।
नमो द्रव्यभावानवोधात्मकाय, नमस्ते० ४ ॥ ८५ ॥
नमस्तत्क्षणायातदेवासुराय,
नमोऽनुत्तरर्द्धिप्रभाभासुराय ।
नमो रत्नरूप्यवप्रत्रयाय, नमस्ते० ४ ॥ ८६ ॥
नमस्ते चतुर्दिग्विरानन्मुखाय,
नमस्तेऽभितः समदा सत्सुखाय ।
नमो योजनच्छायचैत्यद्रुमाय, नमस्ते० ४ ८७ ॥
नमो योजनामीनतानज्ञनाय,
नमश्चक्रमगुद्धनानाजनाय ।
नमो भानुजैत्रप्रभामण्डलाय, नमस्ते० ४ ॥ ८८ ॥

नमो धर्मचक्रत्रसत्तामसाय,
नमः केतुहृष्यन्सुद्गमानसाय ।
नमो व्योमसञ्चारिसिंहासनाय, नमस्त० ४ ॥ १० ॥
नमश्चामरैरष्टभिर्वीजिताय,
नमः स्वर्णपद्माहिताङ्घ्रिद्वयाय ।
(नमः सन्तताशोकवृक्षैर्युताय), नमस्ते० ४ ॥ ११ ॥
नमोऽधोमुखाग्रीभवत्कण्टकाय,
नमो ध्वस्तकर्मारिनिष्कण्टकाय ।
नमस्तेऽभितो नम्रमार्गद्रुमाय, नमस्ते० ४ ॥ १२ ॥
नमस्तेऽनुकूलीभवन्मारुताय,
नमस्ते सुखाकृद्विद्वायोरुताय ।
नमस्तेऽम्बुसिक्ताभितो योजनाय नमस्ते० ४ ॥ १३ ॥
नमो योजनाजानुपुष्पोच्चयाय,
नमोऽवस्थितश्मश्रुकेशादिकाय ।
नमस्ते सुपञ्चेन्द्रियार्थोदयाय, नमस्ते० ४ ॥ १४ ॥
नमो नाकिकोट्या त्रिवित्कान्तिकाय,
नमो दुन्दुभिप्रष्टभूमित्रिकाय ।
नमोऽभ्रंलिहाग्रोदितेन्द्रध्वजाय, नमस्ते ० ४ ॥ १५ ॥
नमः प्रातिहार्याष्टकालङ्कृताय,
नमो योजनव्याप्तवाक्यामृताय ।
नमस्ते विनाऽलङ्कृतिं सुन्दराय । नमस्ते० ४ ॥१६॥

नमस्तेऽन्यह द्विर्भवद्देशनाय,
नमस्ससतत्त्वाश्रितोद्देशनाय ।
नमः प्रोक्तषड्द्रव्यरूपत्रयाय, नमस्ते० ४ ॥ ९७ ॥
नमस्ते मतोत्पत्तिसत्त्वव्ययाय,
नमस्ते त्रिपद्यात्तविश्वत्रयाय ।
नमस्त्रासितैकान्तवादिद्विपाय, नमस्ते० ४ ॥ ९८ ॥
नम क्लृप्ततीर्थस्थितिस्थापनाय,
नमः सचतु'सद्वसंस्थापनाय ।
नमस्ते चतुर्भेदधर्मार्पकाय, नमस्ते० ४ ॥ ९९ ॥
नम. प्रोक्तनि' श्रेयमश्रीपथाय,
नमो नाशितश्रानकान्तर्व्यथाय ।
नमस्तेऽस्तु रत्नत्रयीदीपकाय, नमस्ते० ४ ॥१००॥
नृतिर्यक्सुरासत्रसामायिकाय,
नमस्ते नमोऽमोघवाक्‌नायुकाय ।
नमो द्वादशप्रौढपर्षत्प्रियाय, नमस्ते० ४॥१०१॥
नम' सार्थवाहाय मुक्त्यध्वगानाम्,
नमोऽपारपाराय मुक्त्यापगानाम् ।
विहारैर्नमः पावितोर्वीतल्या, नमस्ते० ४ ॥१०२॥
नमोद्वादशाङ्गीनदीभूधराय,
नम सप्तभङ्गीचमूदुर्धराय ।
नमस्ते प्रमाणोपपन्नागमाय, नमस्ते० ४ ॥१०३॥

नमो बुद्धतत्त्वाय तद्बोधकाय,
नमः कर्ममुक्ताय तन्मोचकाय ।
नमस्तीर्णजन्माब्धये तारकाय, नमस्ते॰ ४ ॥ १०४ ॥
नमो लोकनाथाय लोकोत्तमाय,
नमस्ते त्रिलोकप्रदीपोपमाय ।
नमो निर्निदानं जनेभ्यो हिताय, नमस्ते॰ ४ ॥१०५॥
नमः पावनेभ्योऽपि ते पावनाय,
नमः सिद्धियोगैः कृतोद्भावनाय ।
नमो दत्तनिःशेषजीवाभयाय, नमस्ते॰ ४ ॥ १०६ ॥
नमोऽन्तर्मुहूर्त्तावशिष्टे यताय,
नमः सारशैलेश्यवस्थोचिताय ।
नमस्ते चतुःकर्मतुल्यांशताय, नमस्ते॰ ४ ॥१०७॥
नमस्ते क्रमाद्रुद्धयोगत्रयाय,
नमो लेश्याय शुक्लयाऽप्युज्झिताय,
नमः पूर्णशुक्लान्त्यभेदद्वयाय, नमस्ते॰ ४ ॥१०८॥
नमस्ते विशुद्धया महानिर्जराय,
नमोऽशीतियुक्पञ्चकर्मोत्किराय ।
नमस्ते त्रिभागोनदेहोच्छ्रयाय, नमस्ते॰ ४ ॥१०९॥
नमस्ते पतत्कार्मणौदारिकाय,
नमोऽनादिसम्बन्धमुक्ताणुकाय ।
नमस्तत्क्षणाप्तस्थिरस्थानकाय, नमस्ते॰ ॥११०॥

नमस्तत्र गत्याऽस्पृशन्त्या गताय,
नम सिद्धबुद्धाय पारङ्गताय ।
नम साद्यनन्तस्थितिस्थायुकाय, नमस्ते० ४ ॥१११॥
नमो वीतसमारम्भ(सा)क्रमाय,
नमो निर्जराजन्ममृत्युव्ययाय ।
नम शाश्वतायामलायाचलाय, नमस्ते० ४ ॥११२॥
नमः केवलज्ञानदृग्लक्षणाय,
नमोऽनुक्रमैकैकबोधक्षणाय ।
नमो ज्ञातदृष्टाखिलार्थव्रजाय, नमस्ते० ४ ॥११३॥
नमस्तेऽनुपाख्येयसौख्याहृयाय,
नम· स्वोत्थितानन्तवीर्योदयाय ।
नमोऽगोचराय वाङ्मनोऽगोचराय,नमस्ते० ४ ॥११४॥
नमो देहभृद्देहदेवालयाय,
नमस्तेऽत्र चैत्याय चैतन्यमूर्त्या ।
नमः स्वाभिभेदेन दक्षेक्षिताय, नमस्ते० ४ ॥११५॥
नमो निर्विकाराय नीरञ्जनाय,
नमो योगिलक्ष्याय निर्व्यञ्जिताय ।
नमस्तेऽनुमानोपमानातिगाय, नमस्ते० ४ ॥११६॥
नम व्यापनाद्व्यापनामाभराय,
नमस्ते प्रनाताय कालायेऽस्मान् ।
नमो भागधेयाय न याङ्गभाजाम्, नमस्ते० ४ ॥११७॥

नमस्ते प्रभो ! श्रीयुगादीश्वराय,
नमस्तेऽजिताय प्रभो ! शम्भवाय ।
नमो नाथ ! सैद्धार्थतीर्थेश्वराय, नमस्ते० ४ ॥११८॥
नमो माङ्गलीयस्फुरन्मङ्गलाय,
नमस्ते महःसद्मपद्मप्रभाय ।
नमस्ते सुपार्श्वाय चन्द्रप्रभाय, नमस्ते० ४ ११९॥
नमः पुष्पदन्ताय ते शीतलाय,
नमः श्रीजिनेन्द्राय ते वैष्णवाय ।
नमो वासुपूज्याय पूज्यायसद्भिः, नमस्ते० ४ ॥१२०॥
नमः श्यामया सुप्रसुताय नेतः !,
नमोऽनन्तनाथाय धर्मेश्वराय ।
नमः शान्तये कुन्थुनाथाय तुभ्यम्, नमस्ते० ४ ॥१२१॥
नमस्तेऽप्यराख्येश ! नम्रामराय,
नमो मल्लिदेवाय ते सुव्रताय ।
नमस्ते नमिस्वामिने नेमयेऽर्हन् !, नमस्ते० ४ ॥१२२॥
नमस्ते प्रभो ! पार्श्वविश्वेश्वराय,
नमस्ते विभो ! वर्द्धमानाभिधाय ।
नमोऽचिन्त्यमाहात्म्यचिद्वैभवाय, नमस्ते० ४ ॥१२३॥
नमस्तेऽवसर्पिण्यभिख्येऽत्र काले,
नमस्ते चतुर्विंशतावञ्चिताङ्घ्रिः ।
नमः केवलज्ञानिमुख्याह्वयाय, नमस्ते० ४ ॥१२४॥

नमोऽनागतोत्सर्प्पिणीकालभोगे,
चतुर्विंशतावेप्यदार्हन्त्यशक्त्यै ।
नमः स्वामिने पद्मनाभादिनाम्ने, नमस्ते० ४ ॥१२५॥
दशस्वप्ययं नमः कर्मभूषु,
चतुर्विंशतौ ते नमोऽनन्तमूर्त्ये ।
नमोऽध्यक्षमूर्त्यै विदेहावनीषु, नमस्ते० ४ ॥१२६॥
नमस्ते प्रभो स्वामीसीमन्धराय,
नमस्तेऽधुनार्हन्त्यलक्ष्मीवराय ।
नमः प्राग्विदेहावनीमण्डनाय, नमस्ते० ४ ॥१२७॥
नमस्तेऽधुना द्विर्विदेहोद्गताय,
नमस्ते दशद्वैतदेवाद्भुताय ।
नमः मन्ततप्रातिहार्याष्टकाय, नमस्ते० ४ ॥१२८॥
नमो भूर्भुवः स्वस्त्रयीशाश्वताय,
नमस्ते त्रिलोकीस्थिरस्थापनाय ।
नमो देवमर्त्यासुराभ्यर्चिताय, नमस्ते० ४ ॥१२९॥
नमः स्वर्विमानेषु देवार्चिताय,
नमो ज्योतिषेष्विन्दुसूर्यैर्नताय ।
नमोऽध्याऽपि नगासुरव्यन्तराय, नमस्ते० ४ ॥१३०॥
नमोऽस्वद्कृतस्वेष्टभूभृद्वराय,
नमो व्यामनिर्भेपशस्नास्पदाय ।
नमः गर्भविभ्रमिनिर्वापदाय, नमस्ते० ४ ॥१३१॥

नमस्तीर्थराजाय तेऽष्टापदाय,
नमः स्वर्णरत्नार्हदर्चास्पदाय ।
नमस्ते नतश्राद्धविद्याधराय, नमस्ते० ४ ॥१३२॥
नमस्तीर्थसम्मेतशैलाह्वयाय,
नमो विंशतिप्राप्तनिःश्रेयसाय ।
नमः श्रव्यदिव्यप्रभावाश्रयाय, नमस्ते० ४ ॥१३३॥
नमश्चोज्जयन्ताद्रितीर्थोत्तमाय,
नमो जातनेमित्रिकल्याणकाय ।
नमः शोभितोद्धारसौराष्ट्रकाय, नमस्ते० ४ ॥१३४॥
नमस्तेऽर्बुदायाप्तचैत्यार्बुदाय,
नमो भव्यहृत्केकिलोकाम्बुदाय ।
नमः प्राच्यवंशेभ्यकीर्तिध्वजाय, नमस्ते० ४ ॥१३४॥
नमस्ते प्रभो! पार्श्वशङ्खेश्वराय,
नमस्ते यशोगौरगोडीधराय ।
नमस्ते वरकाणतीर्थेश्वराय, नमस्ते० ४ ॥ १३६ ॥
नमस्तेऽन्तरिक्षाय वामाङ्गजाय,
नमः सूरतस्थाय ते दिग्गजाय ।
नमो नाथ! जीराउलीमण्डनाय, नमस्ते० ४ ॥१३७॥
नमो देशपूर्यादिनानाह्वयाय,
नमो ध्येयनाम्ने महिम्नाव्ययाय ।
नमस्ते कृतारिष्टदुष्टक्षयाय, नमस्ते० ४ ॥१३८॥

नमो वर्द्धमानप्रभोः शासनाय,
नमस्ते चतुर्वर्णसङ्घाय नित्यम् ।
नमो मन्त्रराजाय ते ध्येयरत्न!, नमस्ते० ४ ॥१३९॥

नमो जैनसिद्धान्तदुग्धार्णवाय,
नमोऽनेकशास्त्रार्थरत्नाश्रयाय ।
नमो धर्मविधिन्दिरासुन्दराय, नमस्ते० ४ ॥१४०॥

नमो दर्शनज्ञानचारित्रशुद्ध्यै,
नमो सम्यगर्थापपा(पाप)शुद्ध्यै ।
नमो भावनिर्ग्रन्थतथ्यक्रियायै, नमस्ते० ॥१४१॥

नमः श्राद्धधर्माय दानोत्तमाय,
नमस्ते चतुर्वर्गसिद्धिक्षमाय ।
नमस्ते चतु शास्त्रचक्रमाय, नमस्ते० ४ ॥१४२॥

नमो अनगाराग्र्यधर्मादेशकाय,
नमो जिनपिकगा सुधीभिः श्रितायै ।
नमो शासनपालोपसर्गापहन्त्र्यै, नमस्ते० ४ ॥१४३॥

नमस्कार एषोऽपि येषामपि त्वत्
जैनोऽप्यपत्येव संसारवार्द्धे ।
प्रदेश मरण पुन किं न हन्या-
न्नराद्धिस्त्रिभूमिर्निमानाशिपम् ॥१४४॥

तथा चाहुः—

इक्को वि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ।
संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥१४५॥

स्तवोऽयं प्रातरुदित—स्तमस्तोमच्छिदर्हताम् ।
नमस्कारसहस्रेण, सहस्रकिरणायताम् ॥१४६॥

सहस्रकिरणस्येव, स्तवस्यास्य प्रभावतः ।
दूरे दोषाः पलायन्ते, पुण्याहः प्रकटो भवेत् ॥१४७॥

स्थित्वा वर्षारात्रं, गन्धारे क्ष्माधिसंयमनितेऽब्दे १७३१।
श्रीविजयप्रभसूरि—प्रसादतः स्तोत्रमिदमुदितम् ॥१४८॥

श्रीहीरहीरविजयाह्वयसूरिशिष्य—
श्रीकीर्तिकीर्तिविजयाभिधवाचकानाम् ।
शिष्येण ढौकितमिदं भगवत्पदाग्रे,
स्तोत्रं सुवर्णरचितं विनयाभिधेन ॥१४९॥

॥ इति महामहोपाध्यायश्रीविनयविजयवाचकपुङ्गवविरचितं
श्रीजिनसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

श्रीमदमितगत्याचार्यविरचिता

॥ श्री परमात्मद्वात्रिंशिका ॥

सत्त्वेषु मैत्रीं गुणिषु प्रमोदं,
क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम् ।
माध्यस्थभावं विपरीतवृत्तौ,
सदा ममात्मा विदधातु देव ! ॥ १ ॥

शरीरतः कर्तुमनन्तशक्तिं
विभिन्नमात्मानमपास्तदोषम् ।
जिनेन्द्र ! कोषादिव खड्गयष्टिं,
तव प्रसादेन ममास्तु शक्तिः ॥ २ ॥

दुःखे सुखे वैरिणि बन्धुवर्गे,
योगे वियोगे भवने वने वा ।
निराकृताशेषममत्वबुद्धेः,
समं मनो मेऽस्तु सदापि नाथ ! ॥ ३ ॥

मुनीश ! लीनाविव कीलिताविव,
स्थिरौ निखाताविव बिम्बिताविव ।
पादौ त्वदीयौ मम तिष्ठतां सदा,
तमो धुनानौ हृदि दीपकाविव ॥ ४ ॥

एकेन्द्रियाद्या यदि देव ! देहिनः,
प्रमादिना संचरता इतस्ततः ।

क्षता विभिन्ना मलिता निपीडिता,
  ममास्तु मिथ्या दुरनुष्ठितं मदा ॥ ५ ॥
मुक्तिमार्गप्रतिकूलवर्तिना,
  मया कषायाक्षवशेन दुर्धिया ।
चारित्र्यशुद्धेर्यदकारि लोपनं,
  तदस्तु मिथ्या मम दुष्कृतं प्रभो ! ॥ ६ ॥
विनिन्दनालोचनगर्हणैरहं,
  मनोवचःकायकषायनिर्मितम् ।
निहन्मि पापं भवदुःखकारणं,
  भिषग् विषं मन्त्रगुणैरिवाखिलम् ॥ ७ ॥
अतिक्रमं यं यमपि व्यतिक्रमं,
  जिनातिचारं स्वचरित्रकर्मणः ।
व्यधामनाचारमपि प्रमादतः,
  प्रतिक्रमं तस्य करोमि शुद्धये ॥ ८ ॥
क्षितिं मनःशुद्धिविधेरतिक्रमं,
  व्यतिक्रमं शीलवृतेर्विलङ्घनम् ।
प्रभोऽतिचारं विषयेषु वर्तनं,
  वदन्त्यनाचारमिहातिसक्तिताम् ॥ ९ ॥
यदर्थमात्रापदवाक्यहीनं,
  मया प्रमादादिह किञ्चनोक्तम् ।

तन्मे ध्रुवित्या विदधातु देवी ।
   सरस्वती केवलबोधलब्धिम्   ॥ १० ॥

बोधि समाधि परिणामशुद्धि,
   स्वात्मोपलब्धि शिवसौख्यसिद्धि ।
चिन्तामणि चिन्तितवस्तुदाने,
   त्वां वन्द्यमानस्य ममास्तु देव । ॥ ११ ॥

यः स्मर्यते सर्वमुनीन्द्रवृन्दै-
   र्यः स्तूयते सर्वनरामरेन्द्रैः ।
यो गीयते वेदपुराणशास्त्रैः
   स देवदेवो हृदये ममास्ताम्   ॥ १२ ॥

यो दर्शनज्ञानसुखस्वभावः
   समस्तसंसारविकारबाह्यः ।
समाधिगम्यः परमात्मसंज्ञः,
   स देवदेवो हृदये ममास्ताम्   ॥ १३ ॥

निषूदते यो भवदुःखजालं,
   निरीक्षते यो जगदन्तरालम् ।
योऽन्तर्गतो योगिनिरीक्षणीयः,
   स देवदेवो हृदये ममास्ताम्   ॥ १४ ॥

विमुक्तिमार्गप्रतिपादको यो,
   यो जन्ममृत्युव्यसनाद्व्यतीतः ।

त्रिलोकलोकी विकलोऽकलङ्कः,
स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥ १५ ॥

क्रोडीकृताशेषशरीरिवर्गा,
रागादयो यस्य न सन्ति दोषाः ।
निरिन्द्रियो ज्ञानमयोऽनपायः,
स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥ १६ ॥

यो व्यापको विश्वजनीनवृत्तिः,
सिद्धो विबुद्धो धुतकर्मबन्धः ।
ध्यातो धुनीते सकलं विकारं,
स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥ १७ ॥

न स्पृश्यते कर्मकलङ्कदोषै-
र्यो ध्वान्तसङ्घैरिव तिग्मरश्मिः ।
निरञ्जनं नित्यमनन्तमेकं,
तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥ १८ ॥

विभासते यत्र मरीचिमाली,
न विद्यमाने भुवनाधिभासी ।
स्वात्मस्थितं बोधमयप्रकाशं,
तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥ १९ ॥

विलोक्यमाने सति यत्र विश्वं,
विलोक्यते स्पष्टमिदं विविक्तम् ।

शुद्धं शिवं शान्तमनाद्यनन्तं,
तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥ २० ॥

येन क्षता मन्मथमानमूर्छा—
विषादनिद्राभयशोकचिन्ता ।
क्षयानलेनेव तरुप्रपञ्च—
स्तं देवदेवं शरणं प्रपद्ये ॥ २१ ॥

न संस्तरोऽश्मा न तृणं न मेदिनी,
विधानतो नो फलकं विनिर्मितम् ।
यतोर्निरस्ताक्षकषायविद्विषः,
सुधीभिरात्मैव सुनिर्मलो मतः ॥ २२ ॥

न संस्तरो भद्रसमाधिसाधनं,
न लोकपूजा न च संघमेलनम् ।
यतस्ततोऽध्यात्मरतो भवानिशं,
विमुच्य सर्वामपि बाह्यवासनाम् ॥ २३ ॥

न सन्ति बाह्या मम केचनार्था,
भवामि तेषां न कदाचनाहम् ।
इत्थं विनिश्चित्य विमुच्य बाह्यं,
स्वस्थः सदा त्वं भव भद्र ! मुक्त्यै ॥ २४ ॥

आत्मानमात्मन्यवलोकमान—
स्त्वं दर्शनज्ञानमयो विशुद्धः ।

एकाग्रचित्तः खलु यत्र तत्र,
स्थितोऽपि साधो ! लभसे समाधिम् ॥२५॥

एकः सदा शाश्वतिको ममात्मा,
विनिर्मलेक्षाधिगमस्वभावः ।
बहिर्भवाः सन्ति परे समस्ता,
न शाश्वताः कर्मभवाः स्वकीयाः ॥ २६ ॥

यस्यास्ति नैक्यं वपुषाऽपि सार्धं,
तस्यास्ति किं पुत्रकलत्रमित्रैः ? ।
पृथक्कृते चर्मणि रोमकूपाः,
कुतो हि तिष्ठन्ति शरीरमध्ये ? ॥ २७ ॥

संयोगतो दुःखमनेकभेदं,
यतोऽश्नुते जन्मवने शरीरी ।
ततस्त्रिधाऽसौ परिवर्जनीयो,
यियासुना निर्वृतिमात्मनीनताम् ॥ २८ ॥

सर्वं निराकृत्य विकल्पजालं,
संसारकान्तारनिपातहेतुम् ।
विविक्तमात्मानमवेक्षमाणो,
निलीयसे त्वं परमात्मतत्त्वे ॥ २९ ॥

स्वयं कृतं कर्म यदात्मना पुरा,
फलं तदीयं लभते शुभाशुभम् ।

परेण दत्तं यदि लभ्यते स्फुटं,
स्वयं कृतं कर्म निरर्थकं तदा ॥ ३० ॥

निजार्जितं कर्म विहाय देहिनो,
न कोऽपि कस्यापि ददाति किंचन ।
विचारयन्नेवमनन्यमानसः,
परो ददातीति विमुच्य शेमुषीम् ॥ ३१ ॥

इति द्वात्रिंशता वृत्तैः, परमात्मानमीक्षते ।
अनन्यगतचेता यो, यात्यसौ पदमव्ययम् ॥ ३२ ॥

यैः परमात्माऽमितगतिवन्द्यः, सर्वविविक्तो भृशमनवद्यः ।
शश्वदधीतो मनसि लभन्ते, मुक्तिनिकेतं विभववरं ते ॥३३॥

इति श्री अमितगत्याचार्य विरचित
[illegible]

न्यहस्तिने लोकोत्तमाय लोकनाथाय लोकहिताय लोकप्रद्योतकारिणे लोकप्रदीपाय अभयदाय दृष्टिदाय मुक्तिदाय मार्गदाय बोधिदाय जीवदाय शरणदाय धर्मदाय धर्मदेशकाय धर्मनायकाय धर्मसारथये धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्तिने व्यावृत्तच्छद्मने अप्रतिहतसम्यग्ज्ञानदर्शनसद्मने । ३ ।

ॐ नमोऽर्हते जिनाय जापकाय तीर्णाय तारकाय बुद्धाय बोधकाय मुक्ताय मोचकाय त्रिकालविदे पारङ्गताय कर्माष्टकनिषूदनाय अधीश्वराय शम्भवे जगत्प्रभवे स्वयम्भुवे जिनेश्वराय स्याद्वादवादिने सार्वाय सर्वज्ञाय सर्वदर्शिने सर्वतीर्थोपनिषदे सर्वपाषण्डमोचिने सर्वयज्ञफलात्मने सर्वज्ञकलात्मने सर्वयोगरहस्याय केवलिने देवाधिदेवाय वीतरागाय । ४ ।

ॐ नमोऽर्हते परमात्मने परमाप्ताय परमकारुणिकाय सुगताय तथागताय महाहंसाय हंसराजाय महासत्त्वाय महाशिवाय महाबोधाय महामैत्राय सुनिश्चिताय विगतद्वन्द्वाय गुणाब्धये लोकनाथाय जितमारबलाय । ५ ।

ॐ नमोऽर्हते सनातनाय उत्तमश्लोकाय मुकुन्दाय गोविन्दाय विष्णवे जिष्णवे अनन्ताय अच्युताय श्रीपतये विश्वरूपाय हृषीकेशाय जगन्नाथाय भूर्भुवः स्वः समुत्ताराय मानञ्जराय कालञ्जराय ध्रुवाय अजाय अजेयाय अजराय अचलाय अव्ययाय विभवे अचिन्त्याय असंख्येयाय आदिसंख्याय आदिकेशवाय आदिशिवाय महाब्रह्मणे परमशिवाय एकानेकान्तस्वरूपिणे

भावाभावविवर्जिताय अस्तिनास्तिद्वयातीताय पुण्यपापविर-हिताय सुखदुःखविविक्ताय व्यक्ताव्यक्तस्वरूपाय अनादि-मध्यनिधनाय नमोऽस्तु मुक्तीश्वराय मुक्तिस्वरूपाय । ६ ।

ॐ नमोऽर्हते निरातङ्काय निःसङ्गाय निःशङ्काय निर्मि-याय निर्द्वन्द्वाय निस्तरङ्गाय निरूर्मये निरामयाय निष्कलंकाय परमदैवताय सदाशिवाय महादेवाय शङ्कराय महेश्वराय महाव्रतिने महायोगिने महात्मने पञ्चमुखाय मृत्युञ्जयाय अष्टमूर्त्तये भूतनाथाय जगदानन्दाय जगत्पितामहाय जगद्दे-वाधिदेवाय जगदीश्वराय जगदादिकन्दाय जगद्भास्वते जगत्कर्मसाक्षिणे जगच्चक्षुषे त्रयीतनवे अमृतकराय शीतक-राय ज्योतिश्चक्रचक्रिणे महाज्योतिर्द्योतिताय महातमः(पः) पारे सुप्रतिष्ठिताय स्वयंकर्त्रे स्वयंहर्त्रे स्वयंपालकाय आत्मे-श्वराय नमो विश्वात्मने । ७ ।

ॐ नमोऽर्हते सर्वदेवमयाय सर्वध्यानमयाय सर्वज्ञान-मयाय सर्वतेजोमयाय सर्वमंत्रमयाय सर्वरहस्यमयाय सर्व-भावाभावजीवजीवेश्वराय अरहस्यरहस्याय अस्पृहस्पृहणीयाय अचिन्त्यचिन्तनीयाय अकामकामधेनवे असङ्कल्पितकल्पद्रुमाय अचिन्त्यचिन्तामणये चतुर्दशरज्ज्वात्मकजीवलोकचूडामणये चतुरशीतिलक्षजीवयोनिप्राणिनाथाय पुरुषार्थनाथाय परमार्थ-नाथाय अनाथनाथाय जीवनाथाय देवदानवमानवसिद्धसे-नाधिनाथाय । ८ ।

ॐ नमोऽर्हते निरञ्जनाय अनन्तकल्याणनिकेतनकीर्तना(र्तिता)य सुगृहीतनामधेयाय (महिमामयाय) धीरोदात्तधीरोद्धतधीरशान्तधीरललितपुरुषोत्तमपुण्यश्लोकशतसहस्रलक्षकोटिवन्दितपादारविन्दाय सर्वगताय । ९ ।

ॐ नमोऽर्हते सर्वसमर्थाय सर्वप्रदाय सर्वहिताय सर्वाधिनाथाय कस्मैचन क्षेत्राय पात्राय तीर्थाय पावनाय पवित्राय अनुत्तराय उत्तराय योगाचार्याय सम्प्रक्षालनाय प्रवराय आग्रेयाय वाचस्पतये माङ्गल्याय सर्वात्मनीनाय सर्वार्थाय अमृताय सदोदिताय ब्रह्मचारिणे तायिने दक्षिणीयाय निर्विकाराय वज्रर्षभनाराचमूर्त्तये तत्त्वदर्शिने पारदर्शिने परमदर्शिने निरुपमज्ञानबलवीर्यतेज शक्त्यैश्वर्यमयाय आदिपुरुषाय आदिपरमेष्ठिने आदिमहेशाय महाज्योतिःस(स्त)त्त्वाय महार्चिर्धनेश्वराय महामोहसंहारिणे महासत्त्वाय महाज्ञामहेन्द्राय महालयाय महाशान्ताय महायोगीन्द्राय अयोगिने महामहीयसे महाहंसाय हंसराजाय महासिद्धाय शिवमचलमरुजमनन्तमक्षयमव्याबाधमपुनरावृत्तिमहानन्द महोदय सर्वदुःखक्षय कैवल्य अमृत निर्वाणमक्षर परब्रह्म निःश्रेयसमपुनर्भव सिद्धिगतिनामधेय स्थान सम्प्राप्तवते चराचर अवते नमोऽस्तु श्रीमहावीराय त्रिजगत्स्वामिने श्रीवर्धमानाय । १० ।

ॐ नमोऽर्हते केवलिने परमयोगिने (भक्तिमार्गयोगिने) विशालशासनाय सर्वलब्धिसम्पन्नाय निर्विकल्पाय कल्पना-

तीताय कलाकलापकलिताय विस्फुरदुरुशुक्लध्यानाग्निनिर्दग्ध-कर्मबीजाय प्राप्तानन्तचतुष्टयाय सौम्याय शान्ताय मङ्गल-वरदाय अष्टादशदोषरहिताय संस्तुतविश्वसमीहिताय स्वाहा ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं नमः । ११ ।

लोकोत्तमो निष्प्रतिमस्त्वमेव, त्वं शाश्वतं मङ्गलमप्यधीश ! ।
त्वामेकमर्हन् शरणं, प्रपद्ये, सिद्धर्षिसद्धर्ममयस्त्वमेव ॥ १ ॥

त्वं मे माता पिता नेता, देवो धर्मो गुरुः परः ।
प्राणाः स्वर्गोऽपवर्गश्च, तत्त्वं सत्त्वं गतिर्मतिः ॥ २ ॥

जिनो दाता जिनो भोक्ता, जिनः सर्वमिदं जगत् ।
जिनो जयति सर्वत्र, यो जिनः सोऽहमेव च ॥ ३ ॥

यत्किंचित् कुर्महे देव !, सदा सुकृतदुष्कृतम् ।
तन्मे निजपदस्थस्य, हुं क्षः क्षपय त्वं जिन ! ॥ ४ ॥

गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं, गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिः श्रयति मां येन, त्वत्प्रसादात्त्वयि स्थितम् ॥ ५ ॥

इति श्री वर्धमानजिननाममन्त्रं स्तोत्रं ॥ इति शक्रस्तवः ॥
प्रतिष्ठायां शान्तिकविधौ पठितं महासुखाय स्यात् ।

१ इतीमं पूर्वोक्तमिन्द्रस्तवैकादशमन्त्रराजोपनिषद्गर्भं अष्ट-महासिद्धिप्रदं सर्वपापनिवारणं सर्वपुण्यकारणं सर्वदोषहरं सर्वगुणाकरं महाप्रभावं अनेकसम्यग्दृष्टिभद्रकदेवताशत-सहस्रशुश्रूषितं भवान्तरकृतासंख्यपुण्यप्राप्यं सम्यग् जपतां

पठतागुणयता शृण्वता समनुप्रेक्षमाणाना भव्यजीवानां चराचरेऽपि (जीवलोके) सद्वस्तु तन्नास्ति यत् करतलप्रणयि न भवतीति । किं च—

२ इतीम पूर्वोक्तमिन्द्रस्तवैकादशमन्त्रराजोपनिषद्गर्भं इत्यादि यावत्सम्यग्जपतां भव्यजीवाना भवनपति व्यन्तर ज्योतिष्क वैमानिकवासिनो देवाः सदा प्रसीदन्ति। व्याधयो विलीयन्ते ।

३ इतीम० भव्यजीवाना पृथिव्यप्तेजोवायुगगनानि भवन्त्यनुकूलानि ।

४ इतीम० भव्यजीवानांसर्वसपदा मूल जायते जिनानुरागः ।

५ इतीम० भव्यजीवाना साधव' सौमनस्येनानुग्रहपरा जायन्ते ।

६ इतीम० भव्यजीवानां खलाः क्षीयन्ते ।

७ इतीम० भव्यजीवाना जल–स्थल–गगनचराः क्रूरजन्तवोऽपि मैत्रीमया जायन्ते ।

८ इतीम० भव्यजीवाना अधमवस्तून्यपि उत्तमवस्तुभाव प्रपद्यन्ते ।

९ इतीम० भव्यजीवाना धर्मार्थकामा गुणाभिरामा जायन्ते।

१० इतीम० भव्यजीवाना ऐहिक्य' सर्वा अपि शुद्धगोत्र–

कलत्र–पुत्र–मित्र–धन–धान्य–जीवित–यौवन—रूपा–ऽऽरोग्य–यशःपुरस्सराः सर्वजनानां संपदः परभागजीवितशालिन्यः सदुदर्काः सुसंमुखीभवन्ति। किं बहुना?

११ इतीमं० भव्यजीवानांआमुष्मिक्यः सर्वमहिमास्वर्गापवर्गश्रियोऽपि क्रमेण यथेष्टं(च्छं) स्वयं स्वयंवरणोत्सवसमुत्सुका भवन्तीति। सिद्धिः(द्धः) श्रेयःसमुदयः(दायः।

यथेन्द्रेण प्रसन्नेन, समादिष्टोऽर्हतां स्तवः।

तथाऽयं सिद्धसेनेन, प्रपेदे(लिलिखे) संपदां पदम् ॥१॥

इति श्रीसिद्धसेनदिवाकरकृतः
शक्रस्तवः ॥

॥ श्रीजिनप्रभसूरिप्रणीत ॥

श्रीगौतमस्वामिस्तोत्रम्

मन्त्रगर्भित

ॐ नमस्त्रिजगन्नेतुर्वीरस्याग्रिमसूनवे ।
समग्रलब्धिमाणिक्यरोहणायेन्द्रभूतये ॥ १ ॥
पादाम्भोज भगवतो गौतमस्य नमस्यताम् ।
वशीभवन्ति त्रैलोक्यसम्पदो विगतापदः ॥ २ ॥
तव सिद्धस्य बुद्धस्य पादाम्भोजरज' कणः ।
पिपर्त्ति कल्पशाखीव कामितानि तनूभृताम् ॥ ३ ॥
श्रीगौतमाऽक्षीणमहानसस्य तव कीर्तनात् ।
सुवर्णपुष्पा पृथिवीमुच्चिनोति नरश्चिरम् ॥ ४ ॥
अतिशेषेतरां धाम्ना भगवन् भास्करीं श्रियम् ।
अतिसौम्यतया चान्द्रीमहो ते भीमकान्तता ॥ ५ ॥
विजित्य ससारमायाबीज मोहमहीपतिम् ।
नरः स्यान्मुक्तिराज्यश्रीनायकस्त्वत्प्रसादत' ॥ ६ ॥
द्वादशाङ्गीनिधौ वेधाः श्रीन्द्रादिसुरसेवितः ।
अगण्यपुण्यनैपुण्य तेषा साक्षात्कृतोऽसि यैः ॥ ७ ॥
नमः स्वाहापतिवयोतिस्तिरस्कारितनुत्विषे ।
श्रीगौतमगुरो ! तुभ्य वागीशाय महात्मने ॥ ८ ॥
इति श्रीगौतम ! स्तोत्र–मन्त्र ते स्मरतोऽन्वहम् ।
श्रीजिनप्रभसूरेस्त्व भव सर्वार्थसिद्धये ॥ ९ ॥

मत्र ॐ नमोभगवतो गौतमस्य सिद्धस्य बुद्धस्य अक्षीणमहानसस्य भगवन् भास्करीं श्रियम् ह्रीं नम स्वाहा

श्रीवीरजिनस्तवनम्

जय श्रीसर्वसिद्धार्थ! सिद्धार्थनृपनन्दन!।
सुमेरुधीर! गम्भीर! महावीर! जिनेश्वर! ॥ १ ॥
योऽप्रमेयप्रमाणोऽपि सप्तहस्तप्रमो मितः।
पूर्णेन्दुवर्ण्यवर्णोऽपि स्वर्णवर्णसवर्णकः ॥ २ ॥
सदृशं कौशिके शक्रे सर्पे च क्रमसंस्पृशि।
पीयूषवृष्टिसृष्ट्या यं दृष्ट्या दिष्ट्या विदुर्बुधाः ॥ ३ ॥
विष्टपत्रितयोत्सङ्गरङ्गद्तुङ्गकीर्त्तिना।
सनाथं येन नाथेन विश्वं विश्वम्भरातलम् ॥ ४ ॥
यस्मै चक्रे नमः सेवाहेवाकोत्सुकमानसैः।
वीराय गतवैराय मर्त्यामर्त्यासुरेश्वरैः ॥ ५ ॥
यस्माद् द्वेषादयो दोषाः क्षिप्रं क्षीणाः क्षमाखनेः।
दोषा पूषमयूखेभ्य इव हर्यक्षलक्षणात् ॥ ६ ॥
यद्देहद्युतिसन्दोहसन्देहितवपुर्दधौ।
रविः खद्योतपोतद्युत्याडम्बरविडम्बनाम् ॥ ७ ॥
भविनां यत्र चित्तस्थे स्युर्धी(श्री)वृद्धिसिद्धयः।
त वर्द्धमानमानौमि वर्द्धमानसुभावनः ॥ ८ ॥
इति स्ते स्तवं पठति वीर! जिनचन्द्र! जातरोमाञ्चः।
यात्यपवर्गं स द्रुतमखर्वगर्वारिवर्गजयी ॥ ९ ॥

॥ जिन सहस्त्रनामलघु स्तोत्रम् ॥

नमस्त्रिलोकनाथाय, सर्वज्ञाय महात्मने ।
वक्षे तस्यैव नामानि, मोक्षसौख्याभिलापया ॥ १ ॥
निर्मल' साश्वतो शुद्धः, निर्विकल्पो निरामयः ।
निःशरीरो निरातङ्कः, सिद्धः सूक्ष्मो निरजनः ॥ २ ॥
निष्कलको निरालम्बो, निर्मोहो निर्मलोत्तमः ।
निर्भयो निरहङ्कारो, निर्विकारोथ निष्क्रियः ॥ ३ ॥
निर्दोषो निरुजः शान्तो निर्भेद्यो निर्मम' शिव' ।
निस्तरगो निराकारो, निष्कर्मो निष्कलप्रभुः ॥ ४ ॥
निर्वादो निरुपज्ञानः, निरागो निरघो जिनः ।
निःशब्दः प्रतिमश्रेष्ठ, उत्कृष्टो ज्ञान-गोचर. ॥ ५ ॥
निःसगः प्राप्तकल्यो, नैष्ठिकः शब्दवर्जितः ।
अनिंद्यो महापूतात्मा, जगत् शिखरशेखरः ॥ ६ ॥
निःशब्दो गुणसपन्न', पाप ताप प्रणाशनः ।
सोपि योगात् शुभ प्राप्त, कर्मद्योतिविलानहः ॥ ७ ॥
अजरो अमरः सिद्ध, अर्चितः अक्षयो विभुः ।
अमूर्तो अच्युतो ब्रह्मा, विष्णुरीशः प्रजापतिः ॥ ८ ॥
अनिंद्यो विश्वनाथश्च, अजो अनुपमो भवः ।
अप्रमेयो जगन्नाथो बोधरूपो जिनात्मकः ॥ ९ ॥
अव्यय सकलाराध्यो, निष्पन्नो ज्ञानलोचनः ।
अछेद्यो निर्मलो नित्यः सर्वशल्यविवर्जितः ॥ १० ॥

अजेयः सर्वतोभद्रो निष्कषायो भवांतकः ।
विश्वनाथः स्वयंबुद्धो वीतरागो जिनेश्वरः ॥ ११ ॥
अशंकः सहजानंदः अवाङ्मानस गोचरः ।
असाध्यः शुद्धचैतन्यः, कर्मनोकर्मवर्जितः ॥ १२ ॥
अनंतो विमलः ज्ञानी, निस्पृहीश निष्प्रकोपकः ।
कर्म्माजितो महात्मानः, लोकत्रयशिरोमणिः ॥ १३ ॥
अव्याबाधो वरः शंभु, विश्ववेदी पितामहः ।
सर्वभूतहितो देवः, सर्वलोकशरण्यकः ॥ १४ ॥
आनन्दरूपचैतन्यो, भगवांस्त्रिजगद्गुरुः ।
अनंतानंतधीशक्तिः, सत्यव्यक्ताव्ययात्मकः ॥ १५ ॥
अष्टकर्म्मविनिर्मुक्तः, सप्तधातु विवर्जितः ।
गौरवादित्रयाद्दूरः सर्वज्ञानादि संयुतः ॥ १६ ॥
अभयः प्राप्तकैवल्यो निर्माणो निरपेक्षकः ।
निष्कलं केवलज्ञानी, मुक्तिसौख्यप्रदायकः ॥ १७ ॥
अनामयो महाराध्यो, वरदो ज्ञानपावकः ।
सर्वेशः सतसुखावासः, जिनेंद्रो मुनिसंस्तुतः ॥ १८ ॥
अच्युतः परमज्ञानी, विश्वतत्त्वप्रकाशकः ।
प्रबुद्धो भगवान्नाथः, पुस्तुतः पुण्यकारकः ॥ १९ ॥
शंकरः सुगतो रौद्रः, सर्वज्ञो मदनांतकः ।
ईश्वरो भुवनाधीशः, सच्चितः पुरुषोत्तमः ॥ २० ॥

सद्योजातमहात्मान, विमुक्तो मुक्तिवल्लभः ।
योगींद्रोऽनादि ससिद्धः, निरीहो ज्ञानगोचर ॥ २१ ॥
सदाशिवः चतुर्वक्त्रः सत्सौख्यस्त्रिपुरातकः ।
त्रिनेत्रः त्रिजगत्पूज्यः, कल्याणकोघ्रमर्त्तिकः ॥ २२ ॥
सर्वसाधुजनैर्वन्द्यः, सर्वपापविवर्जितः ।
सर्वदेवाधिदेवश्च, सर्वभूतहितकरः ॥ २३ ॥
स्वयविद्यो महात्मान, प्रसिद्धः पापनाशनः ।
तनुमात्रश्चिदानदः, चैतन्यश्चैत्यवैभवः ॥ २४ ॥
सकलातिशयो देवः मुक्तिस्थो महतामह. ।
मुक्तिकार्याय सतुष्टो, निराग' परमेश्वरः ॥ २५ ॥
महादेवो महावीरो, महामोहविनाशकः ।
महाभागो महादर्श., महामुक्तिप्रदायक' ॥ २६ ॥
महाज्ञानी महायोगी । महातपो महात्मकः ।
महर्द्धिको महावीर्यो, महांतिकपदस्थितः ॥ २७ ॥
महापूज्यो महावद्यो, महाविघ्न–विनाशकः ।
महासौख्यो महापुसो । महामहिमो अच्युतः ॥ २८ ॥
मुक्तामुक्तिजसबोध', एकानेकविनिश्चल' ।
सर्वबधविनिर्मुक्तः सर्वलोकप्रधानक' ॥ २९ ॥
महाशूरो महाधीरो, महादुःखविनाशकः ।
महामुक्तिप्रदो धीरो, महाहृद्यो महागुरुः ॥ ३० ॥
निर्मारो मारविध्वसी, निष्कामो विषयाच्युतः ।
भगवतोमहाशातो शान्तिकल्याणकारकः ॥ ३१

प्रभो! त्वत्पादयोर्नित्य-मरुणामरुणोदये ।
स्पृशन्न स्पृश्यते नाथ!, पातकैर्मनपातकैः ॥ १० ॥

त्वत्पादनखचन्द्राणां, ज्योत्स्नया स्नपिता विभो! ।
प्रणन्तारः प्रगे भान्ति, मूर्त्तपुण्योज्ज्वला इव ॥ ११ ॥

किं गुणैः किं कुलेनापि, किं रूपेण किमाज्ञया ? ।
किं विभो! विभवेनापि, न चेन्नित्यं त्वमीक्ष्यसे ? ॥१२॥

एतत्प्रभातकुलकं पुलकं दधानो,
यस्ते निशान्तमुपगम्य निशान्त एव ।
स्वामिन्! पठेत् त्रिदिववासमुपास्य पश्चा-
च्चन्द्रप्रभामलमुपैति पदं स मुक्तः ॥ १३ ॥

श्री चन्द्रप्रभसूरि विरचितं साधारण
जिनस्तवनं समाप्तं

अद्याष्टकस्तोत्रम्

अद्य मे सफल जन्म, नेत्रे च सफले मम ।
त्वामद्राक्ष यतो देव, हेतुमक्षयसम्पदः ॥ १ ॥

अद्य ससारगभीरपारावारः सुदुस्तरः ।
सुतरोऽय क्षणेनैव जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ २ ॥

अद्य मे क्षालितगात्र नेत्रे च विमले कृते ।
स्नातोह धर्म तीर्थेषु जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ ३ ॥

अद्य मे सफल जन्म प्रशस्त सर्वमङ्गलम् ।
ससारार्णवतीर्णोऽह जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ ४ ॥

अद्यकर्माष्टकज्वाल विधूत सकषायकम् ।
दुर्गतेर्विनिवृत्तोऽह जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ ५ ॥

अद्य सौम्या गृहाः सर्वाःशुभाश्चैकादशास्थिताः ।
नष्टानि विघ्नजालानि जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ ६ ॥

अद्य नष्टो महाबन्धः कर्मणा दुःखदायकः ।
सुखसग समापन्नो जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ ७ ॥

अद्य कर्माष्टकं नष्ट दुःखोत्पादनकारकम् ।
सुखाम्भोधिनिमग्नोऽहजिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ ८ ॥

अद्य मिथ्यान्धकारस्य हन्ता ज्ञान दिवाकरः ।
उदितो मच्छरीरेऽस्मिन् जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ ९ ॥

अद्याहं सुकृती भूतो निर्धूताशेषकल्मषः ।
भुवनत्रयपूज्योहं जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ १० ॥

चिदानन्दैकरूपाय जिनाय परमात्मने ।
परमात्माप्रकाशाय नित्यं सिद्धात्मने नमः ॥ ११ ॥

अन्यथाशरणं नास्ति त्वमेवशरणं मम ।
तस्मात्कारुण्य भावेन रक्ष रक्ष जिनेश्वर ॥ १२ ॥

नहि त्राता न हि त्राता नहि त्राता जगत्त्रये ।
वीतरागात्परो देवो न भूतो न भविष्यति ॥ १३ ॥

जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्जिने भक्ति र्दिने दिने ।
सदामेऽस्तु सदामेऽस्तु सदामेऽस्तु भवे भवे ॥ १४ ॥

जिनधर्मविनिर्मुक्त मा भवश्चक्रवर्त्यपि ।
स्याश्चेटोऽपि दरिद्रोपि जिनधर्मानुवासितः ॥ १५ ॥

श्रीजिन सहस्र नामस्तोत्रम् ।

प्रमिद्धाष्टसहस्रेद्धलक्षण त्वा गिरा पतिम् ।
नाम्नामष्टसहस्रेणतोष्टुमोऽभीष्टमिद्धये ॥ १ ॥

श्रीमान्स्वयभूर्वृषभ· शभवः शभुरात्मभू· ।
स्वयप्रभः प्रभुर्भोक्ता विश्वभूरपुनर्भव. ॥ २ ॥

विश्वात्मा विश्व लोकेशो विश्वतश्चक्षुरक्षरः ।
विश्वविद्विश्वविद्येशो विश्वयोनिरनीश्वरः ॥ ३ ॥

विश्वदृश्वा विभुर्धाता विश्वेशोविश्वलोचनः ।
विश्वव्यापी विधिर्वेधाः शाश्वतो विश्वतोमुखः ॥ ४ ॥

विश्वकर्मा जगज्ज्येष्ठो विश्वमूर्तिर्जिनेश्वरः ।
विश्वदृग्विश्व भूतेशो विश्वज्योति रनीश्वरः ॥ ५ ॥

जिनो जिष्णु रमेयात्मा विश्वरीशोजगत्पतिः ।
अनन्तचिदचिन्त्यात्मा भव्यबन्धुरबन्धनः ॥ ६ ॥

युगादिपुरुषो ब्रह्मा पञ्चब्रह्ममयः शिवः ।
परःपरतरः सूक्ष्मः परमेष्ठी सनातनः ॥७॥

स्वय ज्योतिरजोऽजन्मा ब्रह्मयोनिरयोनिज. ।
मोहारिविजयी जेताधर्मचक्री दयाध्वजः ॥ ८ ॥

प्रशान्तारिरनन्तात्मा योगी योगीश्वरार्चितः ।
ब्रह्मविद्ब्रह्मतत्त्वज्ञो ब्रह्मोद्याविद्यतीश्वर. ॥ ९ ॥

सिद्धो बुद्धः प्रबुद्धात्मा सिद्धार्थः सिद्धशासनः ।
सिद्धः सिद्धांत विद्धयः सिद्धसाध्योजगद्धितः ॥१०॥
सहिष्णुरच्युतोऽनन्तः प्रभविष्णुर्भवोद्भवः ।
प्रभूष्णु रजरोऽजर्यो भ्राजिष्णुर्धीश्वरोऽव्ययः ॥ ११ ॥
विभावसुरसंभूष्णुः स्वयंभूष्णुः पुरातनः ।
परमात्मा परंज्योतिस्त्रिजगत्परमेश्वरः ॥ १२ ॥

इतिश्री मदादि शतम् ॥ १ ॥

दिव्यभाषापतिर्दिव्यः पूतवाक्पूतशासनः ।
पूतात्मा परमज्योतिर्धर्माध्यक्षो दमीश्वरः ॥ १ ॥
श्रीपतिभगवानर्हन्नरजा विरजाः शुचिः ।
तीर्थकृत्केवलीशानः पूजार्हः स्नातकोऽमलः ॥ २ ॥
अनन्त दीप्तिर्ज्ञानात्मास्वयं बुद्धः प्रजापतिः ।
मुक्तःशक्तो निराबाधो निष्कलो भुवनेश्वरः ॥ ३ ॥
निरञ्जनो जगज्ज्योतिर्निरुक्तोक्तिर्निरामयः ।
अचलस्थितिरक्षोभ्यः कूटस्थः स्थाणु रक्षयः ॥ ४ ॥
अग्रणीर्ग्रामणीर्नेता प्रणेता न्यायशास्त्रकृत् ।
शास्ता धर्मपतिर्धर्म्योधर्मात्मा धर्मतीर्थकृत् ॥ ५ ॥
वृषध्वजो वृषाधीषो वृषकेतुर्वृषायुधः ।
वृषो वृषपतिर्भर्ता वृषभाङ्को वृषोद्भवः ॥ ६ ॥
हिरण्यनाभिभूतात्मा भूतभृद्भूतभावनः ।
प्रभवो विभवो भास्वान् भवो भावो भवान्तकः ॥ ७ ॥

हिरण्यगर्भः श्रीगर्भः प्रभूतविभवोद्भवः ।
स्वयंप्रभुः प्रभूतात्मा भूतनाथो जगत्प्रभुः ॥ ८ ॥
सर्वादिः सर्वदृक् सार्वः सर्वज्ञः सर्वदर्शनः ।
सर्वात्मा सर्वलोकेशः सर्ववित् सर्वलोकजित् ॥ ९ ॥
सुगतिः सुश्रुतः सुश्रुक् सूरिः बहुश्रुतः ।
विश्रुतो विश्वतः पादो विश्वशीर्षः शुचिश्रवाः ॥ १० ॥
सहस्रशीर्षः क्षेत्रज्ञः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
भूतभव्यभवद्भर्ता विश्वविद्यामहेश्वरः ॥ ११ ॥

इति दिव्यादिशतम् ॥ २ ॥

स्थविष्ठः स्थविरो ज्येष्ठः पुष्ठः प्रेष्ठो वरिष्ठधीः ।
स्थेष्टो गरिष्ठो बहिष्ठः श्रेष्ठो निष्ठो गरिष्ठगीः ॥ १ ॥
विश्वभृद्विश्वसृट् विश्वेट् विश्वभुग्विश्वनायकः ।
विश्वाशीर्विश्वरूपात्मा विश्वजिद्विजितान्तकः ॥ २ ॥
विभवो विभयो वीरो विशोको विजरोजरन् ।
विरागो विरतोमङ्गो विविक्तो वीतमत्सरः ॥ ३ ॥
विनेयजनताबन्धु विलीनाशेषकल्मषः ।
वियोगो योगविद्विद्वान्विधाता सुविधिः सुधीः ॥ ४ ॥
क्षान्तिभाक्पृथिवीमूर्तिः शान्तिभाक्सलिलात्मकः ।
वायुमूर्तिरसङ्गात्मा वह्निमूर्तिरधर्मधृक् ॥ ५ ॥
सुयज्वा यजमानात्मा सुत्वा सुत्रामपूजितः ।
ऋत्विग्यज्ञपतिर्यज्ञो यज्ञाङ्गममृतं हविः ॥ ६ ॥

व्योममूर्तिरमूर्तात्मा निर्लेपो निर्मलोऽचलः ।
सोममूर्तिः सुसौम्यात्मा सूर्यमूर्तिर्महाप्रभः ॥ ७ ॥
मन्त्रविन्मन्त्रकृन्मन्त्री मन्त्रमूर्तिरनन्तकः ।
स्वतन्त्रस्तन्त्रकृत्स्वान्तः कृतान्तान्तः कृतान्तकृत् ॥ ८ ॥
कृती कृतार्थः सत्कृत्यः कृतकृत्यः कृतक्रतुः ।
नित्यो मृत्युंजयोमृत्युरमृतात्मामृतोद्भवः ॥ ९ ॥
ब्रह्मनिष्ठः परंब्रह्म ब्रह्मात्मा ब्रह्मसम्भवः ।
महाब्रह्मपतिर्ब्रह्मेट् महाब्रह्मपदेश्वरः ॥ १० ॥
सुप्रसन्नः प्रसन्नात्मा ज्ञानधर्म दमप्रभुः ।
प्रशमात्मा प्रशांतात्मा पुराणपुरुषोत्तमः ॥ ११ ॥

इति स्थविष्टादिशतम् ॥ ३ ॥

महाशोकध्वजोशोकः कः स्रष्टा पद्मविष्टरः ।
पद्मेशः पद्मसम्भूतिः पद्मनाभिरनुत्तरः ॥ १ ॥
पद्मयोनिर्जगद्योनिरित्यः स्तुत्यः स्तुतीश्वरः ।
स्तवनार्हो हृषीकेशो जितजेयः कृतक्रियः ॥ २ ॥
गणाधिपो गणज्येष्ठो गण्यः पुण्योगणाग्रणीः ।
गुणाकारो गुणाम्भोधि र्गुणज्ञो गुणनायकः ॥ ३ ॥
गुणादरी गुणोच्छेदीनिर्गुणः पुण्यगीर्गुणः ।
शरण्यः पुण्यवाक्पूतो वरेण्यः पुण्यनायकः ॥ ४ ॥
अगण्यः पुण्यधीर्गण्यः पुण्यकृत्पुण्यशासनः ।
धर्मारामो गुणग्रामः पुण्यापुण्य निरोधकः ॥ ५ ॥

अतीन्द्रोऽतीन्द्रियो धीन्द्रो महेन्द्रोऽतीन्द्रियार्थदृक् ।
अनीन्द्रियोऽहमिन्द्राच्यों महेन्द्रमहितो महान् ॥ ५ ॥
उद्भवः कारणं कर्ता पारगो भवतारकः ।
अगाह्यो गहनो गुह्यः परार्ध्यः परमेश्वरः ॥ ६ ॥
अनन्तर्द्धिरमेयर्द्धि रचिन्त्यर्द्धि समग्रर्द्धिः ।
प्राग्ह्यः प्राग्रहरोऽभ्यग्र्यः प्रत्यग्रोऽग्रयोग्रिमोग्रजः ॥ ७ ॥
महातपा महातेजामहोदर्को महोदयः ।
महायशो महाधामा महासत्वो महाधृतिः ॥ ८ ॥
महाधैर्यो महावीर्यो महासम्पन्महाबलः ।
महाशक्तिर्महाज्योतिर्महाभूतिर्महाद्युतिः ॥ ९ ॥
महामतिर्महानीतिर्महाक्षांतिर्महोदयः ।
महाप्राज्ञो महाभागो महानदो महाकविः ॥ १० ॥
महामहा महाकीर्तिर्महाकांतिर्महावपुः ।
महादानो महाज्ञानो महायोगो महागुणः ॥ ११ ॥
महामहपतिः प्राप्तमहाकल्याणपंचकः ।
महाप्रभुर्महाप्रातिहार्याधीशो महेश्वरः ॥ १२ ॥

इति श्रीवृक्षादिशतम् ॥ ५ ॥

महामुनिर्महामौनी महाध्यानी महादमः ।
महाक्षमो महाशीलो महायज्ञो महामखः ॥ १ ॥
महाव्रतपतिर्मह्यो महाकांतिधरोधिपः ।
महामैत्री महामेयो महापायो महोदयः ॥ २ ॥

महाकारुण्यको मता महामन्त्रो महायतिः ।
महानादो महाघोषो महेज्यो महसापतिः ॥ ३ ॥
महाध्वरधरो धुर्यो महौदार्यो महिष्ठवाक् ।
महात्मा महामाधाम महर्षिर्महितोदयः ॥ ४ ॥
महाक्लेशांकुशः शूरो महाभूतपतिर्गुरुः ।
महापराक्रमोऽनन्तो महाक्रोधरिपुर्वशी ॥ ५ ॥
महाभवाब्धिसंतारि र्महामोहाद्रि सूदनः ।
महागुणाकरः क्षान्तो महायोगीश्वरः शमी ॥ ६ ॥
महाध्यानपतिर्ध्याता महाधर्मा महाव्रतः ।
महाकर्मारिहात्मज्ञो महादेवो महेशिता ॥ ७ ॥
सर्वक्लेशापहः साधुः सर्वदोषहरो हरः ।
असंख्येयोऽप्रमेयात्मा शमात्मा प्रशमाकरः ॥ ८ ॥
सर्वयोगीश्वरोऽचिन्त्यः श्रुतात्मा विष्टरश्रवा ।
दान्तात्मा दमतीर्थेशो योगात्मा ज्ञानसर्वगः ॥ ९ ॥
प्रधानमात्मा प्रकृतिः परमः परमोदयः ।
प्रक्षीणबन्धः कामारिः क्षेमकृत्क्षेमशासनः ॥ १० ॥
प्रणवः प्रणयः प्राणः प्रणादः प्रणतेश्वरः ।
प्रमाण प्रणिधिर्दक्षो दक्षिणोध्वर्युरध्वरः ॥ ११ ॥
आनन्दोनन्दनो नन्दो वन्द्योऽनिंद्योऽभिनन्दनः ।
कामहा ‌‌ ‌ ‌ ‌ ‌ ‌ काम्यः कामधेनुररिंजयः ॥

[महाम]ुन्यादिशतम् ॥ ६ ॥

असंस्कृतः सुसंस्कारः प्राकृतो वैकृतांतकृत् ।
अंतकृत्कांतगुः कांतश्चिन्तामणिरभीष्टदः ॥ १ ॥
अजितो जितकामारिरमितोऽमितशासनः ।
जितक्रोधो जितामित्रो जितक्लेशो जितांतकः ॥ २ ॥
जिनेन्द्रः परमानन्दो मुनीन्द्रो दुन्दुभिस्वनः ।
महेन्द्रवन्द्यो योगीन्द्रो यतीन्द्रो नाभिनन्दनः ॥ ३ ॥
नाभेयो नाभिजो जातः सुव्रतोमनुरुत्तमः ।
अभेद्योनत्ययोनश्वानधिकोऽधिगुरुः सुधीः ॥ ४ ॥
सुमेधा विक्रमी स्वामी दुराधर्षो निरुत्सुकः ।
विशिष्टः शिष्टभुक् शिष्टः प्रत्ययः कमणोऽनघः ॥ ५ ॥
क्षेमी क्षेमंकरोऽक्षय्यः क्षेमधर्मपतिः क्षमी ।
अग्राह्योज्ञाननिग्राह्यो ध्यानगम्यो निरुत्तरः ॥ ६ ॥
सुकृती धातुरिज्यार्हः सुनयश्चतुराननः ।
श्रीनिवासश्चतुर्वक्त्रश्चतुरास्यश्चतुर्मुखः ॥ ७ ॥
सत्यात्मा सत्यविज्ञानः सत्यवाक्सत्यशासनः ।
सत्याशीः सत्यसन्धानः सत्यः सत्यपरायणः ॥ ८ ॥
स्थेयान्स्थवीयान्नेदीयान्दवीयान्दूरदर्शनः ।
अणोरणीयाननणुर्गुरुराद्यो गरीयसाम् ॥ ९ ॥
सदायोगः सदाभोगः सदातृप्तः सदाशिवः ।
सदागतिः सदासौख्यः सदाविद्याः सदोदयः ॥ १० ॥

सुघोषः सुमुखः सौम्यः सुखदः सुहितः सुहृद् ।
सुगुप्तागुप्तिभृद्गोप्ता लोकाध्यक्षो दमीश्वरः ॥ ११ ॥

इति असंस्कृतादिशतम् ॥ ७ ॥

बृहन्बृहस्पतिर्वाग्मी वाचस्पतिरुदारधीः ।
मनीषीधिषणो धीमाञ्छेमुशीषो गिरांपतिः ॥ १ ॥
नैकरूपो नयस्तुङ्गो नैकात्मा नैकधर्मकृत् ।
अविज्ञेयोऽप्रतर्क्यात्मा कृतज्ञः कृतलक्षणः ॥ २ ॥
ज्ञानगर्भो दयागर्भो रत्नगर्भः प्रभास्वरः ।
पद्मगर्भो जगद्गर्भो हेमगर्भः सुदर्शनः ॥ ३ ॥
लक्ष्मीवांस्त्रिदशाऽध्यक्षोद्दढियानिनि ईशिता ।
मनोहरो मनोज्ञाङ्गो धीरो गभीरशासनः ॥ ४ ॥
धर्मयूपो दयायागो धर्मनेमिर्मुनीश्वरः ।
धर्मचक्रायुधो देवः कर्महा धर्मघोषणः ॥ ५ ॥
अमोघवागमोघाज्ञो निर्मलोऽमोघशासनः ।
सुरूपः सुभगस्त्यागी समयज्ञः समाहितः ॥ ६ ॥
सुस्थितः स्वास्थ्यभाक्स्वस्थो नीरजस्को निरुद्धवः ।
अलेपो निष्कलङ्कात्मा वीतरागो गतस्पृहः ॥ ७ ॥
वश्येन्द्रियो विमुक्तात्मा निःसपत्नो जितेन्द्रियः ।
प्रशान्तोनन्तधामर्षिर्मङ्गलं मलहानघः ॥ ८ ॥
अनीदृगुपमाभूतो दृष्टिर्दैवमगोचरः ।
अमूर्तो मूर्तिमानेको नैको नानैकतत्त्वदृक् ॥ ९ ॥

अध्यात्मगम्यो गम्यात्मा योगविद्योगिवन्दितः ।
सर्वत्रगः सदा भावी त्रिकालविषयार्थदृक् ॥ १० ॥
शंकरः शंवदो दान्तो दमी क्षान्तिपरायणः ।
अधिपः परमानन्दः परात्मज्ञः परात्परः ॥ ११ ॥
त्रिजगद्वल्लभोऽभ्यर्च्यस्त्रिजगन्मंगलोदयः ।
त्रिजगत्पतिपूतांघ्रिस्त्रिलोकाग्रशिखामणिः ॥ १२ ॥

इति बृहदादिशतम् ॥ ८ ॥

त्रिकालदर्शी लोकेशो लोकधाता दृढव्रतः ।
सर्वलोकातिगः पूज्यः सर्वलोकैकसारथिः ॥ १ ॥
पुराणपुरुषः पूर्वः कृतपूर्वांगविस्तरः ।
आदिदेवः पुराणाद्यः पुरुदेवोऽधिदेवता ॥ २ ॥
युगमुख्यो युगज्येष्ठो युगादिस्थितिदेशकः ।
कल्याणवर्णः कल्याणः कल्यः कल्याणलक्षणः ॥ ३ ॥
कल्याणप्रकृतिर्दीप्तः कल्याणात्मा विकल्मषः ।
विकलङ्कःकलातीतःकलिलघ्नःकलाधरः ॥ ४ ॥
देवदेवो जगन्नाथो जगद्बन्धुर्जगद्विभुः ।
जगद्धितैषी लोकज्ञः सर्वगो जगदग्रजः ॥ ५ ॥
चराचरगुरुर्गोप्यो गूढात्मा गूढगोचरः ।
सद्योजातः प्रकाशात्मा ज्वलज्ज्वलनसप्रभः ॥ ६ ॥
आदित्यवर्णो भर्माभः सुप्रभः कनकप्रभः ।
सुवर्णवर्णो रुक्माभ सूर्यकोटिसमप्रभः ॥ ७ ॥

तपनीयनिभस्तुङ्गो बालार्काभोऽनलप्रभः ।
सध्याभ्रबभ्रुर्हेमाभस्तप्तचामीकरच्छविः ॥ ८ ॥
निष्टप्त कनकच्छायः कनत्काञ्चनसन्निभः ।
हिरण्यवर्णः स्वर्णाभ. शातकुम्भनिभप्रभः ॥ ९ ॥
द्युम्नभाजातरूपाभो दीप्तजाम्बूनदद्युतिः ।
सुधौतकलधौतश्री.प्रदीप्तोहाटकद्युति. ॥ १० ॥
शिष्टेष्टः पुष्टिदः पुष्ट. स्पष्ट' स्पष्टा क्षरक्षमः ।
शत्रुघ्नो प्रतिघोऽमोघ' प्रशास्ता शासिता स्वभुः॥११॥
शान्तिनिष्ठोर्मुनिज्येष्ठ' शिवतातिः शिवप्रदः ।
शान्तिदःशान्तिकृच्छान्ति. कान्तिमान्कामितप्रदः॥१२॥
श्रेयोनिधिरधिष्ठानमप्रतिष्ठः प्रतिष्ठित' ।
सुस्थित' स्थावरः स्थाणु' प्रथीयान्प्रथितः पृथु' ॥१३॥

इति त्रिकाल दर्श्यादिशतम् ॥ ९ ॥

दिग्वासा वातरशनो निर्ग्रन्थेशो निरम्बरः ।
निष्किञ्चनो निराशंसो ज्ञानचक्षुरमोमुह' ॥ १ ॥
तेजोराशिरनन्तौजा ज्ञानाब्धिः शीलसागरः ।
तेजोमयोऽमितज्योतिर्ज्योतिर्मूर्तिस्तमोपहः ॥ २ ॥
जगच्चूडामणिर्दीप्त' सर्वविघ्नविनायक ।
कलिघ्नः कर्मशत्रुघ्नो लोकालोकप्रकाशक ॥ ३ ॥
अनिद्रालुरतन्द्रालुर्जागरूक' प्रभामयः ।
लक्ष्मीपति र्जगज्ज्योतिर्धर्मराज प्रजाहितः ॥ ४ ॥

मुमुक्षुर्बन्धमोक्षज्ञो जितान्क्षो जितमन्मथः ।
प्रशान्तरसशैलूषो भव्यपेटकनायकः ॥ ५ ॥
मूलकर्ताखिलज्योतिर्मलघ्नो मूल कारणः ।
आप्तो वागीश्वरः श्रेयाञ्छ्रेयसोक्तिर्निरुक्तवाक् ॥ ६ ॥
प्रवक्ता वचसामीशो मारजिद्विश्वभावचित् ।
सुतनुस्तनुनिर्मुक्तः सुगतो हतदुर्नयः ॥ ७ ॥
श्रीशः श्रीश्रितपादाब्जो वीतभीरभयंकरः ।
उत्सन्नदोषो निर्विघ्नो निश्चलो लोकवत्सलः ॥ ८ ॥
लोकोत्तरोलोकपतिर्लोकचक्षुरपारधीः ।
धीरधीर्बुद्धिसन्मार्गः शुद्धः सूनृत पूतवाक् ॥ ९ ॥
प्रज्ञापारमितः प्राज्ञो यतिर्नियमितेन्द्रियः ।
भदन्तो भद्रकृद्भद्रः कल्पवृक्षोवरप्रदः ॥ १० ॥
समून्मूलितकर्मारिः कर्मकाष्टाशुशुक्षणिः ।
कर्मण्यः कर्मठः प्रांशुर्हेयादेयविचक्षणः ॥ ११ ॥
अनन्त शक्तिरच्छेद्यस्त्रिपुरारिस्त्रिलोचनः ।
त्रिनेत्रस्त्र्यम्बकस्त्र्यक्षः केवलज्ञानवीक्षणः ॥ १२ ॥
समन्तभद्रः शांतारिर्धर्माचार्यो दयानिधिः ।
सूक्ष्मदर्शी जितानङ्गः कृपालुर्धर्मदेशकः ॥ १३ ॥
शुभंयुःसुखसाद्भूतः पुण्यराशिरनामयः ।
धर्मपालो जगत्पालो धर्मसाम्राज्यनायकः ॥ १४ ॥

इति दिग्वासाद्यष्टोत्तरशतम् ॥ १० ॥

धाम्नांपते तवामूनी नामान्यागमकोविदैः ।
समुच्चितान्यनुध्यायन्पुमान्पूतस्मृतिर्भवेत् ॥ १ ॥
गोचरोऽपि गिरामासां त्वमवाग्गोचरो मतः ।
स्तोता तथाप्यसंदिग्धं त्वत्तोऽभीष्टफलंभवेत् ॥ २ ॥
त्वमतोऽसि जगद्बन्धुस्त्वमतोऽसि जगद्भिषक् ।
त्वमतोऽसि जगद्धाता त्वमतोऽसि जगद्धितः ॥ ३ ॥
त्वमेकं जगतां ज्योतिस्त्वंद्विरूपोपयोगभाक् ।
त्वं त्रिरूपैकमुक्त्यङ्गं स्वोत्थानन्तचतुष्टयः ॥ ४ ॥
त्वं पञ्चब्रह्मतत्त्वात्मा पञ्चकल्याणनायकः ।
षड्भेदभावतत्त्वज्ञस्त्वं सप्तनयसंग्रहः ॥ ५ ॥
दिव्याष्टगुणमूर्तिस्त्वं नवकेवललब्धिकः ।
दशावतारनिर्धार्यो मां पाहि परमेश्वर ॥ ६ ॥
युष्मन्नामावलीदृब्धविलसत्स्तोत्रमालया ।
भवन्तं वरिवस्यामः प्रसीदानुगृहाण नः ॥ ७ ॥
इदं स्तोत्रमनुस्मृत्य पूतो भवति भाक्तिकः ।
यः संपाठं पठत्येनं स स्यात् कल्याणभाजनम् ॥ ८ ॥
ततः सदेदं पुण्यार्थी पुमान्पठति पुण्यधीः ।
पौरुहूतीं श्रियं प्राप्तुं परमामभिलाषुकः ॥ ९ ॥
स्तुत्वेति मघवा देवं चराचरजगद्गुरुम् ।
ततस्तीर्थविहारस्य व्यधात्प्रस्तावनामिमाम् ॥ १० ॥
स्तुतिः पुण्यगुणोत्कीर्तिः स्तोता भव्यः प्रसन्नधीः ।
निष्ठितार्थो भवांस्तुत्यः फलं नैःश्रेयसं सुखम् ॥ ११ ॥

यः स्तुत्यो जगतां त्रयस्य न पुनः स्तोता स्वयं कस्यचित्
ध्येयो योगिजनस्य यश्च नितरां ध्याता स्वयं कस्यचित् ।
यो नेतॄनपि तेनमन्नतमलं नन्तव्यपक्षेक्षणः
सश्रीमाञ्जगतां त्रयस्य च गुरुर्देवः पुरुः पावनः॥१२॥

तं देवं त्रिदशाधिपार्चितपदं घातिक्षयानन्तरं
प्रोत्थानन्तचतुष्टयं जिनमिमं भव्याब्जनीनामिनम् ।
*मानस्तम्भविलोकनानतजगन्मान्यं त्रिलोकी पतिं
प्राप्ताचिन्त्यबहिर्विभूतिमनघं भक्त्या प्रवन्दामहे॥१३॥

॥ इति भगवज्जिनसेनाचार्यविरचितादिपुराणान्तर्गतं
जिनसहस्रनामस्तवनं समाप्तम् ॥

*श्वेताम्बरीयागमग्रन्थेषु मानस्तम्भवर्णनं न दरीदृश्यते ये आशाम्बरीय ग्रन्थेभ्यः प्राचीनतमाः सन्ति ।

दृष्टाष्टकस्तोत्रम्

दृष्टं जिनेन्द्रभवनं भवतापहारि
भव्यात्मनां विभवसम्भवभूरि हेतुः ।
दुग्धाब्धिफेनधवलोज्ज्वलकूटकोटी-
नद्धध्वजप्रकारराजिविराजमानम् ॥ १ ॥

दृष्टं जिनेन्द्र भवनं भुवनैकलक्ष्मी-
धामर्द्धिवर्द्धितमहामुनिसेव्यमानम् ।
विद्याधरामर वधूजनमुक्तदिव्य-
पुष्पाञ्जलिप्रकरशोभितभूमिभागम् ॥ २ ॥

दृष्टं जिनेन्द्र भवनं भवनादिवास-
विख्यातनाकगणिकागणगीयमानम् ।
नानामणिप्रचयभासुररश्मिजाल-
व्यालीढनिर्मलविशालगवाक्षजालम् ॥ ३ ॥

दृष्टं जिनेन्द्र भवनं सुरसिद्धयक्ष
गन्धर्वकिन्नरकरार्पितवेणुवीणा।
सङ्गीतमिश्रितनमस्कृतधीरनादै
रापूरिताम्बरतलोरुदिगन्तरालम् ॥ ४ ॥

दृष्टं जिनेन्द्र भवनं विलसद्विलोलमाला
कुलालिललितालकविभ्रमाणम् ।
माधुर्यवाद्यलयनृत्यविलासिनीनां
लीलाचलद्वलयनूपुरनादरम्यम् ॥ ५ ॥

दृष्टं जिनेन्द्र भवनं मणिरत्नहेम-
सारोज्ज्वलैः कलशचामरदर्पणाद्यैः ।
सन्मङ्गलैः सततमष्टशतप्रभेदै
र्विभ्राजितंविमलमौक्तिकदामशोभम् ॥ ६ ॥

दृष्टं जिनेद्र भवनं वरदेवदारु-
कपुरचन्दनतरुष्कसुगन्धिधूपैः ।
मेघायमानगगने पवनाभिघात-
चंचलद्विमलकेतनतुङ्गशालम् ॥ ७ ॥

दृष्टं जिनेन्द्रभवनं धवलातपत्र-
च्छायानिमग्नतनुयक्षकुमारवृन्दैः ।
दोधूयमानसितचामरपङ्क्तिभासं
भामण्डलद्युतियुतप्रतिमाभिरामम् ॥ ८ ॥

दृष्टं जिनेन्द्रभवनं विविधप्रकार-
पुष्पोपहाररमणीयसुरत्नभूमि ।
नित्यं वसन्ततिलकश्रियमादधानं
सन्मङ्गलं सकलचन्द्रमुनीन्द्रवंद्यम् ॥ ९ ॥

दृष्टं मयाद्यमणि काञ्चनचित्रतुङ्ग-
सिंहासनादिजिनविम्बविभूतियुक्तम् ।
चैत्यालयं यदतुलं परिकीर्तितं मे
सन्मङ्गलंसकलचन्द्रमुनीन्द्रवन्द्यम् ॥ १० ॥

॥ इति दृष्टाष्टकस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

सुप्रभातस्तोत्रम्

(श्रीपरमात्मने नम)

यत्स्वर्गावतरोत्सवे यद् भवज्जन्माभिषेकोत्सवे
यद्दीक्षाग्रहणोत्सवे यदखिलज्ञानप्रकाशोत्सवे ।
यन्निर्वाणगमोत्सवे जिनपतेः पूजाद्भुत तद्भवै
सङ्गीतस्तुतिमङ्गलैः प्रसरता मे सुप्रभातोत्सवः ॥१॥

श्रीमन्नतामरकिरीटमणिप्रभाभि
रालीढपादयुगदुर्धरकर्मदूर ।
श्रीनाभिनन्दनजिनाजितशम्भवाख्य !
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सतत मम सुप्रभातम् ॥ २ ॥

छत्रत्रयप्रचलचामरवीज्यमान
देवाभि नन्दनमुने सुमते जिनेन्द्र ।
पद्मप्रभारुणमणि द्युतिभासुराङ्ग त्व० ॥ ३ ॥

अर्हन् सुपार्श्वकदलीदलवर्णगात्र
प्रालेयतारगिरिमौक्तिकवर्ण गौर ।
चन्द्रप्रभस्फटिकपाण्डुर पुष्पदत त्व० ॥ ४ ॥

सततप्तकाञ्चनरुचे जिन शीतलाख्य
श्रेयान्विनष्ट दुरिताष्टकलङ्कपङ्क ।
वधूकबन्धुररुचे जिनवासुपूज्य त्व० ॥ ५ ॥

उद्दण्डदर्पकरिपो विमलामलांग
स्थेमन्ननन्तजिदनन्तसुखाम्बुराशे ।
दुष्कर्मकल्मषविवर्जित धर्मनाथ त्व० ॥ ६ ॥

देवामरीकुसुमसन्निभ शांतिनाथ
कुन्थो दयागुणविभूषणभूषितांग ।
देवाधिदेव भगवन्नरतीर्थनाथ त्व० ॥ ७ ॥

यन्मोहमल्लमदभञ्जनमल्लिनाथ
क्षेमङ्करावितथशासनसुव्रताख्य ।
यत्सम्पदा प्रशमितो नमिनामधेय त्व० ॥ ८ ॥

तापिच्छगुच्छरुचिरोज्ज्वल नेमिनाथ
घोरोपसर्गविजयन् जिन पार्श्वनाथ ।
स्याद्वाद सूक्तिमणिदर्पणवर्द्धमान त्व० ॥ ९ ॥

प्रालेय नीलहरितारुणपीतभासं-
यन्मूर्तिमव्ययसुखावसथं मुनीन्द्राः ।
ध्यायन्ति सप्ततिशतं जिन वल्लभानां त्व० ॥ १० ॥

सुप्रभातं सुनक्षत्रं मांगल्यं परिकीर्तितम् ।
चतुर्विंशतितीर्थानां सुप्रभातं दिने दिने ॥ ११ ॥

सुप्रभातं सुनक्षत्रं श्रेयः प्रत्यभिनन्दितम् ।
देवता ऋषयः सिद्धाः सुप्रभातं दिने दिने ॥ १२ ॥

सुप्रभातं तवैकस्य वृषभस्य महात्मनः ।
येन प्रवर्तितं तीर्थं भव्यसत्त्वसुखावहम् ॥ १३ ॥

सुप्रभात जिनेन्द्राणा ज्ञानोन्मीलित चक्षुषाम् ।
अज्ञानतिमिरान्धाना नित्य मस्तमितो रविः ॥ १४ ॥

सुप्रभात जिनेन्द्रस्य वीरः कमललोचनः ।
येन कर्माटवी दग्धा शुक्लध्यानोग्रवह्निना ॥ १५ ॥

सुप्रभात सुनक्षत्र सुकल्याण सुमङ्गलम् ।
त्रैलोक्यहितकर्तॄणा जिनानामेव शासनम् ॥ १६ ॥

॥ इति सुप्रभातस्तोत्र समाप्तम् ॥

शांति पाठ।

दोधकवृत्तम्

शांतिजिनं शशिनिर्मलवक्त्रं शीलगुणाव्रतसंयमपात्रम्।
अष्टशतार्चितलक्षणगात्रं नौमि जिनोत्तममम्बुजनेत्रम् ॥ १ ॥
पञ्चममीप्सितचक्रधराणां पूजितमिन्द्रनरेन्द्रगणैश्च।
शांतकरं गुणशांतिमभीप्सुः षोडशतीर्थंकरं प्रणमामि ॥ २ ॥
दिव्यतरुः सुरपुष्प सुवृष्टिर्दुन्दुभिरासनयोजनघोषौ।
आतपवारण चामरयुग्मे यस्य विभाति च मण्डलतेजः ॥ ३ ॥
तं जगदर्चितशांतिजिनेन्द्रं शांतिकरं शिरसा प्रणमामि।
सर्वगणाय तु यच्छतु शांति मह्यपरं पठते परमां च ॥ ४ ॥

येऽभ्यर्चिता मुकुटकुण्डलहाररत्नैः
शक्रादिभिः सुरगणैः स्तुतपादपद्मा।
तेमेजिनाः प्रवरवंशजगत्प्रदीपा-
स्तीर्थंकराः सततशांतिकाभवन्तु ॥ ५ ॥

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्रसमान्यतपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांति भगवान् जिनेन्द्रः॥६॥

स्रग्धरावृत्तम्—

क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान धार्मिको भूमिपालः।
काले काले च सम्यः वर्षतु मघवा व्याधयो यान्तु नाशम् ॥
दुर्भिक्षं चौरमारी क्षणमपि जगतां मस्मभूज्जीवलोके।
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्वसौख्यप्रदायि ॥ ७ ॥

प्रध्वस्तघातिकर्माणः केवलज्ञानभास्करा. ।
कुर्वन्तु जगतः शांतिं वृषभाद्या जिनेश्वरा ॥ ८ ॥

अथेष्ट प्रार्थना ।

शास्त्राभ्यासो जिनपतिनुति, सङ्गति सर्वदार्यैः ।
सद्वृत्तानां गुणगणकथा दोषवादे च मौनम् ॥
सर्वस्यापि प्रियहितवचो भावना चात्मतत्वे ।
समपद्यन्ता मम भवभवे याव देतेऽपवर्गः ॥ ९ ॥

आर्यावृत्तम्—

तव पादौ ममहृदये, मम हृदय तव पदद्वैये लीनम् ।
तिष्ठतु जिनेन्द्र तावद्यावन्निर्वाणसम्प्राप्ति ॥ १० ॥

आर्या—

अक्खरपयत्थहीण मत्ताहीण च ज मये भणिय ।
त खमउणाणदेव यमज्झवि दु.क्खखय दिंतु ॥ ११ ॥
दु क्खखओ कम्मखओ समाहिमरण च बोहिलाहो य ।
मम होउ जगतबन्धववतव जिणवर चरणशरणेण ॥ १२ ॥

———

अथ सकल तीर्थ नमस्कार ॥

(स्रग्धरा-वृत्तम्)

सद्भक्त्या देवलोके रविशशिभवने व्यंतराणां निकाये,
नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तारकाणां विमाने ।
पाताले पन्नगेंद्रे स्फुटमणिकिरणे ध्वस्तसांद्रांधकारे,
श्रीमत्तीर्थंकराणां प्रतिदिवसमह तत्र चैत्यानि वंदे ॥ १ ॥

वैताढ्ये मेरुशृंगे रुचकगिरिवरे कुंडले हरितदंते,
वक्खारे कूटनंदीश्वरकनकगिरौ नैषधे नीलवंते ।
चैत्रे शैले विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ, श्रीम° ॥

श्रीशैले विंध्यशृंगे विमलगिरिवरे ह्यर्बुदे पावके वा,
सम्मेते तारके वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले ।
सह्याद्रौ वैजयंते विपुलगिरिवरे गुर्जरेरोहणाद्रौ, श्रीम° ॥ ३ ॥

आघाटे मेदपाटे क्षितितटमुकुटे चित्रकूटे, त्रिकुटे
लाटे नाटे च घाटे विटपि घनतटे हेमकूटे विराटे ।
कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे चक्रकूटे च भोटे, श्रीम° ॥ ४ ॥

श्रीमाले मालवे वा मलयिनि निषधे मेखलेपिच्छले वा,
नेपाले नाहले वा कुवलयतिलके सिंहले केरले वा ।
डाहाले कोशले वा विगलितसलिले जंगले वाढमाले,
श्री° ॥ ५ ॥

अगे वगे कलिंगे सुगतजनपदे सत्प्रयागे तिलगे,
गौडे चौडे मुरडे वरतरद्रविडे उद्रियाणे च पौंड्रे ।
आर्द्रे माद्रे पुलिंद्रे द्रविडकुवलये कान्यकुब्जे सुराष्ट्रे,
श्री० ॥ ६ ॥

चपाया चद्रमुरया गजपुरमथुरापत्तने चोज्ञयिन्या,
कौशाम्ब्या कोशलाया कनकपुरवरे देवगिर्यां च काश्याम् ।
नासिक्ये राजगेहे दशपुरनगरे भद्दिले ताम्रलिप्त्या,
श्री० ॥ ७ ॥

स्वर्गेमर्त्येऽन्तरिक्षे गिरिशिखरह्रदे स्वर्णदीनीरतीरे,
शैलाग्रे नागलोके जलनिधिपुलिने भूरुहाणा निकुजे ।
ग्रामेऽरण्ये वने वा स्थलजलविषमे दुर्गमध्ये त्रिसध्य,
श्री० ॥ ८ ॥

श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रुचकनगवरे शालमलौ जम्बुवृक्षे,
चौज्ञन्ये चैत्यनदे रतिकररुचके कौंडले मानुषाके ।
इक्षूकारे जिनाद्रौ दधिमुखशिखरे व्यतरे स्वर्गलोके,
ज्योतिर्लोके भवति त्रिभुवनवलये यानि चैत्यालयानि ॥९॥

इत्य श्रीजैनचैत्यस्तवनमनुदिन ये पठति प्रवीणा,
प्रोद्यत्कल्याणहेतु कलिमलहरण भक्तिभाजस्त्रिसध्यम् ।
तेषां श्रीतीर्थयात्राफलमतुलमल जायते मानवाना,
कार्याणा सिद्धिरुच्चै प्रमुदितमनसा चित्तमानदकारि ॥१०॥*

* यह स्तोत्र दिगम्बर ग्रन्थोंमें भी बहुत समय से प्रचार में है ।

॥ अरहन णमोक्कारावलिया ॥

॥ अर्हन्नमस्कारावलिका ॥

(श्री अर्हतोऽष्टोत्तरशतगुणवर्णनम्)

॥ ओं श्रीवीतरागः ॥

नमो चउदसमहासुमिणसंसूइय अवयारकारगाणं अरिहंताणं ॥

नमो गब्भट्ठियतियनाणसंजुत्ताणं अरिहंताणं ॥ २ ॥

नमो गब्भट्ठियचउसट्ठिदेविंदसंथुआणं अरिहंताणं ॥ ३ ॥

नमो गब्भट्ठियमहाजोगब्भासीणं अरिहंताणं ॥ ४ ॥

नमो तेल्लोक-दिवायर-जम्मोदय-संपत्ताणं अरिहंताणं ॥ ५ ॥

नमो सव्व-जीव-सुहदायग-जम्मकल्लाणग-संपत्ताणं अरिहंताणं ॥ ६ ॥

नमो छप्पन्नदिसाकुमारिकय सुइकम्माणं अरिहंताणं ॥ ७ ॥

नमो देविंदकरसंप (पु) डसंठिआणं अरिहंताणं ॥ ८ ॥

नमो मेरुमत्थयठिअसिंहासण संनिविट्ठाणं अरिहंताणं ॥ ९ ॥

नमो सव्वसुरासुरकयकुस (सु) मंजलिए संपूइआणं अरिहंताणं ॥ १० ॥

नमो अट्ठसहस चउसट्ठि पुण्णकलसखीरोदहिन्हविआणं अरिहंताणं ॥ ११ ॥

नमो वरपडहभेरिझल्लरी देवदुंदुहि निनायपुव्वपूईआणं अरिहंताणं ॥ १२ ॥

नमो मघमघंत वरगोसीसचंदण-चच्चियाणं अरिहंताणं ॥१३॥

नमो जलथलयदिव्वकुसुम महामह्छालइअकठाण अरिह
ताण ॥ १४ ॥

नमो पवरहारद्धहार कडय कुडल मुउड मडिआण अरिह-
ताण ॥ १५ ॥

नमो वरवेणुवीणामुयगताल घुघरघुमघुमिअ कयनट्टनिहीए
सपूइआण अरिहताण ॥ १६ ॥

नमो जयजयनद्द समुच्चरिअसुरसमूहेण मायाभवणसमागयाण
अरिहताण ॥ १७ ॥

नमो मक्सठविय अगुठामयआहारकारगाण अरिहताण ॥१८॥

नमो चम्मचक्खुणमदसिअकयाहार नीहाराण अरिहताण॥१९॥

नमो सेअमलरोगवज्जिअसुहसि (म)रीर सपत्ताण अरिह-
ताण ॥ २० ॥

नमो गोक्खीरधाराधवल मसरुहिरधारगाण अरिहताण ॥२१॥

नमो मदारपार(रि) जायकुसुमसजणिअसुरहिमाप्रसासाण
अरिहताण ॥ २२ ॥

नमो छत्त चामर पटाग जूव जवलछिअकरचरणाण अरिह-
ताण ॥ २३ ॥

नमो अट्ठाहिअसहस्सेण लक्खणगणेण ससोहिआण अरिह-
ताण ॥ २४ ॥

नमो देविंदाइट्ठपचदेव गणाहिं कयाइकम्माण अरिह-
ताण ॥ २५ ॥

नमो अवरावर सुरकुमारसमं संकीलगाणं अरिहंताणं ॥ २६ ॥
नमो वालत्तणम्मि अबालभावाणं अरिहंताणं ॥ २७ ॥
नमो सव्व-कला-विन्नाण-समूह पार-संपत्ताणं अरिहंताणं ॥२८॥
नमो तेलुक्कच्छरिअकारगरुवजुव्वणगुणसंपत्ताणं अरिहंताणं ॥ २९ ॥
नमो गामायार परीसह विप्प मुक्कबाल वंभयारीणं अरिहंताणं ॥ ३० ॥
नमो गामायार परीसह अहिआसगविनाहकंकणसंडिआणं अरिहंताणं ॥ ३१ ॥
नमो पंचविहेसु माणुसभोगेसु अमुच्छिआणं अरिहंताणं ॥३२॥
नमो परमनीइए रज्जकरणेणं सव्वपयासुहदायगाणं अरिहंताणं ॥ ३३ ॥
नमो विसुद्धसुहज्झवसायभावणा संपत्ताणं अरिहंताणं ॥३४॥
नमो सयमेव परमवेरग्गसंपप्प सयंसंबुद्धाणं अरिहंताणं ॥३५॥
नमो भत्तिभरनमिरलोगंतिआसरवंदिआणं अरिहंताणं ॥३६॥
नमो वरवरि आघोसपुव्वं संवच्छरिअदाणदायगाणं अरिहंताणं ॥ ३७ ॥
नमो सव्वामरवईहिं कयदिक्खाभिसेआणं अरिहंताणं ॥ ३८ ॥
नमो सिबिया विमाणसंनिविट्ठाणं अरिहंताणं ॥ ३९ ॥
नमो असोअ पुन्नाग तिलय चंपयमंडिअवणसंडसंपत्ताणं अरिहंताणं ॥ ४० ॥

नमो रजहरसडरिअसीहासणोवरिसठिआण अरिहंताण ॥४१॥

नमो ररकडय कुडल हारद्धहार मउड मालाविप्पमुक्काण
अरिहंताण ॥ ४२ ॥

नमो अजणघणमरिसाण केमाण पचमुट्ठिए लोअकारगाण
अरिहंताण ॥ ४३ ॥

नमो लोगग्गमुवगयसव्वसिद्धाण नमोक्कारकारगाण
अरिहंताण ॥ ४४ ॥

नमो सव्वमावज्जपावजोगपच्चक्खाण कारगाण अरिहंताण ॥

नमो नाण दसण चारित्तरयण मालामडिआण अरिहंताण ॥

नमो विमल विउलमइ मणपज्जवनाणमुप्पन्नाण अरिहंताण ॥

नमो सम(मि)इ गुत्तिगुणरयण अलकिआण अरिहंताण ॥४८॥

नमो दसविहसमणधम्मस्स सधारगाण अरिहंताण ॥ ४९ ॥

नमो पुक्खरपत्तव्व निरुवलेवाण अरिहंताण ॥ ५० ॥

नमो जीवोव्व अप्पडिवाइ विहारारकारगाण अरिहंताण ॥५१॥

नमो आयासु व्व निरासयगुण समोहिआण अरिहंताण ॥५२॥

नमो अक्खलिय पवणगुण व्व अप्पडिबद्धाण अरिहंताण ॥५३॥

नमो सगोनि अगोवगगुम्म व्व गुत्तिदिआण अरिहंताण ॥५४॥

नमो विहगमोव्व विप्पमुक्कगुण सपत्ताण अरिहंताण ॥५५॥

नमो खग्गिसिंग व्व एगग्गभावमुवगयाण अरिहंताण ॥५६॥

नमो भारड पक्खि व्व अप्पमत्ताण अरिहंताण ॥ ५७ ॥

नमो लक्खणगुणोवेअवरमइ व्व जाइयामाण अरिहंताण ॥

नमो कुंजरोव्व सोंडीर गुणसंजुआणं अरिहंताणं ॥ ५९ ॥

नमो पंचाणणु व्व निब्भयाणं अरिहंताणं ॥ ६० ॥

नमो सायरवरो व्व गंभीरियगुणमंडिआणं अरिहंताणं ॥६१॥

नमो संपुण्णसिसि (सस) हरुं व्व सोमसहावाणं अरिहंताणं ॥

नमो गयणमंडणभाणु व्व दित्ततवतेआणं अरिहंताणं ॥ ६३ ॥

नमो पुहवी व्व सव्वंसहगुण संजुआणं अरिहंताणं ॥ ६४ ॥

नमो सारयंबु व्व सच्छमणभावाणं अरिहंताणं ॥ ६५ ॥

नमो गामागर नगर पट्टण मंडिय विसयेसु विहरमाणाणं अरिहंताणं ॥ ६६ ॥

नमो बहुपुण्णोदयसंजुअभवियजणदारसंपत्ताणं अरिहंताणं ॥

नमो बायालीसदोसविरहियाहारगाहगाणं अरिहंताणं ॥ ६८ ॥

नमो छट्ठट्ठम दसम दुवालस मासद्ध मासखवणाइ तवकारगाणं अरिहंताणं ॥ ६९ ॥

नमो वीरासणगाइ अणेगासण संठिआणं अरिहंताणं ॥ ७० ॥

नमो बावीस परीसह अहिआसगाणं अरिहंताण ॥ ७१ ॥

नमो बज्झभिंतर परिग्गहविप्पमुक्काणं अरिहंताणं ॥ ७२ ॥

नमो महावणम्मि पडिमापडिवन्नाणं अरिहंताणं ॥ ७३ ॥

नमो विसुद्ध सुहधम्म सुक्कज्झाणसंपत्ताणं अरिहंताणं ॥ ७४ ॥

नमो खवगसेढीए संपत्ताणं अरिहंताणं ॥ ७५ ॥

नमो मोहमहामल्लखयकारगाणं अरिहंताणं ॥ ७६ ॥

नमो लोआलोअपयासगकेवलनाण संपत्ताणं अरिहंताणं ॥७७॥

नमो रुप्प सुवन्न रयणमय सालतय सठिआण अरिहताण ॥
नमो नवसुवन्नकमलेसु पायसठावगाण अरिहताण ॥ ७९ ॥
नमो चउमुहचउसिहासण सठिआण अरिहताण ॥ ८० ॥
नमो पचदमण्ड छत्तरयण ससोहिआण अरिहताण ॥ ८१ ॥
नमो बारसगुणअसोअवरपायवपूईआण अरिहताण ॥ ८२ ॥
नमो मणि कणगविचित्त दडमय चारुचामर वीईआण अरिह-
ताण ॥ ८३ ॥
नमो जाणुप्पमाण भरियपु(प्फ) पयराण अरिहताण ॥ ८४ ॥
नमो दिणयरसमतेअ धम्म चक्कसोहिअ अग्गनिभागाण
अरिहताण ॥ ८५ ॥
नमो निम्मल भामडल मडिअपिट्ठविभागाण अरिहताण ॥८६॥
नमो देव दुदुहिंनिनायससुइय तिहुअणरायत्तणवत्ताण अरिह-
ताण ॥ ८७ ॥
नमो सुरनर तिरिआण सजणिय पडिबोहे वाणीगुणसपत्ताण
अरिहताण ॥ ८८ ॥
नमो भविअजण कमलपयासगाण अरिहताण ॥ ८९ ॥
नमो चउद्दस पुव्वाण बीयभूयपयतियदाणदायगाण अरिह
ताण ॥ ९० ॥
नमो चउद्दस पुव्वसुतकारगसीमाण गणहरपय सठावगाण
अरिहताण ॥ ९१ ॥

नमो सव्वसुरासुरनमं(मं)सिअचउव्विहसमणसंघसंठाववाणं अरिहंताणं ॥ ९२ ॥

नमो सव्वपाणभूअजीअसत्तकारुण्णभावपत्ताणं अरिहंताणं ॥

नमो अमरवई चक्कहर वासुदेव बलभद्दवंदिआणं अरिहंताणं ॥

नमो अणुत्तरविमाणवासी अमरसंदेह अवहारकारगाणं अरिहंताणं ॥ ९५ ॥

नमो सुक्कलेसाए तेरसमगुणठाण संठिआणं अरिहंताणं ॥९६॥

नमो जीवाजीवाइपयत्थ पयासगाणं अरिहंताणं ॥ ९७ ॥

नमो परोवयार करणेणं संपूरिअआउकम्माणं अरिहंताणं ॥

नमो लोगग्ग गमणजुग्गखित्तमुवगयाणं अरिहंताणं ॥ ९९ ॥

नमो सिद्ध सुहदायगंतिमतवकारगाणं अरिहंताणं ॥ १०० ॥

नमो चउद्दसमगुणठाणठियसेलेसीकरणमुवगयाणं अरिहंताणं ॥

नमो सव्वसुरासुरविरइय चरमसमवसरणसंठिआणं अरिहंताणं ॥ १०२ ॥

नमो अणाइकम्म संजोगविप्पमुक्काणं अरिहंताणं ॥ १०३ ॥

नमो उरालियतेअकम्मणसि (स)रीर पडिमुक्काणं अरिहंताणं ॥

नमो रागदोसजलभरिअसंसारसागर समुत्तिन्नाणं अरिहंताणं ॥ १०५ ॥

नमो सरीरतिभागुणवणविरईयजीवपएसाणं अरिहंताणं ॥१०६॥

नमो पुव्वज्झाणपओगाओसु धणविमुक्क व्व गइपरिणयाणं अरिहंताणं ॥ १०७ ॥

(नमो पुव्वज्झाणपणोगाओ उड्ढ धणु विमुक्क व्व गइपरिण-
याण अरिहंताण ॥)

नमो सिवमयलमरुअमणंत मक्खय मव्वाबाहमपुणरावित्ति
सिद्धिगइनामधेय ठाण (स) (प)त्ताण अरिहंताण ॥ १०८ ॥*

॥ इति नमस्कार धलिका समाप्ता ॥

---

* नमस्कार स्वाध्याय प्राकृत विभाग से समुद्धृत

॥ सिद्ध णमोकारावलिया ॥

॥ सिद्ध नमस्कारावलिका ॥

(श्री सिद्ध परमात्मनोऽष्टोत्तरशत गुणवर्णनम्)

नमो जिणवरिंदपयमणुहविऊण सिद्धिमुवगयाणं सव्व-
सिद्धाणं ॥ १ ॥

नमो सामन्नेणं केवलित्तपय(यं) परिपालिऊण सिद्धि मुवगयाणं
सव्वसिद्धाणं ॥ २ ॥

नमो तित्थयरस्स तित्थे सिद्धिमुवगयाणं सव्वसिद्धाणं ॥ ३ ॥

नमो तित्थं विणा जाईसरणाइणा सिद्धिमुवगयाणं सव्व-
सिद्धाणं ॥ ४ ॥

नमो सयंबुद्धभावेण सिद्धि मुवगयाणं सव्वसिद्धाणं ॥ ५ ॥

नमो पत्तेय बुद्धभावेण सिद्धिमुवगयाणं सव्वसिद्धाणं ॥ ६ ॥

नमो बुद्धबोहियभावेण सिद्धिमुवगयाणं सव्वसिद्धाणं ॥ ७ ॥

नमो पुरिसलिंगेण सिद्धिमुवगयाणं सव्वसिद्धाणं ॥ ८ ॥

नमो इत्थिलिंगेण सिद्धिमुवगयाणं सव्वसिद्धाणं ॥ ९ ॥

नमो नपुंसकलिंगेण सिद्धिमुवगयाणं सव्वसिद्धाणं ॥ १० ॥

नमो मुणिवरलिंगेण सिद्धिमुवगयाणं सव्वसिद्धाणं ॥ ११ ॥

नमो अन्नतित्थियलिंगेण सिद्धिमुवगयाणं सव्वसिद्धाणं ॥१२॥

नमो गिहत्थलिंगेण सिद्धिमुवगयाणं सव्वसिद्धाणं ॥ १३ ॥

नमो एगसमये एगजीव सिद्धिमुवगयाणं सव्वसिद्धाणं ॥१४॥

नमो एगसमये अणेगजीव सिद्धिमुवगयाणं सव्वसिद्धाणं ॥

नमो सप(पु)न्नसुयनाणी सिद्धिमुवगयाण सव्वसिद्धाण ॥१६॥
नमो परमानि (च) हिनाणी सिद्धिमुवगयाण सव्वसिद्धाण ॥
नमो मणपज्जवनाणी सिद्धिमुवगयाण सव्वसिद्धाण ॥ १८ ॥
नमो आयरियपयट्ठिय सिद्धिमुअगयाण सव्वसिद्धाण ॥१९॥
नमो उनज्झाय पयट्ठिय सिद्धिमुनगयाण सव्वसिद्धाण ॥२०॥
नमो अत्तगडकेनलि सिद्धिमुनगयाण सव्वसिद्धाण ॥ २१ ॥
नमो पडिमापडिवन्नमाहुसिद्धिमुवगयाण सव्वसिद्धाण ॥२२॥
नमो जघाचारण मुनिवर सिद्धिमुवगयाण सव्वसिद्धाण ॥२३॥
नमो विज्जाचारणमुनिवर सिद्धिमुनगयाण सव्वसिद्धाण ॥
नमो आमोसहिलद्धिसपन्न मुणिवर सिद्धिमुवगयाण मव्व-
सिद्धाण ॥ २५ ॥
नमो खेलोसहिलद्धिसपन्नमुणिवर सिद्धिमुवगयाण सव्व-
सिद्धाण ॥ २६ ॥
नमो जल्लोसहिलद्धिसपन्नमुणिनरसिद्धिमुवगयाण सव्व-
सिद्धाण ॥ २७ ॥
नमो सव्वोसहिलद्धिसपन्नमुणिवर सिद्धिमुनगयाण सव्व
मिद्धाण ॥ २८ ॥
नमो पयाण(णु) सारीमुणिनर मिद्धिमुवगयाण सव्वमिद्धाण ॥
नमो सभिन्न सोई मुणिनर सिद्धिमुनगयाण मव्वसिद्धाण ॥
नमो कुट्ठबुद्धि मुणिनर सिद्धिमुनगयाण मव्वसिद्धाण ॥३१॥
नमो बीयबुद्धिमुणिनरसिद्धिमुनगयाण सव्वसिद्धाण ॥ ३२ ॥

नमो अक्खीणमहाणसीलद्धिसंपन्नमुणिवरसिद्धिमुवगयाणं सव्वसिद्धाणं ॥३३॥

नमो खीरासवलद्धि संपन्नमुणिवरसिद्धिमुवगयाणं सव्व - सिद्धाणं ॥३४॥

नमो महुआसवलद्धिसंपन्नमुणिवर सिद्धिमुवगयाणं सव्व- सिद्धाणं ॥ ३५ ॥

नमो आसीविसलद्धिसंपन्नमुणिवर सिद्धिमुवगयाणं सव्व- सिद्धाणं ॥ ३६ ॥

नमो दिट्ठीविसलद्धि संपन्नमुणिवर सिद्धिमुवगयाणं सव्व- सिद्धाणं ॥ ३७ ॥

नमो आगासगामी लद्धिसंपन्न मुणिवरसिद्धिमुवगयाणं सव्व- सिद्धाणं ॥ ३८ ॥

नमो विउलमईलद्धि संपन्नमुणिवरसिद्धिमुवगयाणं सव्व- सिद्धाणं ॥ ३९ ॥

नमो प(पु)लायलद्धि संयन्नमुणिवरसिद्धिमुवगयाणं सव्व- सिद्धाणं ॥ ४० ॥

नमो चक्कवट्टिमुणिवर सिद्धिमुवगयाणं सव्वसिद्धाणं ॥ ४१ ॥

नमो बलदेव मुणिवर सिद्धि मुवगयाणं सव्वसिद्धाणं ॥ ४२ ॥

नमो गणहरलद्धि संपन्न मुणिवर सिद्धिमुवगयाणं सव्व- सिद्धाणं ॥ ४३ ॥

नमो तेअलेसालद्धिसपन्नमुणिवरसिद्धिमुवगयाण सव्वसिद्धाण ॥ ४४ ॥

नमो सीअलेसालद्धिसपन्नमुणिवर सिद्धिमुवगयाण सव्व-सिद्धाण ॥ ४५ ॥

नमो आहारगलद्धि सपन्न मुणिवर सिद्धिमुवगयाण सव्व-सिद्धाण ॥ ४६ ॥

नमो लहुमि(स)रीरकरणमहसिद्धिसपन्नमुणिवर सिद्धिमुवग-याण सव्वसिद्धाण ॥ ४७ ॥

नमो तिहुयणवसिकारगमहसिद्धिसपन्नमुणिवर सिद्धिमुव - गयाण सव्वसिद्धाण ॥ ४८ ॥

नमो तिहुयणईसरियमहसिद्धि सपन्नमुणिवरसिद्धिमुवगयाण सव्वसिद्धाण ॥ ४९ ॥

नमो जउ व्व प(पु)ढवीमज्झे थलव्व जलोरिचक्मण महसि-द्धिसपन्न मुणिवर सिद्धि मुवगयाण सव्वसिद्धाण ॥५०॥

नमो अणु व्व सुह(हु) मसि(स)रीरकरणसिद्धि सपन्नमुणिवर सिद्धि मुवगयाण सव्वसिद्धाण ॥ ५१ ॥

नमो महसरीरकरणमहसिद्धि सपन्न मुणिवर सिद्धि मुवगयाण सव्व सिद्धाण ॥ ५२ ॥

नमो इच्छाचारणमहसिद्धिसपन्न मुणिवरसिद्धिमुवगयाण सव्वसिद्धाण ॥ ५३ ॥

नमो भूमित्थ जोइसियफासकरणमहसिद्धिसंपन्नमुणिवर सिद्धि मुवगयाणं सव्वसिद्धाणं ॥५४॥

नमो मेरुपव्व(य)ट्ठियमुणिवर सिद्धि मुवगयाणं सव्वसिद्धाणं ॥ ५५ ॥

नमो निसह नीलपव्वयट्ठिय मुणिवर सिद्धिमुवगयाणं सव्वसिद्धाणं ॥ ५६ ॥

नमो महहिमवरुप्पि पव्वयट्ठिय मुणिवरसिद्धिमुवगयाणं सव्वसिद्धाणं ॥ ५७ ॥

नमो हिमव सिहरीपव्वयट्ठिय मुणिवर सिद्धि मुवगयाणं सव्वसिद्धाणं ॥ ५८ ॥

नमो वेअड्ढ पव्वयठिय मुणिवरसिद्धि मुवगयाणं सव्वसिद्धाणं ॥

नमो पउमवरवेईयासंठिय मुणिवर सिद्धि मुवगयाणं सव्वसिद्धाणं ॥ ६० ॥

नमो गयदंत पव्वयट्ठियमुणिवर सिद्धिमुवगयाणं सव्वसिद्धाणं ॥ ६१ ॥

नमो जमग पव्वयट्ठियमुणिवर सिद्धिमुवगयाणं सव्वसिद्धाणं ॥ ६२ ॥

नमो दिग्गयपव्वयट्ठियमुणिवर सिद्धि मुवगयाणं सव्वसिद्धाणं ॥ ६३ ॥

नमो इसुआर पव्वयट्ठियमुणिवर सिद्धिमुवगयाणं सव्वसिद्धाणं ॥ ६४ ॥

नमो वक्खारगिरीसुसठियमुणिवर सिद्धिमुवगयाण सव्व सिद्धाण ॥ ६५ ॥

नमो वट्टवेयड्ढ पव्वय सठियमुणिवर सिद्धि मुवगयाण सव्व-सिद्धाण ॥ ६६ ॥

नमो विगहरूडपव्वयट्ठियमुणिवर सिद्धिमुवगयाण सव्व सिद्धाण ॥ ६७ ॥

नमो अट्ठावय पव्वयट्ठियमुणिवर सिद्धिमुवगयाण सव्व सिद्धाण ॥ ६८ ॥

नमो सम्मेयसिहरपव्वयट्ठिय मुणिवर सिद्धिमुवगयाण सव्व सिद्धाण ॥ ६९ ॥

नमो सेत्तुजयपव्वयट्ठियमुणिवर सिद्धिमुवगयाण सव्व सिद्धाण ॥ ७० ॥

नमो उज्जितसेलसिहरट्ठियमुणिवर सिद्धिमुवगयाण सव्व-सिद्धाण ॥ ७१ ॥

नमो माणुसोत्तरपव्वयट्ठियमुणिवर सिद्धिमुवगयाण सव्व-सिद्धाण ॥ ७२ ॥

नमो पवरगु भरहेसु सठियमुणिवरसिद्धिमुवगयाण सव्व सिद्धाण ॥ ७३ ॥

नमो पवरगु एरवएसु सठियमुणिवरसिद्धिमुवगयाण सव्व-सिद्धाण ॥ ७४ ॥

नमो पंचसु महाविदेहेसु संठियमुणिवरसिद्धिमुवगयाणं सव्व-
सिद्धाणं ॥ ७५ ॥

नमो समत्थ धाईसंडे सिद्धि मुवगयाणं सव्वसिद्धाणं ॥ ७६ ॥

नमो समत्थ पुक्खरवरदीवे सिद्धि मुवगयाणं सव्वसिद्धाणं ॥

नमो समत्थ जंबूदीवे सिद्धि मुवगयाणं सव्वसिद्धाणं ॥ ७८ ॥

नमो लवण समुद्दमज्झे सिद्धि मुवगयाणं सव्वसिद्धाणं ॥७९॥

नमो कालोदसमुद्दमज्झे सिद्धि मुवगयाणं सव्वसिद्धाणं ॥८०

नमो सीआ सीउआनईमज्झे सिद्धि मुवगयाणं सव्वसिद्धाणं ॥

नमो नारीकां(कं) तानरकंतानइ (ई) मज्झे सिद्धि मुवगयाणं
सव्वसिद्धाणं ॥ ८२ ॥

नमो हरिकांता हरिसलिलानईमज्झेसिद्धिमुवगयाणं सव्वसि-
द्धाणां ॥ ८३ ॥

नामोरूप्पकूलारोहियानइ(ई)मज्झे सिद्धिमुवगयाणं सव्व-
सिद्धाणं ॥ ८४ ॥

नमोसुवन्नकूलारोहियानईमज्झे सिद्धिमुवगयाणं सव्वसिद्धाणं
॥ ८५ ॥

नमो रतारतवईभज्झे सिद्धिमुवगयाणं सव्वसिद्धाणं ॥ ८६ ॥

नमो गंगासिधूमज्झे सिद्धिमुवगयाणं सव्यसिद्धाणं ॥ ८७ ॥

नमो अईयकाले सिद्धिमुवगयाणं सव्वसिद्धाणं ॥ ८८ ॥

नमो संपई सिद्धि मुवगयाणं सव्व सिद्धाणं ॥ ८९ ॥

नमो ख(खा) इयपारिणामियभावजुअलेसंठिआणं (सिद्धिमुवग-
याणं) सव्वसिद्धाणं ॥ ९० ॥

नमो अणतनाणधराण (सिद्धिप्रगयाण) सव्वसिद्धाण ॥ ९१ ॥
नमो अणतदसणधराण (सिद्धिप्रगयाण) सव्वसिद्धाण ॥ ९२ ॥
नमो अणत परमाणदसुहसपत्ताण सव्वसिद्धाण ॥ ९३ ॥
नमो अणतवीरिय भावमुवगयाण सव्वसिद्धाण ॥ ९४ ॥
नमो साइअणतठियसपत्ताण सव्वसिद्धाण ॥ ९५ ॥
नमो पचविहसठाण परिमुक्काण सव्वसिद्धाण ॥ ९६ ॥
नमो पचविहवन्नविसेसरहियाण सव्वसिद्धाण ॥ ९७ ॥
नमो दुविहगधविमुक्काण सव्वसिद्धाण ॥ ९८ ॥
नमो पचविहरसविसेसरहिआण सव्वसिद्धाण ॥ ९९ ॥
नमो अट्ठविह फासविसेसनिप्पमुक्काण सव्वसिद्धाण ॥ १०० ॥
नमो जम्मण जरा मरणनिप्पमुक्काण सव्वसिद्धाण ॥ १०१ ॥
नमो अविचलपयसठिआण सव्वसिद्धाण ॥ १०२ ॥
नमो अट्ठविहकम्मकलक निप्पमुक्काण सव्वसिद्धाण ॥ १०३ ॥
नमो सव्वसजोग विउ (ओ) गविप्पमुक्काण सव्वसिद्धाण ॥ १०४ ॥
नमो पारगयाण सव्वसिद्धाण ॥ १०५ ॥
नमो परपरगयाण सव्वसिद्धाण ॥ १०६ ॥
नमो लोगग्गमुवगयाण सव्वसिद्धाण ॥ १०७ ॥
नमो अणताणतगुणमणिमडिआण सव्वसिद्धाण ॥ १०८ ॥

॥ इति सिद्धनमस्कारावलिका ॥

नमस्कारस्वाध्याय प्राकृत विभाग से उद्धृत

गिरोली (पल्ली) पडे तेनो विचार

प्रकाशकः पं-कुंवरजीदोशी (श्रीभुराभाइ फुलचंद खीमचंद ना सौजन्यथी)

अंगविचार

पल्ली श्रीमंतना माथा पर पडेतो दरिद्री थाय ॥ दरिद्री ना सिर पर चढेतो दरद्रीपणु हणे ॥ श्रीमंतने कष्ट पडयां जोपल्ली शीर चढेतो कष्टहणे । कपाले चढेतो नवनिधान यथा ॥ कपालनी नीचे चढे तो राज्यमां मानमले ॥ डावाकान पर पडेतो आयुप हणे ॥ जमणा कान उपर पडेतो कलेश थाय ॥ नाकपर पडेतो वयरीमरे ॥ होठ पर पडेतो भोजननु सुख थाय ॥ हृदये फरसेतो धननोनाश ॥

जमणे खभे पडेतो सरीररोगरहीत थाय ॥ डावे खभे-पडेतो घणारोग थाय ॥ दक्षिण अगे चढेतो मित्रनो लाभ ॥ जमणे अगे चढेतो स्त्रीऋतुवंती थई ने लाभ थाय (संतान)॥ उदर (पेट) पर पडेतोमीठुं भोजन मले ॥ नाभी पर पडेतो संताननोलाभ थाय । गुह्य पर पडेतो परस्त्रीनो संगमथाय ॥

जमणाहाथ पर पडेतो लक्ष्मी तथा कन्यानो लाभ थाय ॥ डावा हाथ पर पडेतो परदेशमांजवानुं थाय । उंचीचढी पगपर पडेतो परदेश जवुं पडे ॥ पगतलीये जायतो अगर फरसे तो जगतमां जशवरते ॥

पगनी आगली उपर फरसे तो शरीरे सुख ॥ पगना नखने फरसे तो व्याधी थाय ॥ पुठे पडेतो धननो नाश ॥ पुठथी आगळ उतरेतो धव निरोगी होय ॥ निद्रामाहे जो सुता शरीरे पडेली देखे तो पोतानी स्त्रीनु आयुष्य छमासनु जाणवु जागेतो सुखविलास एटले सुख थाय ।

तिथी विचार

पडवे पडीरोग मनुयान बीजे त्रीजे राजसमान ।
चोथे बुरी पचम धन देहे, छठ सप्तमी प्रीत कहे ॥
आठम नवमी दसमी हाण, पुत्रलाभ अगयारसजाण ।
बारसे धन सजोग अजर तिथी सविरजणजोग ॥

वार

शशीबुध भृग गुरुए च्यारे वारे पल्ली पडी करे सुखकार ।
रवीशनी मगल अशुभ करत, एवा फल फोल्यांतन ॥

पोहरनी समजण

रविवारे पहेले पहोरे पडेतो लक्ष्मीलाभ, बीजे पहोरे राज्यमा मानमले त्रीजे पहोरे मस्तकमा दु.ख घणु थाय, चोथे पहोरे माथापर पडतो सज्जननो मेलाप थाय ।

सोमवारे पहेले पहोरे पडे उचाट कराने बीजे पहोरे असभवीत वात सभळाय ॥ त्रीजे पहोरे कलेशथाय चोथे पहोरे लक्ष्मीनो लाभ होय ॥

मंगलवारे पहलेपहोरे मरण थाय बीजे पहोरे दुःखथाय त्रीजे पहोरे नठारी वात संबळाय चौथे पहोरे धननी प्राप्ती थाय ।

बुधवारे=पहेले पहोरे सज्जननो मेलाप थाय बीजे कलेशथाय त्रीजे पहोरे घाव (कोइ हथीयारथी) थाय चोथे पहोरे परदेश जवुं थाय ॥

गुरुवारे पहले पहोरे चीतव्यो लाभ थाय, बीजे पहोरे लडाई थाय, त्रीजे पहोरे सुखकरे, चोथे पहोरे मोटी पदवीमले।

शुक्रवारे-पहले पहोरे सारुंथाय बीजे पहोरे लक्ष्मीलाभ थाय, त्रीजे पहोरे जुध्धथाय चोथे पहोरे सुखथाय ॥

शनीवारे-पहेले पहोरे अंगभोग थाय, बीजे पहोरे अंगे पीडा थाय, त्रीजे पहोरे भोजननो लाभ, चोथे पहोरे अगनी अगर पवननो भय थाय पल्लीपडे ते वारनो पहोर समजवो ।

चंद्रमा विचार

मेषमिथुन कर्क धन मकर कुंभ मीनमां पडेतो सुख थाय, वृषभमां, सुखनो नाशथाय, सिंहमां सुतनु सुख, कन्यामां पडेतो दुःख पडे, एम चंद्रमा पडेते वारनो चंद्रमा समजवो ॥

नक्षत्र विचार

अश्वनी रोहीणी मृगशीर्ष पुष्य पुनर्वषु भरणी अनुराधामां पडेतो सुख करे, कृतिकामां दुःख थाय, आर्द्रा अश्लेषा

ज्येष्ठा मूळ पुर्वापाढा उत्तरापाढा मा मरण करे, मघामा सुख थाय पणरोगथाय, पुर्वाफाल्गुनी हस्त चीत्रा स्वाती विशाखा मा धननोनाशकरे, धनीष्ठा सतरीका पुर्वाभाद्रपद उतराभाद्र पद रेवतीमा पडेतो दुःख थाय, श्रवण मा पडेतो घणु सुख मले सरवे जातनु मले पछी पडे ते नखतनु नक्षत्र समजवु ॥

॥ प्रकाशकः ॥

ॐ] श्री जिनाय नमः श्रीरत्नप्रभसूरीश्वराय नमः ॥ [ह्रीं

अथ श्रीमहाप्रभाविक बीजमंत्रगर्भित परमचमत्कारी सर्वकार्यसिद्धिदायक

श्री शान्तिधारा पाठः

॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं वं त्रं मंमं हंहं संसं तंतं पंपं डंडं म्वीं म्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ॐ ह्रीं क्रों मम पापं खण्डय हन हन दह दह पच पच पाचय सिद्धिं कुरु कुरु ॥

ॐ नमोऽर्हं डॅ म्वीं क्ष्वीं हं सं डं वं व्हः पः हः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षं ज्ञः ॥ १ ॥

ॐ हँ हाँ हिँ हीँ हुँ हूँ हेँ हैँ होँ हौँ हँ हः असिआउसाय नमः मम पूजकस्य ऋद्धिं वृद्धिं कुरु २ स्वाहा ॥ ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते डः डः डः मम श्रीरस्तु वृद्धिरस्तु तुष्टिरस्तु पुष्टिरस्तु शान्तिरस्तु कान्तिरस्तु कल्याणमस्तु मम कार्य-सिद्ध्यर्थं सर्व विघ्ननिवारणार्थं श्रीमद्भगवते सर्वोत्कृष्ट—त्रैलो-क्यनाथार्चितपादपद्म—अर्हत्—परमेष्ठि—जिनेन्द्र—देवाधिदेवाय नमोनमः मम श्री शान्तिदेव—पादपद्मप्रसादात् सधर्म

श्री बलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु स्वस्तिरस्तु धनधान्य-समृद्धिरस्तु श्रीशान्तिनाथो मां प्रति प्रसीदतु, श्री वीतराग देवो मां प्रति प्रसीदतु, श्री जिनेन्द्रः परममांगल्यनामधेयो ममेहामुत्र च सिद्धिं तनोतु ॥

॥ ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथाय, तीर्थंकराय रत्नत्रय रूपाय अनन्तचतुष्टयसहिताय धरणेन्द्रफणमौलिमण्डिताय समवसरणलक्ष्मीशोभिताय इन्द्र धरणेन्द्रचक्रवर्त्यादिपूजितपादपद्माय केवलज्ञानलक्ष्मीशोभिताय जिनराजमहादेवाष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिंशद्गुण संयुक्ताय परमगुरुपरमात्मने सिद्धाय बुद्धाय त्रैलोक्यपरमेश्वराय देवाय सर्वसत्त्वहितकराय धर्मचक्राधीश्वराय सर्वविद्या परमेश्वराय त्रैलोक्यमोहनाय धरणेन्द्रपद्मावतीसहिताय अतुल-बलवीर्यपराक्रमाय अनेकदैत्यदानव कोटिमुकुटघृष्टपाद - पीठाय ब्रह्मविष्णु—रुद्र—नारद-खेचर पूजिताय सर्वभव्य जनानन्दकराय सर्वजीवविघ्ननिवारणसमर्थाय श्री पार्श्वनाथ-देवाधिदेवाय नमोऽस्तु ते श्रीजिनराजपूजनप्रसादाद् मम सेवकस्य सर्वदोषरोगशोकभयपीडाविनाशनं कुरु २ सर्व शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं कुरु २ स्वाहा ।

॥ ॐ नमो श्रीशान्तिदेवाय सर्वारिष्टशान्तिकराय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रः असिआउसा मम सर्वविघ्नशान्तिं कुरु २ श्रीसंघस्य (अमुकस्य) मम तुष्टिं पुष्टिं कुरु २ स्वाहा ॥

॥ श्री पार्श्वनाथ पूजनप्रसादाद् मम अशुभान् पापान् छिन्धि २, मम अशुभकर्मोपार्जितदुःखान् छिन्धि २, मम परदुष्टजनकृत मंत्र—तंत्र—दृष्टि—पुष्टिच्छलच्छिद्रादिदोषान् छिन्धि २, मम अग्नि चोर जल सर्प्पव्याधि छिन्धि २, मारी-कृतोपद्रवान् छिन्धि २, डाकिनी शाकिनी भूत भैरवादिकृतो-पद्रवान् छिन्धि २, सर्वभैरवदेवदानव वीरनरनारसिंहयोगिनी कृतविघ्नान् छिन्धि २, भुवनवासि व्यन्तर—ज्योतिषीदेवदेवी-कृतदोषान् छिन्धि २, अग्निकुमार कृतविघ्नान् छिन्धि २, उद-धिकुमार—सनत्कुमार—कृतविघ्नान् छिन्धि २, दीपकुमारभयान् छिन्धि २ भिन्धि २, वातकुमार—मेघकुमा रकृतविघ्नान् छिन्धि २ भिन्धि २, इन्द्रादि दश दिक्पालदेवकृतविघ्नान् छिन्धि २, जय-वजय अपराजित-माणिभद्र—पूर्णभद्रादिक्षेत्रपालकृतविघ्नान् छिन्धि—२, राक्षस वैताल दैत्य दानवयक्षादिकृतदोषान् छिन्धि २, नवग्रह कृतग्रामनगरपीडां छिन्धि २, सर्व अष्टकुलनागजनित विषभयान् सर्व ग्राम नगरदेशरोगान् छिन्धि २, सर्व स्थावर जंगम वृश्चिकदृष्टिविषजातिसर्प्पादिकृतविषदोषान् छिन्धि २, सर्वसिंहाष्टापदव्याघ्रव्यालवनचर जीवभयान् छिन्धि (२) परशत्रुकृतमारणोच्चाटनविद्वेषणमोहनवशीकरणादिदोषान् छिन्धि २ ॥

॥ ॐ नमो भगवति! चक्रेश्वरि ज्वालामालिनी! अस्मिन् जिनेन्द्रभुवने आगच्छ २, एहि २ तिष्ठ २ बलिं गृहाण २

मम धनधान्यसमृद्धिं कुरु २, सर्वभव्यजीवानन्दनं कुरु २, सर्व देशग्रामपुरमध्यक्षुद्रोपद्रवसर्वदोषमृत्युपीडाविनाशनं कुरु २, सर्वदेशग्रामपुरमध्यसुभिक्षं कुरु २, सर्व विघ्नशान्तिं कुरु २ स्वाहा ॥

॥ ॐ आँ क्रों ह्रीं श्रीं वृषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशति तीर्थंकरमहादेवाधिदेवाः प्रीयन्तां २ मम पापानि शाम्यन्तु, घोरोपसर्गाः सर्वविघ्नाः शाम्यन्तु। ॐ आँ क्रों ह्रीं श्रीं रोहिण्यादिमहादेव्य अत्र आगच्छन्तु २ सर्वदेवता प्रीयन्तां २।

ॐ आँ क्रौं ह्रीं श्रीं चक्रेश्वरी ज्वालामालिनी पद्मावती महादेवी प्रीयन्तां २। ॐ आँ क्रों ह्रीं श्रीं माणिभद्रादि यक्षकुमार देवाः प्रीयन्ताम् २। सर्व जिनशासनरक्षकदेवाः प्रीयन्ताम् प्रीयन्ताम् श्री आदित्य सोम मङ्गल बुध वृहस्पति शुक्र शनि राहु केतवः सर्वे नवग्रहाः प्रीयन्तां प्रसीदतु देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शान्तिं भगवान् जिनेन्द्रः।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु, व्याधिव्यसन वर्जितम्।
अभयं क्षेममारोग्यं स्वस्तिरस्तु च मे सदा। १।
यदर्थं क्रियते कर्म, सप्रीति नित्यमुत्तमम्।
शान्तिकं पौष्टिकं चैव, सर्वकार्येषु सिद्धिदम्। २।

॥ इति श्री शान्तिधारा पाठः समाप्तः ॥

—101—

श्री समवसरणनुं स्तवन.

जुमखडानी देशी.

त्रिशलानंदन वंदीये रे, लहीए आनंद कंद, मनोहर जुमखडुं.
जुमखडां झुंबी रह्यां रे, श्री वीर तणे दरबार; मनोहर०;
समवसरण विराजता रे, सेवित सुरनर इंद्र. मनो० ॥ १ ॥

आवी जोजन वृष्टि करे रे, फूल भरे जानु मान, मनो०;
मणिरयणे भूतल रचे रे, व्यंतरना राजान. मनो० ॥ २ ॥

कनक कोशीशा रूपा गढे रे, रचे भुवनपति ईश, मनो०;
रतन[1] कनक गढे जोतिपी रे, मणि रतने सुर ईश[2]. मनो० ॥३॥

भित्ति[3] पृथुल तेत्रीश धनु रे, एक कर अंगुल आठ, मनो०;
वचे तेरसें धनु आंतरुं रे, उंची पणसें[4] धनु ठाठ. मनो०॥४॥

पावडीयारां सहस दश रे, पंच पंच परिमाण, मनो०;
एक कर पीहु उंचपणे रे, प्रतर पचास धनु मान. मनो०॥५॥

चउ बार त्रण तोरणा रे, नील रतनमय रंग, मनो०;
मध्ये मणिमय पीठिका रे, भूमिथी अढी गाउ तुंग. मनो० ॥

---

१ रतनना कांगरा। २ वैमानिकना स्वामी। ४ ढनी भींत[?]
४ पांचसो। ५ पगथीय।

दीर्घ पृथुल सम धनु रे, जिनतनु माने उच, मनो°,
चैत्य सहित अशोक वर रे, जिनथी बार गुण उच मनो°॥७॥

चउ दिशे चउ सिंहासने रे, आठ चामर छत्र बार, मनो°,
धर्मचक्र स्फाटिक रत्ननु रे, सहस जोयण ध्वज चार मनो° ॥

देवछंदो ईशान खुणे रे, प्रभु वीसामनना ठाम, मनो°,
चउ रूपे दीए देशना रे, भामंडल अभिराम मनो° ॥ ९ ॥

मुनि वैमानिक साधवी रे, रहे अग्निखुण मोझार, मनो°,
ज्योतिषी भुवनपति व्यंतरारे, नैरुत्य खुणे तस नारी मनो ॥

वायु खुणे ए देवता रे, सुणे जिनवरनी वाणी, मनो°
वैमानिक श्रावक श्राविका रे, रहे ईशान खुणे सुजाण मनो°

चउ देवी अने साधवी रे, उभी सुणे उपदेश, मनो°,
तिर्यंच सहु बीजे गढे रे, त्रीजे वाहन विशेष मनो° ॥१२॥

वृत्ताकारे¹ चउ वावडी रे, चउरसे आठ वाव, मनो°,
प्रथम पदरमें धनु आतरु रे, बीजे सहस धनुभाव मनो° ॥

रयण भीत गढ आतरु रे वृत्ते धनु शत छवीश, मनो°,
चउरसे त्रण सहसनु रे, इम शास्त्र दीये जगदीश मनो° ॥

तुरु पगृह सीहा पोळीया रे, धूप घटी ठाम ठाम, मनो°,
द्वार मंगल ध्वज पुतली रे, दुंदुभि वाजे ताम मनो°॥१५॥

---

१ गोळ समवसरणे।

दिव्य ध्वनि समजे सहु रे, मीठी योजन विस्तार, मनो०;
सुणतां समता सहु जीवने रे, नहिं विरोध लगार. मनो० ॥

चउतीश अतिशय विराजता रे, दोप रहित भगवंत, मनो०;
श्रीजशविजय गुरु शिष्यने रे, जिनपद सेवा खंत. मनो० ॥

॥ इति श्री समवसरण स्तवन. ॥ (त्रीजुं)

भारती विजयम प्रेस, तिरुवल्लिकेणि, मद्रास—५ ।